भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम्। विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 32 अंक : 6	11.12.2009 शुक्रवार (नवंबर – दिसंबर)	शुल्क – प्रति अंक : 10.00 रु. वार्षिक : 50.00 रु.

‘अमर गुणातीत भावना’ के मूल व्यक्ति स्वरूप ‘गुरु गुणातीत’ के दीक्षा पर्व की द्विशताब्दी पर...

हिंदू धर्म में पूर्णिमा का बहुत महत्त्व है और... ‘गुणातीत समाज’ के मुक्तों के लिए तो पूर्णिमा महत्त्वपूर्ण ही नहीं, बल्कि सदा सनाथ होने का दिन है; क्योंकि संवत् १८४१ की **शरद्पूर्णिमा** के दिन भगवान स्वामिनारायण के रहने का धाम – मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी (मूलजी शर्मा) का प्राकट्य हुआ और... संवत् १८६६ की पौष शुक्ला १५ यानि **पौषीपूर्णिमा** के महामंगलकारी दिन श्रीजी महाराज ने उन्हें भागवती दीक्षा दी।

इसी **३१ दिसंबर** को आ रही **पौषीपूर्णिमा** को उसे दो सौ वर्ष पूरे हो रहे हैं। स्वामिनारायण भगवान ने अपनी हाजिरी में तीन हज़ार साधु बनाए और उसमें भी **५००** तो **परमहंस** थे, जो कि खूब ऐश्वर्यशाली, प्रतापी, रिद्धि-सिद्धि युक्त और वचन-सिद्ध थे। **वे कोई सामान्य कक्षा के नहीं, बल्कि एक-एक अवतार सरीखे थे।** फिर भी, गुणातीतानंदस्वामिजी उनमें से अनोखे ही निकले। उन्हें श्रीजी महाराज की मूर्ति के सिवा अन्य कहीं कोई चाव नहीं था – भाव नहीं था। उन्होंने महाराज को ही अखंड धारा और उनका संपूर्ण निर्दोषभाव से समागम किया। १८-१८ घंटे तक केवल एक महाराज को ही राजी करने के लिए प्रवृत्तिशील रहे। गुणातीतानंदस्वामिजी हमारे लिए आदर्श जीवन जीकर गए हैं। गृहस्थ होते हुए भी महाराज की आज्ञा होते ही सब छोड़ कर त्यागी हो गए!

श्रीजी महाराज की परछाईं रूप बने मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी के दीक्षा दिन पर गुरुहरि योगीजी महाराज खूब प्रसन्न नज़र आते थे। श्रीजी महाराज यदि उन्हें साथ लाए बिना आते, तो हम भी ‘परोक्ष’ की ही भक्ति करते होते। ‘परोक्ष’ की भक्ति से सिर्फ संस्कार पड़ते हैं। **प.पू. साहेबजी** के शब्दों में – *‘जैसे श्री राम, श्री कृष्ण का भजन होता है, वैसे ही श्री*

स्वामिनारायण का भजन होता और हम छपिया के चक्कर काटते रहते।'

लेकिन महाराज ने हम सब पर कृपा करके मूलजी शर्मा को गुणातीतानंदस्वामी के रूप में भागवती दीक्षा देकर अनमोल भेंट दी, जिससे कि **'अमर गुणातीत भावना के व्यक्ति स्वरूपों'** की परंपरा पृथ्वी पर अखंड प्रगट रही!

तो, आओ श्रीजी महाराज द्वारा मूलजी शर्मा को दी गई दीक्षा का वर्णन पढ़े। साथ ही साथ श्रीजी महाराज के स्वमुख से मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी के बारे में गाई महिमा द्वारा स्वामी के स्वरूप को पहचानें...

पौष शुक्ला १५ का मांगलिक दिन डभाण में हो रहे महाविष्णुयज्ञ की पूर्णाहुति का दिन था। यज्ञ की सारी विधि संपन्न होने के बाद महाराज के पूजन का कार्यक्रम रखा गया था। देश-देश के हरिभक्त कई भेंट लेकर इस अनुपम अवसर का लाभ लेने आए थे। उन सब का भक्तिभाव देखकर महाराज अत्यंत प्रसन्न हुए और नानाभाई को बुला कर कहा–

'कल जैसा मैंने तुम्हें बताया था, वैसे भादरा के मूलजी शर्मा को यहाँ ले आओ। उन्हें भागवती दीक्षा देने के लिए ही यह प्रसंग हमने योजित किया है।'

महाराज की यह नई बात सुन कर सभी आश्चर्यचकित हो गए। ये मूलजी शर्मा ऐसे कौन हैं जिन्हें दीक्षा देने के लिए महाराज ने ऐसा महायज्ञ किया! इतने में मूलजी शर्मा मुडंन करवा कर, सफेद वस्त्र धारण किए हुए आए। महाराज ने उन्हें अपने पास ही चौकी पर बिठाया। सभी स्तब्ध थे कि संप्रदाय के कई संतों को महाराज ने दीक्षा दी थी, परंतु ऐसा बड़ा समारोह करके, अपार मानव समुदाय के बीच यूँ वेद-विधिपूर्वक महाराज आज इन्हें दीक्षा दे रहे हैं, तो ऐसे ये कौन हैं?

महाराज सभी के अंतर का भाव जान गए थे। सो, उनकी आतुरता का अंत लाते हुए दोनों हाथ ऊपर करके सभा को संबोधित करते हुए बोले–

*'सुनो, संतों–हरिभक्तों! आज हम इस समारोह में ये मूलजी शर्मा को दीक्षा दे रहे हैं। हालार में भादरा गाँव के ये ब्राह्मण हैं। देखने में आम लगते हैं, लेकिन **हमारे अक्षरधाम के ये अवतार हैं।** धामरूप से हमें और अनंत कोटि मुक्तों को धारे हुए हैं, फिर भी मूर्तिमान वे अखंड हमारी सेवा में हैं। जैसे यहाँ हैं, वैसे ही अक्षरधाम में भी हमारे नज़दीक हमारी सेवा में हैं। सर्वकर्ता होते हुए भी वे अकर्ता हैं। वे सगुण हैं और निर्गुण भी हैं और तीनों गुणों से परे दिव्य गुणातीत स्थिति में भी सदैव रहते हैं। हमारे स्वरूप का उन्हें यथार्थ ज्ञान है। **उनके द्वारा ही हमारे स्वरूप का ज्ञान फैलेगा'**।*

इतना कह कर महाराज ने भागवती दीक्षा की सारी विधि ब्राह्मणों द्वारा करवाई। फिर महाराज ने कहा–

'ये मूलजी शर्मा की स्थिति त्रिगुणातीत है, सो उनका नामकरण 'गुणातीतानंद' करते हैं; उनकी प्रतिष्ठा सारे विश्व में फैलेगी।'

बाद में एक बार पौषी पूर्णिमा के ही मंगलकारी दिन जब श्रीजी महाराज **'पंचाला'** गाँव में उपस्थित थे, तब उन्होंने भक्तराज झीणाभाई को कहा था–

*'आज का दिन महापवित्र है। हमने डभाण में महाविष्णु-यज्ञ करके आज ही के दिन मूलजी शर्मा को भागवती दीक्षा देकर 'गुणातीतानंद' नामकरण किया था। उस प्रसंग की, **उस पुरुष की महत्ता आज नहीं समझ आएगी, परंतु समय आते समग्र जगत को उसकी***

महत्ता का ख्याल आएगा। *स्वामी खुद यहाँ उपस्थित हैं, सो उनकी हाजिरी में उनका अधिक गुणगान नहीं कर रहा और उन्हें भी पसंद नहीं आएगा। यह तो सिर्फ आप लोगों की जानकारी के लिए बात करी है...'*

सभी मंदिरों की महंताई नियुक्त करते हुए श्रीजी महाराज ने मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी को तो अपने गले में डाले हुए सब हार पहना कर कहा था – *'ये जूनागढ़ के महंत!'*

तब स्तब्ध रह कर, स्वामी ने हाथ जोड़ कर प्रार्थना करी – *महाराज! यह महंताई किसी और को सौंपें।*

पर, तब महाराज ने कहा–

'इस सभा में जूनागढ़ के मंदिर की महंताई का हार जो लेने के लिए तैयार हो, उसे आप पहना देना और फिर आप छूटें... जूनागढ़ के मंदिर की महंताई करे ऐसा मुझे तो तुम्हारे सिवा कोई नज़र नहीं आता; सो तुम्हें यह हार पहनाया है।'

इससे भी अधिक, महाराज ने अपनी पोशाक उतार कर स्वामी को दी और अपनी पाघ स्वामी के माथे पर रख कर आशीर्वाद दिए; जबकि यह तो सर्वविदित है कि स्वामिनारायण के संत सिले हुए और ऐसी रेशमी और मोतियों से जड़ित पोशाक-पाघ पहनते ही नहीं। दरअसल, इन सभी चरित्रों द्वारा महाराज कुछ अलग ही संदेश देना चाहते थे, जो बाद में ख्याल पड़ा, जब पीपलाणा के कुरजी दवे को महाराज ने कहा–

'कुरजी दवे! जब रामानंदस्वामिजी भुज से पीपलाणा पधारे, तब वह संदेश लेकर आप लोज में आए थे। तब संदेश की खुशी में मुक्तानंदस्वामिजी ने तुम्हें अपने माथे का फेंटा भेंट दिया था। वह याद है?'

कुरजी दवे ने हाँ भरी। फिर महाराज ने कहा–

'दवे! हमने तुम्हें कहा था कि हम तुम्हें अपना अक्षरधाम देंगे।'

तब महाराज बोले–

'दवे! लो, यह गुणातीतानंदस्वामी हमारा 'अक्षरधाम' तुम्हें बख़्शिश में देते हैं। सोरठ देश के सत्संगियों को हम अपना यथार्थ सुख दे नहीं पाए, सो ये साधु – जो हमारा 'सर्वस्व' है – हमारा 'अक्षरधाम' है, उसे तुम्हारे सोरठ देश को हम कृष्णार्पण करते हैं। उनकी सेवा और समागम करोगे, तो तुम्हारा काम हो जाएगा।'

इतना कह कर महाराज ने स्वामी को देखते हुए कहा–

'स्वामी! उदास नहीं होना। जो जूनागढ़ आकर तुम्हारी अनुवृत्ति के मुताबिक सेवा करेगा, उसकी सौ जन्म की या हज़ार जन्म की कसर हम इसी जन्म में टाल देंगे। इतना आपका काम करेंगे।'

सच, गुणातीतानंदस्वामिजी ऐसा जीवन जीकर हमें सिखा कर गए कि 'गुणातीतभावना' हम में भी प्रगटाई जा सकती है। वे केवल महाराज में ही बंधे हुए थे। चालीस साल तक जिस मंदिर के महंत रहे और जिस प्रदेश में भगवान की तरह पूजे गए एवं सतत प्रवृत्तिशील रहे, ऐसे गुणातीतानंदस्वामी को जब जूनागढ़ मंदिर छोड़ कर जाने की आज्ञा आई, तो एक ही क्षण में वे झोली लेकर चल पड़े। इससे ख्याल पड़ता है कि भगवान के सिवा वे और कहीं बंधे हुए नहीं थे। उन्होंने दर्शाया कि **किसी स्थान, संस्था, शक्ति, व्यक्ति या पदार्थ में हमें नहीं बंधना है; बल्कि, एक भगवान और संत से ही बंधे रहना है।** यदि भगवान के साथ बंधे हुए होंगे, तो किसी व्यक्ति, शक्ति, पदार्थ या प्रसंग का हम पर प्रभाव नहीं पड़ेगा और

अखंड आनंद में रहेंगे। ऐसे गुणातीतानंदस्वामिजी ने अपने जीवन से हमें यह भी बताया कि **'प्रगट विभूति'** से जुड़ जाने से उनके सारे कल्याणकारी दैवीय गुण, बिना कोई साधन करे हम में आ जाएंगे।

इसी हेतु से वर्षों पूर्व प.पू. काकाजी महाराज, प.पू. पप्पाजी महाराज और प.पू. सोनाबा ने **प.पू. साहेबजी के नेतृत्व में** व्रतधारी कर्मयोगी भाइयों को दीक्षा देने का दिन भी पौषीपूर्णिमा ही चुना! और... ऐसे परम पवित्र पर्व की महत्ता समझाते हुए **प.पू. साहेबजी** ने नूतन वर्ष में सभी को यही आशीर्वाद दिए –

...हमारे जीवन में हम 'गुणातीतभावना' प्रगटाएं, यही हमारी साधना का आदर्श है। इस हेतु गुणातीत जो जीवन जिए, उसी मार्ग पर हम चलें। इन्होंने एक महाराज को रखा और महाराज के होकर जिए। महाराज के कार्य में ही वे जुड़ गए और उनके सिवा और कहीं मोहब्बत रखी नहीं। गृहस्थी को जगत में रह कर व्यापार – कारोबार करना है और साधकों को आश्रम में रहना है, लेकिन दोनों वर्ग को ***भगवान के होकर रहना है – जीना है।*** *भगवान के होकर जीवन जीने के लिए भगवान की अखंड धारक विभूति में सम्यक् निर्दोषभाव और दिव्यभाव रखना अनिवार्य है। गुणातीतानंदस्वामी ने एक बात में कहा है –*

'भगवान और भगवान के भक्तों के गुणगान और महिमा गाने से जीव ब्रह्मरूप हो जाता है।'

परंतु, व्यक्ति ऐसी आसान से आसान चीज भी नहीं कर पाता। यह नहीं कर पाता, सो देह को भगवान की सेवा, भजन और प्रार्थना करने में पिरोए रखना है। फलस्वरूप आत्मा को बल मिलता है। आत्मा बल पाती है, तभी निर्दोषभाव – दिव्यभाव रख पाते हैं। निर्दोषभाव और दिव्यभाव रखेंगे तो कुछ करना रहता नहीं है। लेकिन वह नहीं रखा जाता, क्योंकि यह देह और देहभाव बाधारूप होता है। तो, देह को हम भगवान की सेवा में जोड़ दें। सत्पुरुष के वचन से अपनी काबिलियत, स्कील – जो भी हो, वह भगवान की सेवा में समर्पित करें, तो 'गुणातीतभावना' प्रगट हो जाएगी...'

ऐसे मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी के दीक्षा पर्व की द्विशताब्दी पर हम गदगद् कंठ से उनका कोटि - कोटि धन्यवाद - धन्यवाद करें कि अहो! आपने परंपरा से हमें गुणातीत ज्योतिर्धरों की गोद बख़्शिश में दे दी है! और... हाल ही में प.पू. गुरुजी जब अमदावाद गए तब वहाँ से **'डभाण'** गाँव में उनके दीक्षा स्थान पर जाकर प्रार्थना करी – ***हम सभी गुणातीतभाव में रहते हो जाएं – गुणातीत साधुता प्राप्त करें*** – जो मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य है। वो 'गुणातीत साधुता' हम सभी प्राप्त कर लें – **ऐसी दीक्षा पर्व की द्विशताब्दी पर प्रार्थना - याचना!**

✡✡✡

नए वर्ष की नई ऊषा के संग
गुरुहरि प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का प्राकट्योत्सव मनाएँ...

गुरुवर्य योगीजी महाराज ने परम पूज्य हरिप्रसादस्वामिजी को आशीर्वाद दिए थे –

'प्रभुदासभाई (प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी) साधु होंगे, तो सारा ब्रह्मांड गौरव करेगा...'

और... गुणातीत समाज का वाकई 'गौरव' और शिरछत्र बने ऐसे हमारे प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का प्राकट्य दिन पिछले दो - तीन वर्ष से पौष महीने में मना कर हम भक्ति अदा करते हैं। जनवरी '०९ में

उनके अमृतपर्व के दर्शन, सेवा, समागम का हमें अद्‌भुत लाभ मिला... तत्पश्चात् ही प.पू. स्वामिजी ने हृदय की बीमारी ग्रहण की और... उनकी बाईपास सर्जरी हुई! अंतर तो रो पड़ा कि हमें कैसी विभूतियाँ मिली हैं कि जो हमारी प्रकृति–प्रारब्ध को खुद पर झेल कर हमें उनसे मुक्त करते हैं।

आश्चर्य तो इस बात का है कि बाईपास का दर्द उन्होंने झेला, परंतु तब भी अपने स्वास्थ्य की तनिक भी चिंता करे बिना तकरीबन डेढ़ महीने के अंदर ही सबको दर्शन, सेवा, समागम का सुख देने निरंतर प्रवृत्तिशील हो गए! प्रभु को अखंड धारी विभूति ही ऐसा सामर्थ्य रख सकती है। *'भगवान को अपने भक्तों के सिवा और कुछ प्रिय नहीं होता है'* – इसका प.पू. स्वामिजी में दर्शन होता है और... आज उनके संकल्प से ऐसे आध्यात्मिक समाज का सर्जन हुआ है कि मुक्तों का वर्तन ही प.पू. स्वामिजी का सम्यक् परिचय दे जाता है। श्री अक्षरपुरुषोत्तम सत्संग पत्रिका के माध्यम से **एक प्रसंग** जानने को मिला, **जिससे प.पू. स्वामिजी के अथक् परिश्रम की सफलता की झांकी मिलती है...**

'**आत्मीय अमृत महोत्सव**, २००९ की प्रदर्शनी को देखने के लिए एक रविवार को भारी तादाद में लोग आए। शाम के समय पंद्रह से बीस हज़ार के लगभग भक्त-दर्शनार्थी इकट्‌ठे हुए थे। अंदर इतनी भीड़ हो गई थी कि पाँव तक रखने की जगह नहीं रही। दूसरी ओर मुख्य प्रवेश द्वार पर भी पाँच से सात हज़ार की भीड़ प्रवेश के लिए इकट्‌ठी हुई थी। स्वयंसेवक वहाँ सेवा में खड़े थे। देरी होती रहने के कारण कई उल्टा-सीधा बोलने लगे –

'इतना बड़ा आयोजन क्यों करते हैं? हमें वापिस जाना पड़ेगा? हमारे पैसे भी बेकार जाएंगे, वगैरह-वगैरह...'

यूँ बोलते-बोलते प.पू. स्वामिजी और संतों के लिए भी न बोलने के शब्द बोलने लगे। फिर भी स्वयंसेवकों ने उन्हें दंडवत् किया और दो हाथ जोड़ कर मिठास से प्रार्थना करी –

'हमारी भूल है, हम माफ़ी मांगते हैं। आप जैसा कहो, वैसा करें। आप कहो तो आपकी टिकिट के पैसे, वाहन का खर्च भी दे दें; परंतु अंदर तो पाँव रखने तक की जगह नहीं है।'

यूँ प्रार्थना करी। तब किसी तरह वे शांत हुए। दूसरी ओर वहाँ एक समझदार समाज भी था। उनमें से कइयों ने कहा –

'बस, आत्मीय प्रदर्शन के दर्शन हमें यहीं हो गए हैं।'

यह है प.पू. स्वामिजी का सर्जन जिसे देख कर नतमस्तक होता है समाज! केवल समाज ही नहीं, बल्कि हमें प.पू. स्वामिजी के रूप में हुई भव्य प्राप्ति व माहात्म्य का-दिव्यता का गहराई से दर्शन कराने-जाग्रत करने मानो स्वयं श्रीजी महाराज ने समय-समय पर निम्न विभूतियों में प्रवेश करके उनसे कहलवाया है...

* गंगा तीर्थसमान है और तीर्थ में बसते संत गंगा के समान हैं... हरिधाम-सोखड़ा गंगा के समान पवित्र तीर्थ है... '**हरिः हरति पापानि**'। श्री हरिप्रसादस्वामिजी तो केवल पापों को ही नहीं हर लेते, बल्कि साथ ही साथ आत्मा में प्रभु की प्रसन्नता की प्राणप्रतिष्ठा भी करते हैं।

– प.पू. सत्यमित्रानंदगिरिजी महाराज

(भारतमाता मंदिर, हरिद्वार)

* ...आज जिस शक्ति के कारण भारत '**भारत**' है, जिस शक्ति के कारण भारत '**महान**' है, उस शक्ति का दर्शन मुझे यहाँ हो रहा है... अधिकतर तो ज़माना बदलता है, परंतु संत वो हैं

जो ज़माने को बदल देते हैं और यह दर्शन मैंने हरिप्रसादस्वामिजी में किया है।

यह शताब्दी अकड़ने की नहीं, बल्कि एक-दूसरे को पकड़ने की है। यह शताब्दी एक-दूसरे को मिटाने की नहीं, परंतु एक-दूसरे को मिलाने की है। मैंने यह नम्रता हरिप्रसादस्वामिजी के जीवन में देखी है। उन्होंने कहा–

'यदि कोई एक कदम चलने को तैयार हो, तो मैं साठ कदम चल लूँगा।'

यहाँ है विनम्रता – यह है संतत्व!

जहाँ सारी दीवारें टूट जाएँ, सारी दूरियाँ मिट जाएं, उसका नाम ही 'भारत' है और वह केवल स्वामिजी के 'आत्मीयता' के मंत्र से ही हो सकता है।

– प.पू. चिदानंदमुनिजी

(परमार्थ निकेतन आश्रम, ऋषिकेश)

* कइयों के पास विचार हैं और कइयों के पास संवेदनशीलता है, लेकिन ऐसे युगपुरुषों के पास विचारशील संवेदना से भरा हृदय है और उसमें से प्रगट होती आत्मीयता का सूत्र व्यक्ति–व्यक्ति को, समाज–समाज को बाँध कर देखते ही देखते आख़िरकार सारे विश्व में 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना को चरितार्थ करता है... उनके संपर्क में आने वाले हर एक ने आत्मीयता का मंत्र उनके जीवन में चरितार्थ होते देखा है।

– पू. रमेशभाई ओझा

(पू. भाईश्री – प्रसिद्ध भागवत कथाकार, सांदीपनी आश्रम, पोरबंदर)

* हरिप्रसादस्वामिश्री कोई सामान्य दिव्य विभूति नहीं हैं। वे तो अवतारकोटि के पुरुष हैं। उनमें पूर्ण दिव्यता का प्रगटीकरण हुआ है। उनका साथ-संगत कदापि – कभी भी छोड़ना नहीं।

– पू. नित्यानंदस्वामिजी

(अध्यक्ष – रामकृष्ण-विवेकानंद मिशन, कलकत्ता)

* युनाईटेड नॅशन्स एफीलीएट्स एन्ड कॉनफर्स ए सर्टीफिकेट ऑफ धी हाईएस्ट ऑनर टु हिज़ हॉलीनेस स्वामी हरिप्रसादजी – लीडर ऑफ धी स्वामिनारायण रीलिजियन फॉर हिज़ सुप्रीम कॉन्ट्रीब्युशन टु धी कॉज़ ऑफ हार्मनी, इक्वेटी एन्ड एथिक्स।

– वीलियम जॅईम्स (चॅयरमेन)

प.पू. स्वामिजी की उपरोक्त महिमा से ख्याल पड़ता है कि धूल के मोल हमें अक्षरधाम की कैसी दिव्य विभूति का संबंध सहजता से हो गया...

ऐसे प.पू. स्वामिजी ने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण गुरुहरि योगीजी महाराज के चरणों में अर्घ्यस्वरूप अर्पण किया है। अपनी देह, मन, बुद्धि और चित्त को उनके वचन में संपूर्ण याहोम कर दिया, तो गुरु के अंतर की प्रसन्नता के फलस्वरूप सेवा, स्वधर्म, सरलता और सुहृद्भाव जैसे अनेक कल्याणकारी दिव्य गुणों के वे धारक बने हैं और... आज उन्हीं के युगकार्य के वाहक बन कर संतों, युवकों, बहनों और अंबरीषों (गृहस्थ) के मुक्त समाज की धड़कन बने हैं... अब 'आत्मीयता' के साथ-साथ हमारे अंतर में 'दासभाव' प्रगटाने का उन्होंने बीड़ा उठाया है... तो, अब समय गवाँए बिना **'आत्मीयता' व 'दासभाव' को यथार्थ समझते हुए** उनकी योजना-अभिप्राय की भक्ति करने में हम पीछे न रहें। हमारा व्यक्त-अव्यक्त 'अहं', हमारी सात्विकता हमारे पथ में बाधारूप न बने और हम **अपनी पूर्णाहुति करवा लें – ऐसी उनके प्राकट्य पर्व पर उनके ही श्रीचरणों में प्रार्थना...**

✡✡✡

याद कराने...

2012 के मंगलमयी वर्ष में प.पू. गुरुजी का 75 वां प्राकट्योत्सव **'योगी परिवार अमृत आनंदोत्सव'** के रूप में मनाएंगे; जब **'एकता ही एकांतिकभाव'** के सिद्धांत से ब्रह्मकिल्लोल करने का एक अनमोल मौका हम सभी को मिलेगा।

प.पू. काकाजी व प.पू. पप्पाजी की जीवंत स्मृतिरूप **'गुणातीत समाज'** को चिरंजीव करने, उसकी अखंडता एवं एकता बनाए रखवाने के लिए प.पू. गुरुजी खूब लगे हुए दिखाई पड़ते हैं! सो, हम भी 'गुरुभक्ति' अदा करने का यह मौका न चूकें...

अतः **प.पू. गुरुजी के 75 वें प्राकट्योत्सव निमित्त प.पू. गुरुजी और प.पू. काकाजी के अनुभव, जो आपको भीतर तक छू गए हों, उन्हें हिन्दी / अंग्रेजी में लिख कर नीचे दिए पते पर भेजते रहें**, जिससे कि 'भगवत् कृपा' के इस स्तंभ के अंतर्गत वो देने की भक्ति हमसे अदा हो सके।

सेवक **प्रभाकर** के हार्दिक जय स्वामिनारायण!

'योगी परिवार का अद्‌भुत सर्जन..... प.पू. काकाजी की सौरभ!'

યાદ કરાવવા...

2012 ના મંગળકારી વર્ષે પ.પૂ. ગુરૂજીનો ૭૫મો પ્રાગટ્યોત્સવ **'યોગી પરિવાર અમૃત આનંદોત્સવ'** રૂપે ઊજવીશું; જ્યારે **'એકતા એ જ એકાંતિકપણું'**ના સિદ્ધાંતે બ્રહ્મકિલ્લોલ કરવાનો એક લ્હાવો અમ સહુને મળશે.

પ.પૂ. કાકાશ્રી અને પ.પૂ. પપ્પાજીની જીવંત સ્મૃતિરૂપ **'ગુણાતીત સમાજ'**ને ચિરંજીવ કરવા, એની અખંડતા અને એકતા જાળવી રખાવવા પ.પૂ. ગુરૂજી ખૂબ મંડયા દેખાય છે. આપણે પણ 'ગુરૂભક્તિ' અદા કરવાનો આ લ્હાવો ચૂકીએ નહીં...

તો, **પ.પૂ. ગુરૂજીના ૭૫મા પ્રાકટ્યોત્સવ નિમિત્તે પ.પૂ. ગુરૂજી અને પ.પૂ. કાકાશ્રીના અનુભવ-પ્રસંગો કે જે આપને અંતરતમ સુધી સ્પર્શી ગયા હોય, એ ભલે ગુજરાતીમાં લખીને નીચેના સરનામે* મોકલતા રહેશો**, જેથી 'ભગવત્ કૃપા'ના આ સ્તંભ હેઠળ એ આપવાની અમે ભક્તિ અદા કરી શકીએ.

સેવક **પ્રભાકર**ના હાર્દિક જય સ્વામિનારાયણ!

* प.भ. प्रभाकर राव / प.पू. आनंदी दीदी C/o 'भगवत् कृपा'
श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर, 'ताड़देव', काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोकविहार-III, दिल्ली – 110 052
❋ फोन – 4709 1281, 2730 1327 ❋ फॅक्स: 4709 1280 ❋ ई मेईल – taaddev@ydsd.org, aksharjyoti@ydsd.org

आशीर्वाद...

સ્વામિશ્રીજી
જય પપ્પાજી

તા. ૧૩.૯.’૦૯
સ્મૃતિ તારીખ
ગુરૂજી - આનંદીદીદી

પરમ પૂજ્ય આનંદીદીદી અને અક્ષરજ્યોતિ મંડળ–

જય સ્વામિનારાયણ!

પ.પૂ. ગુરૂજીની ઓળખાણ લગભગ ૧૯૫૩ના ડિસેમ્બરમાં પહેલી સ્પેશિયલ ટ્રેઈન મુંબઈ આવી ત્યારે ‘સુંદરાબાઈ હૉલ’માં બ્ર.સ્વ. યોગીજી મહારાજનો સ્વાગત સમૈયો હતો, ત્યારે થઈ હતી. ત્યાર પછીથી તાડદેવ પ.પૂ. કાકાશ્રી ને બાના જોગમાં આવ્યા. ૧૯૫૪થી રોજ તાડદેવનો સમાગમ કરવા તેમના ફૅમિલી મેમ્બર્સ આવતાં. ધીરે ધીરે સત્સંગમાં વધારે પ્રીતિ થવા લાગી. પછી ડૉ. રમણભાઈ તેમના ઘરે પેઈંગ ગેસ્ટ તરીકે રહેતા. અત્યારે **‘ડૉક્ટરસ્વામી’** તરીકે સંસ્થામાં ઓળખાય છે. **તેઓએ પણ પ.પૂ. કાકાજી-પ.પૂ. પપ્પાજીનો સમાગમ કર્યો હતો.** પછી તો પ.પૂ. કાકાશ્રી લગભગ બાપા પાસે હોય, એટલે પ.પૂ. ગુરૂજી પ.પૂ. પપ્પાજી પાસે આવે.

★ એક દિવસ પ.પૂ. કાકાશ્રીનો પત્ર આફ્રિકાથી આવ્યો ને તેમાં પ.પૂ. ગુરૂજીનું નામ ન હતું, પણ પ.પૂ. પપ્પાજીએ લખી દીધું. પ.પૂ. ગુરૂજી બહુ જ વિચક્ષણ. તેઓએ તેમનું નામ લખેલું જોયું એટલે તરત જ તેમણે પ.પૂ. પપ્પાજીને કહ્યું– *આ નામ તમે લખ્યું છે, પણ કાકાના પત્રમાં મારૂં નામ નથી આવ્યું.*
  તેઓને એટલું બધું દુ:ખ થયું કે *અરે... કાકાના પત્રમાં મારૂં નામ નહિ ?* એમ કરીને અંતર દુ:ખાયું હશે એટલે બીજો પત્ર કાકાનો આવ્યો કે *અરે દીલીપભાઈ! તમારા આંસુનો રેલો અમોને અહીં મ્વાન્ઝા સુધી પહોંચ્યો* અને તેમાં **પૂ. મહંતસ્વામી**એ લખેલું કે– ***મોટાપુરૂષ તો દરિયા સમાન છે, જેની ચાંચમાં જેટલું બળ એટલું એ પીવે.***

★ એક વખત પ.પૂ. ગુરૂજીનો જન્મદિવસ આવતો હતો. એટલે રાતના ઘરે જતાં જતાં પ.પૂ. ગુરૂજી કહે– *‘કાલે મારો જન્મદિવસ છે.’* પ.પૂ. કાકાજી અને પ.પૂ. પપ્પાજી બન્ને બેઠા હતાં. તો **પ.પૂ. પપ્પાજી કહે– *તને એમ નથી થતું કે***

બાપાને ઓળખવામાં એક વર્ષ ઓછું થયું. *અમે તારા ઘરે જમવા નહીં આવીએ.* બીજે દિવસે પૂ. ધીરૂભાઈ ભટ્ટને પ.પૂ. કાકાજી અને પ.પૂ. પપ્પાજીએ એક પત્ર લખીને પ.પૂ. ગુરૂજી પાસે મોકલ્યા. આવા તો દયાળુ આ કાકાજી અને પપ્પાજી જ છે.

★ એક વખત બાપાની સાથે ગુરૂજી બેઠા હતા. વૅકેશનમાં બોચાસણ ગયેલા. ત્યાં સંતોને પીરસવા માટે બ્રાહ્મણ જોઈએ. એટલે એક ભાઈ કહે– *'બાપા આ બ્રાહ્મણનો છોકરો છે એને પીરસવા મોકલો'.*

તો ગુરૂજી કહે– *'હું જનોઈ પહેરતો નથી.'*

પણ બાપાએ પૂ. મોટાસ્વામીને કહ્યું–*'આની જનોઈ આજે જ તૂટી ગઈ છે, એને જનોઈ આપો.'*

એમ બાપાએ **ગુરૂજીનો છાનો પક્ષ રાખતું લીલા ચરિત્ર** કર્યું.

★ પ.પૂ. ગુરૂજીને બાપાએ પૂછ્યું– *'ગુરૂ, તમે પૂજા કરો છો ને?'*

તો પ.પૂ. ગુરૂજી કહે–*'બાપા તમો આવો ત્યારે નથી કરતો, પણ પછી કરૂં છું.'*

તો બાપા કહે–*'તમને મૂર્તિ યાદ આવે છે?'* તો પ.પૂ. ગુરૂજી કહે–*'ના બાપા.'*

તો બાપા પૂછે–*'તમને કેવી મૂર્તિઓ યાદ રહે?'*

તો પ.પૂ. ગુરૂજી કહે–*'વાંકી મૂર્તિઓ યાદ રહી જાય.'*

બાપાએ તરત જ તેમની વાંકી આંગળી છે તે બતાવી– *'આવું યાદ રહે?'*

પ.પૂ. ગુરૂજી કહે–*'હા બાપા'.*

બાપા કેવા દયાળુ કહેવાય કે સામેથી મૂર્તિમાં રહેતા કરી દે; સાધકે ભીડો વેઠવો જ ના પડે.

★ બાપા એક વખત સારંગપુરમાં હતા ને પ.પૂ. ગુરૂજી (યુવકમાં) તેમની પાસે હતા.

તો બાપા કહે–*'આ બાજોઠનો પાયો તૂટી ગયો છે. તો રિપૅર થાય?'*

પ.પૂ. ગુરૂજી કહે–*'બાપા અમારા મુંબઈના મિસ્ત્રી બહુ હોશિયાર હોય છે, તે આવો જ પાયો કરી આપે.'*

તો બાપા કહે–*'અમે પણ અક્ષરધામના એવા જ છીએ, ગમે તેવો જીવ હોય, તેને સીધો અક્ષરધામનો અધિકારી બનાવી દઈએ.'*

આજે જોઈએ તો બાપાએ જે સીંચન ગુરૂજીમાં કર્યું છે, એવું ને એવું જ સીંચન-જતન અત્યારે ગુરૂજી બધાં જ સાધકોમાં તથા ભક્તોમાં તથા આખા ગુણાતીત સમાજમાં કરી જ રહ્યા છે. ગુરૂજીના બીજાં પ્રસંગો તો મને યાદ નથી.

પ.પૂ. ગુરૂજી જ્યારે સાધુ થવા જવાના હતા ત્યારે તેમની પૂજા અમોને આપતા ગયા હતા. તેમાં એક મૂર્તિ એવી હતી કે શ્રીજી મહારાજ ને તેમના હૈયામાં યોગીબાપાની મૂર્તિ હતી. તે મૂર્તિ અમારા વતી **પૂ. હંસાદીદી**એ ૧૯૬૪ની સાલમાં **પ.પૂ. બાપા**ને અક્ષરદેરીના જેવું એક કાર્ડ લખ્યું હતું, તેની અંદર મૂકી હતી. તેમાં લખેલું કે–

હે બાપા! આ યોગેશ્વરોએ તમારા વિશ્વાસે ઝંપલાવ્યું છે, તેવું જ અમોએ પણ તમારા વિશ્વાસે

ઝંપલાવ્યું છે. તો હે બાપા! આશીર્વાદ આપજો.

ત્યારે બાપાએ તે જ કાર્ડમાં વચનામૃત પ્રથમ ૨૩, મધ્ય ૩૦, ૪૫, અમદાવાદ ૨,૩ લખીને– *'મહારાજ સિદ્ધ કરાવશે'* એમ આશીર્વાદ મોકલ્યા હતા. **તે કાર્ડ આજે પણ સ્મૃતિ મંદિરમાં દર્શન માટે રાખ્યું છે.**

★ પ.પૂ. ગુરૂજીને બાની સાથે સાચો ભાવ હતો. તો તેઓ 'બા-બા' કરીને માળા કરતા. તેમની પ્રકૃતિ અનુસાર એમને કંઈક સ્મૃતિ થઈ જાય, તો એકદમ ડોક રહી જાય. દિવસમાં કેટલીય વખત થાય. એક વખત તેમને નલીનકાંતભાઈ દવેએ કહેલું– *હું તમને સોનાબાની મૂર્તિ આપીશ.* પછી તો સાધુ થયા; એટલે બાની મૂર્તિ રખાય નહિ. પણ તેમને મનમાં થયું કે નલીનકાંત મને મૂર્તિ આપતા નથી. નલીનકાંતભાઈના સ્કૂટરનો અવાજ સાંભળે, તોય ડોક રહી જાય. આવું દિવસમાં ઘણી વાર થતું. એક દિવસ તાડદેવ ફોન આવ્યો કે– *બાબુભાઈ આ મુકુંદસ્વામીને મૅન્ટલ હૉસ્પિટલમાં લઈ જવા પડશે.* પ.પૂ. કાકાજી અને પ.પૂ. પપ્પાજી કહે– *'આ બાપાનો મૂકેલો મોસલ છે.'* એટલે પ.પૂ. પપ્પાજી તો ડૉ. જમનાદાસને લઈને ગયા. ડૉક્ટરે જોયું; ત્યાં 'નલીન' નામ આવ્યું ને ડોક રહી ગઈ. એટલે ડૉક્ટર કહે– *કાંઈ નથી.* પછી પ.પૂ. ગુરૂજીએ વિચાર કર્યો કે મને આવું જ રહેશે? તેમણે પ.પૂ. પપ્પાજીને વાત કરી; તો પ.પૂ. પપ્પાજી કહે– *'બા-બા' કરે છે. તેની પાછળ 'પા' લગાડી દે. 'બાપા-બાપા!' તો તરત જ મટી જશે.* તેમણે એવું કર્યું, તો એકદમ સરસ થઈ ગયું.

★ **ગુરૂજી જે કોઈ વસ્તુ નજરમાં લે તે સિદ્ધ કરીને જ છોડે.** પ.પૂ. ગુરૂજી સાંકરદા રહેતા હતા. ત્યારે (એકવાર) ગુરૂપૂનમ હતી; તેથી પ.પૂ. પપ્પાજી સાંકરદા ગયા'તા ને ગુરૂજીને કહે– *તું અક્ષરવિહારીમાં નિર્દોષભાવ રાખજે.* તેમણે *'હા'* કહી, પણ મનમાં એમ રહે કે *બાબુકાકાએ કહ્યું છે એટલે જોવાનું નહિ; પણ પ્રકૃતિ પ્રમાણે જોવાઈ જતું હશે.* બીજી ગુરૂપૂનમ આવી ત્યારે ગુરૂજીએ પ.પૂ. પપ્પાજીને કહ્યું– *'નિર્દોષબુદ્ધિ રહેતી નથી, પણ તમે કહ્યું હતું, એટલે પ્રયત્ન કરતો હતો.'* પછી બીજે વર્ષે જ્યારે પોતે જ મનથી નક્કી કર્યું, ત્યારે ૧૦૦ એ ૧૦૦ ટકા પાસ થઈ ગયા ને–

'જેણે મન જીત્યું તેણે સર્વે જગત જીત્યું.'
'ખીલવું અને કરમાવું એ જીવનો સ્વભાવ છે,
ભગવાન તરફ નજર રાખીને જીવવું એ ભકતનો સ્વભાવ છે.'

એમ ભગવાન તરફ નજર રાખી જીવતા થઈ ગયા.

પ.પૂ. ગુરુજી અત્યારે એવા સ્વરૂપ બની ગયા. દરેકના જીવમાં બેસી દરેકને અક્ષરધામના અધિકારી બનાવે છે ને તે પોતે નથી રહ્યા. અખંડ કાકા સ્વરૂપ થઈ ગયા. પોતાના સ્વનું વિસર્જન કરી નાખ્યું અને અનંતના 'સ્વ'નું વિસર્જન પોતે કરે છે ને **કાકાજી, પપ્પાજી, બાનો વારસો અખંડ રાખ્યો.** કાકાજીને અમર કરી દીધા.

કાકાજી બાળપણમાં ઘણી વખત કહેતા– દિલ્હીના ગર્વનર બનવું હોય તો તેનો હાથ પકડીને તેની જગ્યાએ બેસી જઈએ એટલે બની જવાય. એવું ગુરૂજીએ કર્યું ને **કાકાજીનું સ્વપ્નું સાકાર**

કરી, કાકાજીને અમર કરી દીધા. પપ્પાજીના વારસદાર બન્યા. અનંત જીવોના આધાર બની ગયા.

૧૯૮૬ની ૭ માર્ચે કાકાજી સ્વધામ પધાર્યા ત્યારે ગુરૂજીને ખૂબ શૉક લાગ્યો હતો. તે જ્યારે ગુરૂજી વિદ્યાનગર કાકાજીની ચિતા સામે ઊભા હતા ને તેમણે જે ચીસ પાડી, ત્યારે કાકાજી તેમના અંતરમાં અખંડ નિવાસ કરીને રહી ગયા અને ત્યાર પછીનું તેમનું જીવન પણ સાવ જ બદલાઈ ગયું. જ્યારે બીજે દિવસે તે દિલ્હી જતા હતા, ત્યારે પપ્પાજીને ડૉ. નીલમબેન કહે– *'પપ્પાજી, આ સ્વામીને આજે ના જવા દો.'* તો પપ્પાજી કહે– *'એ જશે ને ભક્તોને વાતો કરશે એટલે હળવો થઈ જશે.'*

આમ 'અખંડ પ્રભુધારક સાચા સંત' જેને-જેને બનવું હોય તેણે આવા ગુણાતીત સંતને રાજી-રાજી ને રાજી કરી લેવા; જેથી તેમની અંતરની પ્રસન્નતા મળી જાય ને અખંડ સુખિયા થવાય.

ગુરૂજીએ કાકાજીનું સ્વપ્નું સાકાર કર્યું. દિલ્હીમાં **'સ્વામિનારાયણ માર્ગ'** નામ પાડયું- કર્યું ને સ્વામિનારાયણ ભગવાનને દિલ્હીની ધરતી પર અમર કરી દીધા. મંદિરની ગલીમાંથી પસાર થઈએ એટલે ત્રણે ય બાજુ **'કાકાજી લેઈન'** એમ કાકાજીનું નામ રસ્તે જનારને ય ગુંજતું થઈ ગયું.

મંદિરની જગ્યાને **'તાડદેવ'** નામ આપી દિલ્હીમાં તાડદેવ તીર્થધામ ખડું કરી દીધું! છેલ્લે **'તીન ફરવરી પાર્ક'** કરીને સાક્ષાત્કાર દિન પણ ગગનમાં ગુંજતો કર્યો અને લોકો માટે પણ અખંડ આનંદનું સ્થાન–જીવનનું સંભારણું આપ્યું, જેથી સમાજમાં બધાંને ખ્યાલ આવે કે કાકાજીને સાક્ષાત્કાર થયો'તો. તેની સ્મૃતિ માટે બ્ર.સ્વ. યોગીબાપા અને સાક્ષાત્ સ્વરૂપ કાકાજીની મૂર્તિ અખંડ દર્શન માટે પધરાવી. વળી, ગુણાતીત સમાજમાં ય કાકાજી-પપ્પાજીની પ્રત્યક્ષની મૂર્તિ પધરાવીને એક ક્રાંતિકારી પહેલ કરી. આમ તેઓએ તેમનો સંકલ્પ સાકાર કર્યો કે 'સ્વર્ગ પૃથ્વી પર ઉતારવું'. એ તેઓએ સાક્ષાત્‌ની અખંડ સ્મૃતિ કરી ઉતાર્યું ને અંનતને સુખિયા કર્યા-સુખિયા કર્યા-સુખિયા કર્યા. ધન્યવાદ!

– પ.પૂ. જ્યોતિબેન, ગુણાતીત જ્યોત

[प.पू. ज्योति बहन के आशीर्वाद का हिन्दी अनुवाद]

स्वामिश्रीजी | १३.९.'०९
जय पप्पाजी | स्मृति दिनाँक

गुरुजी–आनंदी दीदी

परम पूज्य आनंदी दीदी और अक्षरज्योति मंडल –

जय स्वामिनारायण!

प.पू. गुरुजी की पहचान लगभग १९५३ के दिसंबर में पहली स्पेशियल ट्रेईन जब मुबंई आई और 'सुंदराबाई हॉल' में ब्र.स्व. योगीजी महाराज का स्वागत उत्सव था, तब हुई थी। उसके बाद वे ताड़देव

प.पू. काकाजी और बा के संबंध में आए। १९५४ से रोज ताड़देव में समागम करने उनके फेमिली मेम्बर्स आते। धीरे-धीरे सत्संग में ज्यादा प्रीति होने लगी। डॉ. रमणभाई उनके घर में पेईंग गेस्ट के रूप में रहते थे। फिलहाल **'डॉक्टरस्वामी'** के नाम से संस्था में पहचाने जाते हैं। **उन्होंने भी प.पू. काकाजी – प.पू. पप्पाजी का समागम किया था।** बाद में तो प.पू. काकाजी अधिकतर बापा के पास ही होते, सो प.पू. गुरुजी प.पू. पप्पाजी के पास आते।

★ एक दिन अफ्रीका से प.पू. काकाजी का पत्र आया और उसमें प.पू. गुरुजी का नाम नहीं था, लेकिन प.पू. पप्पाजी ने लिख दिया। प.पू. गुरुजी बहुत ही विचक्षण। उन्होंने अपना नाम लिखा हुआ देखा, तो तुरंत ही उन्होंने प.पू. पप्पाजी को कहा–
यह नाम आपने लिखा है, लेकिन काकाजी के पत्र में मेरा नाम नहीं आया।
सो, उन्हें बहुत दुःख हुआ कि *अरे... काकाजी के पत्र में मेरा नाम नहीं?* यूँ अंतर में दुःख हुआ होगा। सो, काकाजी का दूसरा पत्र आया कि *अरे दिलीपभाई! तुम्हारे आँसूओं की धारा हमें यहाँ म्वान्झा तक पहुँची* और उसमें **पू. महंतस्वामी** ने लिखा था –
बड़े पुरुष तो समुन्दर के समान हैं, जिसकी चोंच में जितना बल होगा उतना वह पिएगा।

★ एक बार प.पू. गुरुजी का जन्मदिन आने वाला था। सो, रात को घर जाते-जाते प.पू. गुरुजी बोले– *'कल मेरा जन्मदिन है।'* प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी दोनों बैठे थे। **प.पू. पप्पाजी बोले– *तुझे ऐसा नहीं लगता कि बापा को पहचानने में एक वर्ष कम हो गया।*** *हम तेरे घर पर भोजन करने नहीं आएंगे।* अगले दिन प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी ने एक पत्र लिख कर पू. धीरुभाई भट्ट को प.पू. गुरुजी के पास भेजा। ऐसे दयालु तो ये काकाजी और पप्पाजी ही हैं।

★ एक बार बापा के पास गुरुजी बैठे हुए थे। वॅकेशन में बोचासण गए थे। वहाँ संतों को परोसने के लिए ब्राह्मण चाहिए था। सो, एक भाई बोले– *'बापा, यह ब्राह्मण का लड़का है, इसे परोसने के लिए भेजो।'*
तो गुरुजी बोले– *'मैं जनेऊ नहीं पहनता।'*
बापा ने 'पू. मोटास्वामिजी' से कहा– *'इसकी जनेऊ आज ही टूट गई है, इसको जनेऊ दे दो।'*
यूँ बापा ने **गुरुजी का छुपा पक्ष रखते हुए लीला चरित्र** किया।

★ प.पू. गुरुजी से बापा ने पूछा– *'गुरु, तुम पूजा करते हो न?'*
तो प.पू. गुरुजी बोले– *'बापा आप आते हो तब नहीं करता, लेकिन बाद में करता हूँ।'*
तो बापा ने पूछा– *'तुम्हें कैसी मूर्ति याद रहती है?'* तो प.पू. गुरुजी बोले– *'टेढ़ी - मेढ़ी मूर्ति याद रह जाती है।'*
बापा ने तुरंत ही अपनी टेढ़ी उंगली दिखाई– *'ऐसा याद रहेगा?'*
प.पू. गुरुजी बोले– *'हाँ बापा।'*
बापा कैसे दयालु कहे जाएं कि सामने से मूर्ति में रहता कर दें; साधक को परिश्रम करना ही न पड़े।

★ बापा एक बार सारंगपुर में थे और प.पू. गुरुजी (युवक के रूप में) उनके पास थे।

तो, बापा बोले– *'यह चौकी का पाया टूट गया है। वो रिपॅर हो जाएगा?'*

प.पू. गुरुजी बोले– *'बापा हमारे मुंबई के मिस्त्री खूब होशियार होते हैं, वे ऐसा ही पाया बना देंगे।'*

तो, बापा बोले– *'हम भी अक्षरधाम के ऐसे ही कारीगर हैं। भले कैसा ही जीव हो, उसे सीधा अक्षरधाम का अधिकारी बना देंगे।'*

आज देखें तो बापा ने जो सिंचन गुरुजी में किया है, वैसे का वैसा सिंचन-जतन अब गुरुजी सभी साधकों में तथा भक्तों में एवं सारे गुणातीत समाज में कर ही रहे हैं। गुरुजी के दूसरे प्रसंग तो मुझे याद नहीं हैं।

प.पू. गुरुजी जब साधु होने जाने वाले थे, तब उनकी पूजा हमें देते गए थे। उसमें एक मूर्ति ऐसी थी कि श्रीजी महाराज और उनके दिल में योगीबापा की मूर्ति थी। वह मूर्ति हम सभी की ओर से **पू. हंसा दीदी** ने १९६४ में 'अक्षरदेरी' जैसा एक कार्ड बनाया था, उसमें रखी थी और **प.पू. बापा** को भेजा था। उसमें लिखा था–

हे बापा! जैसे इन योगेश्वरों ने आपके भरोसे छलांग लगाई है, ऐसे ही हमने भी आपके भरोसे पर छलांग लगाई है। तो हे बापा! आशीर्वाद देना।

तब बापा ने उसी कार्ड में वचनामृत प्रथम २३, मध्य ३०, ४५, अमदावाद २,३ लिख कर – *'महाराज सिद्ध करवाएंगे'* यूँ लिख कर आशीर्वाद भेजा था। **वह कार्ड आज भी स्मृति मंदिर में दर्शन के लिए रखा है।**

★ प.पू. गुरुजी को बा के प्रति सच्चा भाव था। सो वे 'बा-बा' करते हुए माला फेरते। उनकी प्रकृति के अनुसार उन्हें कोई स्मृति हो जाए, तो एकदम गर्दन अकड़ जाती। दिन में कई बार ऐसा होता। एक बार उन्हें नलीनकांतभाई दवे ने कहा था– *मैं तुम्हें सोनाबा की मूर्ति दूँगा।* फिर तो साधु हुए, सो बा की मूर्ति तो रख नहीं सकते थे। लेकिन उन्हें मन में हुआ कि नलीनकांत मुझे मूर्ति देता नहीं है। नलीनकांतभाई के स्कूटर की आवाज सुनते ही उनकी गर्दन अकड़ जाती। यूँ दिन में कई बार होता। एक दिन ताड़देव में फोन आया कि बाबुभाई! ये मुकुंदस्वामी को मेन्टल हॉस्पिटल में ले जाना पड़ेगा। प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी बोले– *'ये बापा का भेजा हुआ बॅलीफ है।'* सो, प.पू. पप्पाजी तो डॉ. जमनादास को लेकर गए। डॉक्टर ने देखा; वहाँ 'नलीन' नाम आया कि गर्दन अकड़ गई। सो, डॉक्टर ने कहा– *कुछ नहीं है।* फिर प.पू. गुरुजी ने सोचा कि *क्या मुझे ऐसा ही रहेगा?* उन्होंने प.पू. पप्पाजी से बात करी, तो प.पू. पप्पाजी बोले– *'बा-बा' करता है, उसके पीछे 'पा' लगा दे –'बापा-बापा!' तो तुरंत ही मिट जाएगा।* उन्होंने ऐसा किया, तो एकदम अच्छा हो गया।

★ **गुरुजी जो कोई चीज नजर में लेते हैं, उसे सिद्ध करके ही छोड़ते हैं।** प.पू. गुरुजी सांकरदा मंदिर में रहते थे। तब एक बार गुरुपूर्णिमा थी; सो प.पू. पप्पाजी सांकरदा गए थे और गुरुजी को कहा– *तू अक्षरविहारी में निर्दोषभाव रखना।* उन्होंने 'हाँ' भरी, लेकिन मन में यूँ हुआ कि *बाबुकाका ने कहा है, सो देखना नहीं है; लेकिन प्रकृति के मुताबिक देखते होंगे।* दूसरी गुरुपूर्णिमा आई तब गुरुजी ने प.पू. पप्पाजी को कहा– *'निर्दोषबुद्धि रहती नहीं है, लेकिन आपने कहा था, सो प्रयत्न करता था।'* फिर दूसरे वर्ष जब

खुद ही मन से पक्का कर लिया, तब १०० प्रतिशत पास हो गए और–

'जिसने मन जीता, उसने सारा जगत जीत लिया।'

'खिलना और मुरझाना यह जीव का स्वभाव है,
भगवान की ओर नजर रख कर जीना, वह भक्त का स्वभाव है।'

यूँ भगवान की ओर नजर रख कर जीते हो गए।

प.पू. गुरुजी अब ऐसे 'स्वरूप' बन गए। हर एक के जीव में बैठ कर हर एक को अक्षरधाम का अधिकारी बनाते हैं। वे खुद नहीं रहे, अखंड काका स्वरूप हो गए। अपने 'स्व' का विसर्जन कर दिया और अनंत के 'स्व' का विसर्जन खुद करते हैं। **काकाजी, पप्पाजी, बा का वारसा अखंड रखा है।** काकाजी को अमर कर दिया।

काकाजी बचपन में कई बार कहते–दिल्ली का गर्वनर बनना हो, तो उसका हाथ पकड़ कर उसकी जगह बैठ जाएं, तो बन पाएंगे। ऐसा गुरुजी ने किया है। **काकाजी का सपना साकार करके, काकाजी को अमर कर दिया। पप्पाजी के वारिसदार बने। अनंत जीवों के आधार बन गए।**

१९८६ की ७ मार्च को काकाजी स्वधाम सिधारे, तब गुरुजी को खूब शॉक लगा था। जब गुरुजी विद्यानगर में काकाजी की चिता के सामने खड़े थे और उन्होंने जो चीख मारी, तब काकाजी उनके अंतर में अखंड निवास कर गए और उसके बाद उनका जीवन भी बिल्कुल ही बदल गया। दूसरे दिन जब वे दिल्ली जा रहे थे, तब डॉ. नीलम ने पप्पाजी को कहा– *'पप्पाजी, ये स्वामी को आज नहीं जाने दो।'* तो पप्पाजी बोले– *'वो जाकर भक्तों से बातें करेगा, तो हल्का हो जाएगा।'*

यूँ 'अखंड प्रभुधारक सच्चे संत' जिन-जिनको बनना हो, उसे ऐसे गुणातीत संत को राजी-राजी और राजी कर लेना चाहिए, जिससे कि उनके अंतर की प्रसन्नता मिल जाए और अखंड सुखी हो पाएं।

गुरुजी ने काकाजी का सपना साकार किया। दिल्ली में **'स्वामिनारायण मार्ग'** नाम रखवाया–करा और स्वामिनारायण भगवान को दिल्ली की धरती पर अमर कर दिया। मंदिर की गली से गुज़रते हुए तीनों ओर **'काकाजी लेन'**–यूँ काकाजी का नाम इस रास्ते से जाने वालों के लिए भी गूँजने वाला हो गया।

मंदिर की जगह को **'ताड़देव'** नाम देकर ताड़देव तीर्थधाम खड़ा कर दिया! आख़िर **'तीन फरवरी पार्क'** करके (प.पू. काकाजी का) साक्षात्कार दिन भी गगन में गूँजता किया और लोगों के लिए भी अखंड आनंद का स्थान–जीवन के लिए यादगार स्मृति दे दी, जिससे समाज में सभी को ख्याल आए कि काकाजी को 'साक्षात्कार' हुआ था। उसकी स्मृति के लिए ब्रह्मस्वरूप योगीबापा और साक्षात् स्वरूप काकाजी की मूर्ति अखंड दर्शन के लिए पधराई। और तो और, गुणातीत समाज में भी काकाजी-पप्पाजी की प्रत्यक्ष मूर्ति पधरा कर एक क्रांतिकारी पहल करी। यानि उन्होंने उनका (काकाजी-पप्पाजी का) संकल्प साकार किया कि 'स्वर्ग को पृथ्वी पर उतारना है'। यह उन्होंने साक्षात् की अखंड स्मृति करके उतारा और अनंत को सुखी किया-सुखी किया-सुखी किया। धन्यवाद!

– प.पू. ज्योतिबहन, गुणातीत ज्योत

સ્વામિશ્રીજી

सौरभ - ६

જ્યાં જ્યાં નજર મારી ઠરે, યાદી ભરી ત્યાં કાકાની...

૧૫ ઑગષ્ટ '૦૯

૧. ગુરૂજી ઇઝ કાકાજીઝ ક્રિયેટીવ ક્રીએશન.
૨. ગુરૂજી એટલે કાકાજીના દીવાના.
૩. ગુરૂજી એટલે નટખટ ભૂલકું.
૪. ગુરૂજી એટલે બુદ્ધિ અને હૃદયનો અદ્‌ભુત સમન્વય.
૫. ગુરૂજી એટલે વન વે–એકપક્ષીય આત્મીયતાનું સ્વરૂપ.
૬. ગુરૂજી એટલે ચીવટાઇ અને ચોકસાઈનું સ્વરૂપ. પર્ફેક્શન ઈન ઍવરીથીંગ- જે કરે તે ટોટલ.
૭. ગુરૂજી જેવા અંદર તેવા બહાર.
૮. ગુરૂજી એટલે સહજતા.
૯. ગુરૂજી એટલે નિત્ય નવીનતા.
૧૦. ગુરૂજી એટલે ભજન અને પ્રાર્થનાનો ધોધ.
૧૧. ગુરૂજી એટલે સ્મૃતિ અને મહાત્મ્યસભર સ્વરૂપ.
૧૨. ગુરૂજી એટલે ખુલ્લી આંખે અખંડ ધ્યાન અને દર્શન!
૧૩. ગુરૂજી એટલે આનંદ સ્વરૂપ!

અંતે નેતિ નેતિ....

ધન્યવાદ એમના ક્રિયેટર્સને-જોગી મહારાજને! ધન્યવાદ કાકાજી, પપ્પાજી, સોનાબાને! ધન્યવાદ સ્વામિજીને! ધન્યવાદ કાંતિકાકાને!

ગુરૂજીએ સ્વરૂપોને અંતરની આંખે માહાત્મ્યથી નિહાળ્યા એટલું જ નહિ, એમના ભક્તોને પણ અંતરની આંખે માહાત્મ્યથી નિહાળ્યા અને એવા છૂપા ભક્તોની એમને ઓળખાણ પડી, તો સહુને ઓળખાવ્યા. એવા પ્રસંગો એમના જ સ્વમુખે સાંભળેલા.

* ૧૯૭૮માં કાકાશ્રી 'ધી રિયલ ઈસૅન્સ ઑફ તાન્ત્ર' પુસ્તકનું લેખન કરાવી રહ્યા હતાં. ત્યારે એ સેવા માટે ગુરૂજી પણ મુંબઈ પધાર્યા હતાં. તેઓ તાડદેવ મંદિરે રહેતાં. કાકાશ્રીના સાન્નિધ્યમાં દિવસ દરમિયાન ભક્તોની આવન-જાવન ચાલુ જ હોય. તેમાં પણ બ્હેનો જ વધારે આવતાં. ક્યારેક કોઈ બ્હેનો મહાપૂજામાં આવે, તો ક્યારેક કોઈ બ્હેનો બપોરના સમયે કાકાશ્રી માટે નાસ્તો લઈને પરાંમાંથી આવે. કાકાશ્રી પણ દરેકને કાંઈ ને કાંઈ સેવામાં પ્રેરતાં. એકવાર ગોરેગામથી અક્ષરનિવાસી **વિમળાબેન ઝવેરી** સવારે આવ્યા. બીજાં બધાં કામમાં હશે, એટલે કાકાશ્રીએ એમને રૂમમાંથી એક ફાઈલ શોધીને લાવવાનું કહ્યું. એમને

કાકાશ્રી જે ફાઈલ માંગતાં હતાં એ અંગે તો કાંઈ ખબર ન હતી. ફાઈલ શોધવા એમણે કાકાજીની રૂમમાં બધી ફાઈલો વેરવિખેર કરી નાખી. આ લીલા નિહાળી ગુરૂજીએ વિમળાબેનને પૂછાવડાવ્યું–

તમને અંગ્રેજી સમજ પડે છે? તમારે અમને (ગુરૂજીને કે રાજુભાઈને) કહેવડાવી દેવું'તું કે કાકાજી આ ફાઈલ મંગાવે છે. હવે આ બધો તમારો પસારો કોણ સંકેલશે?

વિમળાબેનને તો કાકાશ્રીનું બધું જ દિવ્ય અને કલ્યાણકારી લાગતું. તેથી તેઓ તો હસતાં જ રહ્યા ને ખૂબ આપોપાભાવે ગુરૂજીને કહેવડાવ્યું–

તમે સંકેલજો. મને તો કાકાજીએ ફાઈલ શોધી લાવવાનું કહ્યું; મળી જાત તો ફાઈલના ભાગ્ય, પણ ફાઈલ ન શોધીને હું શું કામ ખોટ ખાઉં?

ગુરૂજી તો આ સાંભળી દંગ જ થઈ ગયા. એમણે કાકાજી પ્રત્યેની વિમળાબેનની ભક્તિ, પ્રીતિ અને દિવ્યતાના જ એમાં દર્શન કર્યા અને... આ પ્રસંગની વાત ગુરૂજીએ જ્યારે સભામાં કરી ત્યારે અમને આવા મુક્તોની ઓળખાણ થઈ અને મહાત્મ્યની દૃષ્ટિ વિકસી.

એવો જ બીજો પ્રસંગ–

* નાયર હૉસ્પીટલમાં **પ્રતિમાબેન** સર્વિસ કરતા'તા. એકવાર તેમને કાકાશ્રીએ બપોરે તાડદેવ બોલાવ્યા. તેઓ હૉસ્પીટલથી તાડદેવ આવ્યા ત્યારે કાકાશ્રી બહાર ગયા હતા. બીજે દિવસે સવારે કાકાશ્રીએ એમને ફરી ફોન કરીને તાડદેવ બોલાવ્યા. તેઓ લંચ ટાઈમમાં તાડદેવ આવ્યા. ત્યારે પણ કાકાશ્રી બહાર ગયા હતા, તેથી મળ્યા નહિ. આવું ત્રણ-ચાર દિવસ ચાલ્યું. ગુરૂજીને ખબર હતી કે ત્રણ-ચાર દિવસથી કાકાશ્રી પ્રતિમાબેનને તાડદેવ બોલાવે છે, પણ કંઈ ન કંઈ બ્હાને એમને મળતા નથી. ભગવાન અને ભક્તની આવન-જાવનની આ લીલા ગુરૂજી નિહાળતાં હતાં. છેવટે ગુરૂજીએ સેવક દ્વારા એમને પૂછાવ્યું–

  કાકાશ્રી તમને આમ બોલાવીને મળતા નથી, તો કંઈ વિચાર આવતા નથી?

  એમણે કહેવડાવ્યું–

  કાંઈ નહિ, એમણે બોલાવી હતી એટલે મારી આવવાની ફરજ હતી અને હું આવી ગઈ! તેઓ તો જાણે જ છે ને!

  ગુરૂજી એમનો આ જવાબ સાંભળીને વિચારમાં જ પડી ગયા! આ પ્રસંગની વાત પણ ગુરૂજીએ સભામાં કરી'તી અને ત્યારે જ સહુને ખબર પડી કે કેવી સમજણથી પ્રતિમાબેન જીવતાં.

  આમ, કાકાશ્રીને સંપૂર્ણ દિવ્ય માનીને જીવતાં મુક્તોની ગુરૂજીએ ઓળખાણ કરાવી. કારણ? **તેઓ ખુલ્લી આંખે અખંડ ધ્યાન કરતાં હોય છે.** ભગવાન અને ભક્તોના ચરિત્રોને દિવ્યતાથી નિહાળે છે!

ગુરૂજી તાડદેવ રહે તો કાકાજી સાથે, કાંતિકાકા સાથે અને સહુ સાધક ભાઈઓ સાથે એકદમ સહજભાવે-નિખાલસતાથી રહે; નિર્દોષભાવે, આત્મીયતાથી રહે. ત્યાં રહેતાં અને આવતાં-કરતાં સર્વ ભક્તોનો કાકાશ્રી સાથે કેવો વિશિષ્ટ સંબંધ છે તે નિહાળે. મહિમાથી સહુની સાથે

રસબસ થાય, આનંદ-કિલ્લોલ પણ કરે. કાકાશ્રીના લાડકાં ભૂલકાં સાથે પોતે સામેથી આત્મીયતાનો સંબંધ કરે. કોઈ ભક્ત મૂંઝાયેલા દેખાય, તો એમને માટે છુપું ભજન પણ કરે.

* ગુરૂજી એટલે હાઈ રિસીવીંગ ડિવાઈન પાવર-હાઉસ. દિલ્હીમાં પણ દરેક મુક્તોને ખૂબ લાડ-પ્યાર કરે. નવા સમાજમાં કામ કરવાનું થયું; ત્યારે તાડદેવની કાકાશ્રી સાથેની ઈદમ્ સ્મૃતિ કરતાં-કરતાં સહુને કાકાશ્રીની વાતો કરે. સેવકોની ભૂલ થઈ હોય ત્યારે એની જગ્યાએ પોતાને રાખીને કાકાશ્રી એમની સાથે કેવું વર્ત્યા-એ વિચારીને પોતે સેવકના સેવક બની, એમણે ભજન અને પ્રાર્થનાથી સહુને સાચવ્યા.

  એક પ્રસંગ યાદ આવે છે. કૃષ્ણનગરમાં રહેતાં ભોલી આંટી અને હરિરામજીને ઘરમાં કોઈક પ્રૉબ્લમને લીધે મૂંઝવણ હતી. એ વૅઝ ગુરૂજીને પ્હોંચયા; એટલે એમણે તો સવારે ઊઠીને સેવકને કહ્યું– *ચલો, કૃષ્ણનગર જાના હૈ.* ત્યાં–હરિરામજીને ઘરે આટલા વહેલાં ગુરૂજી આવે, એવી તો એમને કોઈને કલ્પના પણ ન હોય ને? ઘંટી વાગી-દરવાજો ખોલતાં જ સવાર-સવારે ગુરૂજીના દર્શન કરી ભક્તો તો આભા જ બની ગયા. એમની સાથે વાતચીત કરી. ઊકાળો પીને– *ચલો, ધૂન્ય કરની હૈ* ; કહી ગુરૂજીએ **૧ કલાક ધૂન કરી.** ભક્તોના જીવમાં જીવ આવ્યો-શાંતિ થઈ અને સહુ હળવા થઈ ગયા. 'ગુરૂજીનો સહારો સદાય છે'– માની નિશ્ચિંત થઈ ગયા.

* સંબંધના મહિમાની પણ ગુરૂજીની એક દૃષ્ટિ છે. આનંદીદીદીને હાર્ટની તકલીફ છે એ જાણ્યું અને ઑપ્રેશન કરાવવાનું નક્કી થયું, એટલે એમણે દરેક સૅન્ટર્સમાં ફોન કર્યા–કાકાશ્રીના લાડકાં બધાં ભક્તોને પણ ફોન કર્યા ને કહ્યું: 'તમે ધૂન કરજો.' પછી કહે–

  'હાશ, આપણે તો બધાંને કહી દીધું, એટલે જવાબદારી વહેંચાઈ જાય અને ભગવાનને પ્રગટ થઈને કામ કરવું પડે!'

જ્યારે આ વાત સાંભળી, ત્યારે અંતરમાં થયું કે **કેવી સંબંધવાળી દૃષ્ટિ અને મોટાપુરૂષોની નિશ્રાની નિશ્ચિંતતા!**

ગુરૂજી સાધુ થયા ત્યારે એ શરૂઆતના દિવસોમાં એમના મસ્તીખોર સ્વભાવના કારણે નિત્ય નવીન ધમાલ કરવાના પ્રોગ્રામ ઘડે. ધમાલ કરવાના પ્રોગ્રામમાં જે બુદ્ધિ વપરાતી, તેને કાકાશ્રીએ કેવી ને કેટલી ધીરજ અને દુરંદેશી દૃષ્ટિકોણ રાખી દિવ્ય બનાવી! તો એ જ ગુરૂજીએ આજે દિલ્હી-ભારતની રાજધાનીમાં કાકાશ્રીને અમર કર્યા.

કાકાશ્રીના સંકલ્પને સાકાર કર્યો-કાકાશ્રીના દાખડાને સફળ કર્યો અને કાકાશ્રી પ્રત્યેની ગુરૂભક્તિ અદા કરતાં–એમણે દિલ્હીમાં **'સ્વામિનારાયણ માર્ગ'** પર **'કાકાજી લેન'** બનાવી. ભવ્ય મંદિર બનાવી, સહુથી પ્રથમ કાકાશ્રીની મૂર્તિ દિલ્હી મંદિરમાં પધરાવી. ૨૦૦૩માં **'કાકાશ્રીની પોસ્ટલ સ્ટૅમ્પ'** પણ બ્હાર પડાવી. એટલું નહિ, પરંતુ **'તીન ફરવરી પાર્ક'** બનાવી ભગવાન સ્વામિનારાયણનો સંબંધયોગ વ્યાપક બનાવવા યોગીજી મહારાજ અને કાકાશ્રીની મૂર્તિ પાર્કમાં પધરાવી; જેથી જે કોઈ પાર્કમાં આવે તે કુતૂહલતાથી કે જિજ્ઞાસાથી એકવાર તો દર્શન કરે જ.

આમ જે કોઈ એમના સંબંધમાં આવ્યા એ સહુના દિલમાં કાકાશ્રીને સ્થાપી દીધાં. વળી, આત્મીયતાથી-કુટુંબભાવથી અનેક કુટુંબોને જીવન જીવતાં કર્યા! ધન્ય ગુરૂજી તમારી ગુરૂભક્તિને! ધન્યવાદ ગુરૂજીના આવા શિલ્પકારને!

કોઈ સાધક મૂંઝાતા હોય ત્યારે કાકાશ્રી તો ઘણીવાર એમને કહેતાં–

'તમે તો બહુ સારા છો, તમારા સ્વભાવ-પ્રકૃતિ તો કાંઈ નથી. આ બાપુ અને મુકુંદ–એમના સ્વભાવ અને પ્રકૃતિ તો બહુ તેજ; તેઓ જો બદલાયા, તો તમારું કામ તો થવાનું જ છે.'

એક દિવસ તાડદેવ મંદિરે ૬ડી-સોનાવાલામાં પૂ. ગુરૂજીના પ્રાગટ્યદિનની ઊજવણી થઈ રહી હતી; ત્યારે **કાકાશ્રીએ આશીર્વાદ** આપતાં કહ્યું–

'જ્યારે તમને મૂંઝવણ થાય ત્યારે–'બાપુ અને ગુરૂજી બદલાયા છે'–તો આપણું પણ કામ થવાનું જ છે–માની ૧૫ મિનિટ ધૂન્ય કરશો, તો તમારું કામ થઈ જશે–બળ મળી જશે.'

૧૯૮૬માં કાકાશ્રી સ્વધામ પધાર્યા પછી 'ફાધર્સ ડૅ' આવ્યો. ત્યારે ફાધર્સ ડૅનું ગ્રીટીંગ કાર્ડ પણ એમણે કાકાશ્રીના ચરણે ૬-ડી સોનાવાલા-તાડદેવ મંદિરે મોકલાવ્યું. ત્યારે અંતરમાં થાય કે **ગુરૂજી જે કાંઈ જુએ, જ્યાં જુએ-તેમાં કાકાશ્રીનું જ અનુસંધાન!**

એકવાર એમણે એક પૉસ્ટર વાંચ્યુ–'બિન ફેરે હમ તેરે'. તરત જ ગુરૂજી કહે–ગુણાતીત પુરૂષો સાથે આપણા સહુનું પણ એવું જ છે. **શ્વાસે શ્વાસે-વિચારોમાં ગુણાતીત સ્વરૂપોની જ ઘેલછા!** ત્યારે જ તો તેઓ આજે એમના સાન્નિધ્યનું–પ્રગટપણાનું સુખ આપી અનેકના પ્રાણાધાર બન્યા!!

ગુરૂજીને **પોતાની ભૂલો જાહેર સભામાં** કહેવામાં **પણ** જરાય ખચકાટ નહિ. **નિધડકપણે-ભૂલકાંના ભાવે** એમની જે ભૂલ થઈ હોય તે પણ **કહી દે**. એમની બુદ્ધિમાં બેસે નહિ એવી વાત થઈ હોય, તો ખૂબ વિચારે અને ખુલ્લા દિલે પૂછી લે. જ્યાં સુધી એમને સમાધાન ન થાય, ત્યાં સુધી તેઓ એ વાત કબૂલ પણ ન રાખે–પ્રાર્થના કર્યા કરે. એનું એક જ્વલંત ઉદાહરણ છે. દિલ્હી મંદિરમાં કાકાશ્રીની મૂર્તિ પધરાવી છે. જે ભક્તો કાકાશ્રીના સહવાસમાં રહ્યા હોય, કાકાશ્રીને વધુ મળ્યા-કર્યા હોય એ લોકોને પહેલી નજરે જોતાં મૂર્તિ હુબહુ નથી એવો ભાવ સ્હેજે થાય; તો, ગુરૂજી તો એકદમ ઝીણવટપૂર્વક બધું જોનારા. એમને પણ અંતરમાં દુઃખ રહે કે કાકાશ્રીની મૂર્તિમાં કાંઈક ઉણપ આવી ગઈ છે. ફાઈનલી જે ઍપ્રુવ કરીને આવેલા ને એકદમ ગમી ગએલી એવી નથી લાગતી. ઘણાં સમય સુધી પોતે ભજન કર્યું. એમના દિલ-દિમાગમાં બેસી જાય એવી વાત કાકાશ્રીએ ગુરૂજીને સ્વપ્નામાં કરી કે હવે મારી ઉંમર થઈ, એટલે થોડો તો ફરક પડે ને! તરત જ એ વાત એમને 'ક્લીક' થઈ ગઈ.

ટૂંકમાં **ગુરૂજીનું જીવન** એટલે કાકાજી સાથેના **એમના દરેક હલનચલન, દૃષ્ટિ, સમાધાન, ભક્તિ, સેવા વિગેરેની એક યાદગાર દાસ્તાન!** એટલું જ વિચારતાં મન વિરમી જાય, બુદ્ધિ હારી જાય, હૃદય ઝૂકી જાય. એવા ગુરૂજીના ચરણોમાં અનંત વંદન સાથે અભીપ્સા–'શતમ્ જીવ શરદઃ'

જય સ્વામિનારાયણ!

– પૂ. યોગિનીબેન (પવઈ)

[हिन्दी अनुवाद]

जहाँ-जहाँ नज़र मेरी ठहरे, यादें भरी वहाँ-वहाँ काकाजी की...

१. गुरुजी इज़ काकाजीज़ क्रियेटीव क्रीएशन।
२. गुरुजी यानि काकाजी का दीवाना।
३. गुरुजी यानि नटखट भुलका (बालक)।
४. गुरुजी यानि दिल और दिमाग़ का अद्‌भुत समन्वय।
५. गुरुजी यानि वन वे–एकपक्षीय आत्मीयता का स्वरूप।
६. गुरुजी यानि हर कार्य की फ़िकर पूर्ण लगन और चौकसी का स्वरूप। पर्फेक्शन इन एवरीथिंग–जो भी करें वो टोटल।
७. गुरुजी जैसे अंदर, वैसे बाहर।
८. गुरुजी यानि सहजता।
९. गुरुजी यानि नित्य नवीनता।
१०. गुरुजी यानि भजन और प्रार्थना का धोध।
११. गुरुजी यानि स्मृति और माहात्म्यपूर्ण स्वरूप।
१२. गुरुजी यानि खुली आँखों से अखंड ध्यान और दर्शन!
१३. गुरुजी यानि आनंद स्वरूप!

अंत में नेति नेति...

धन्यवाद उनके क्रियेटर्स–योगीजी महाराज को! धन्यवाद काकाजी, पप्पाजी, सोनाबा को!

धन्यवाद स्वामिजी को! धन्यवाद कांतिकाका को!

गुरुजी ने स्वरूपों को अंतर की आँखों से-माहात्म्य से-निहारा; इतना ही नहीं, उनके भक्तों को भी अंतर की आँखों से-माहात्म्य से-निहारा और ऐसे छुपे भक्तों को पहचानने के बाद उनकी पहचान सभी को दी। ऐसे प्रसंग उन्हीं से सुने हैं।

✻ १९७८ में काकाजी 'धी रियल इसॅन्स ऑफ तान्त्र' पुस्तक लिखवा रहे थे। तब इस सेवा के लिए गुरुजी भी मुंबई पधारे थे। वे ताड़देव मंदिर में रहते। दिन में काकाजी के होते भक्तों का आना-जाना जारी ही रहता। उसमें भी बहनें ही अधिकतर आतीं। कभी कोई बहन महापूजा में आती, तो कभी दोपहर को कोई बहन काकाजी के लिए नाश्ता लेकर सबर्ब से आतीं। काकाजी भी हर एक को किसी न किसी सेवा में पिरोए रखते। एक बार गोरेगाँव से अक्षरनिवासी **विमलाबेन झवेरी** सुबह आईं। दूसरे सब काम में होंगे, सो काकाजी ने उन्हें कमरे में से एक फाईल ढूँढ कर लाने को कहा। काकाजी जो फाईल माँग रहे थे, उसके बारे में तो उन्हें कुछ मालूम ही नहीं था। फाईल ढूँढने के लिए उन्होंने काकाजी के कमरे में रखी सारी फाईलों को इधर-उधर बिखेर दिया। यह लीला देख कर गुरुजी ने विमलाबेन को कहलवाया– *तुम्हें अंग्रेजी समझ में आती है ? तुम्हें हमें (गुरुजी या राजुभाई को) कहलवा देना चाहिए था कि काकाजी*

यह फाईल मंगवा रहे हैं। अब तुम्हारा फैलाया हुआ यह सारा कौन समेटेगा?

विमलाबेन को तो काकाजी का सब कुछ दिव्य और कल्याणकारी लगता। सो, वे तो हँसती ही रहीं और खूब अपनेपन से गुरुजी को कहलवाया–

आप समेटना। मुझे तो काकाजी ने फाईल ढूँढ कर लाने के लिए कहा था; मिल जाए तो फाईल के भाग्य, लेकिन फाईल न ढूँढ कर मैं क्यों घाटे में जाऊँ?

गुरुजी तो यह सुन कर दंग ही रह गए। उन्होंने काकाजी के प्रति विमलाबेन की भक्ति, प्रीति और दिव्यता का ही उसमें दर्शन किया और... इस प्रसंग की बात गुरुजी ने जब सभा में करी तब हमें ऐसे मुक्तों की पहचान हुई और माहात्म्य की दृष्टि विकसित हुई।

ऐसा ही दूसरा प्रसंग–

* नायर हॉस्पीटल में **प्रतिमाबेन** सर्विस करती थीं। एक बार काकाजी ने उन्हें दोपहर को ताड़देव बुलाया। वे हॉस्पीटल से जब ताड़देव आईं, तब काकाजी बाहर गए हुए थे। अगले दिन सुबह काकाजी ने उन्हें फिर से फोन करके ताड़देव बुलाया। वे लंच टाईम में ताड़देव आईं। तब भी काकाजी बाहर गए थे, सो मिले नहीं। ऐसा तीन-चार दिन चला। गुरुजी जानते थे कि तीन-चार दिन से काकाजी प्रतिमाबेन को ताड़देव बुलाते हैं, लेकिन किसी न किसी बहाने उन्हें मिलते नहीं हैं। भगवान और भक्त के आवन-जावन की यह लीला गुरुजी निहारते थे। आख़िर गुरुजी ने सेवक द्वारा उन्हें पुछवाया–

  काकाजी आपको यूँ बुला कर मिलते नहीं, तो कोई विचार नहीं उठता?

  उन्होंने कहलवाया–

  कुछ भी नहीं, उन्होंने बुलाया था सो आने का मेरा फर्ज़ था और मैं आ गई! वे तो जानते ही हैं न!

  गुरुजी उनका यह जवाब सुन कर सोच में पड़ गए! इस प्रसंग की बात भी गुरुजी ने सभा में करी थी और तब सभी को पता चला कि कैसी समझदारी से प्रतिमाबेन जीती हैं।

यूँ, काकाजी को संपूर्ण दिव्य मान कर जीते मुक्तों की गुरुजी ने पहचान करवाई, क्योंकि **वे खुली आँखों से अखंड ध्यान करते हैं।** भगवान और भक्त के चरित्रों को दिव्यता से निहारते हैं!

गुरुजी ताड़देव रहते तो काकाजी के साथ, कांतिकाका के साथ और सभी साधक भाइयों के साथ एकदम सहजभाव से–शुद्धभाव से रहते; निर्दोषभाव से, आत्मीयता से रहते। वहाँ रहते और आते-करते सभी भक्तों का काकाजी के साथ कैसा विशिष्ट संबंध है, वह निहारते। महिमा से सभी के साथ ओत-प्रोत होते, आनंद-किल्लोल भी करते। काकाजी के लाड़ले भुल्कों के साथ आत्मीयता का संबंध स्वयं बनाते। कोई भक्त परेशान दिखता, तो उसके लिए छुपा भजन भी करते।

* गुरुजी यानि हाई रिसीविंग डिवाईन पावर-हाउस। दिल्ली में भी हर एक मुक्त को खूब लाड़-प्यार देते हैं। नए समाज में काम करने का हुआ, तब ताड़देव की काकाजी की स्मृति इदम् करते हुए सभी से काकाजी की बातें करते। सेवकों की गलती हुई हो, तब उनकी जगह पर खुद को रख कर, काकाजी उनके साथ कैसे वर्ते–यह सोच कर खुद सेवक के सेवक बने, उन्हें भजन और प्रार्थना से संभाला।

एक प्रसंग याद आता है। कृष्णानगर में रहते भोली आंटी और हरिरामजी के घर में किसी प्रॉब्लम के कारण परेशानी थी। वो वॅव्ज़ गुरुजी को पहुँची; सो उन्होंने तो सुबह उठते ही सेवक से कहा– चलो, कृष्णानगर जाना है। वहां–हरिरामजी के घर इतनी जल्दी गुरुजी आएंगे, ऐसी तो किसी को कल्पना भी न हो न? घंटी बजी–दरवाजा खोलते ही सुबह-सुबह गुरुजी के दर्शन करके भक्त तो स्तब्ध हो गए। उनके साथ बातचीत की। काढ़ा पीकर–*चलो, धुन करनी है,* कह कर गुरुजी ने **एक घंटा धुन की।** भक्तों की जान में जान आई–शांति हुई और सभी हलके हो गए। 'गुरुजी का सहारा हमेशा है'–मान कर निश्चिंत हो गए।

* संबंध की महिमा की भी गुरुजी की एक दृष्टि है। आनंदी दीदी को हार्ट की तकलीफ है, यह पता चला और जैसे ही ऑप्रेशन करने का तै हुआ, उन्होंने हर एक सॅन्टर्स में फोन किया–काकाजी के लाड़ले सभी भक्तों को भी फोन किया और कहाः *'आप धुन करना।'* फिर बोले–

'हाश! हमने तो सभी को कह दिया; अब जिम्मेदारी बंट गई और भगवान को प्रगट होकर काम करना पड़ेगा!'

जब यह बात सुनी, तब अंतर में हुआ कि **कैसी संबंधवाली दृष्टि और बड़े पुरुष की निश्रा की निश्चिंतता!**

गुरुजी साधु हुए तब शुरुआत के दिनों में अपने शरारती स्वभाव के कारण नित्य नवीन शरारत का प्रोग्राम बनाते। धमाल करने के प्रोग्राम में जो बुद्धि लगती, उसे काकाजी ने कैसी और कितनी धीरज एवं दूरदर्शी दृष्टिकोण रख कर दिव्य बनाया! तो वही गुरुजी ने आज दिल्ली-भारत की राजधानी-में काकाजी को अमर कर दिया।

काकाजी के संकल्प को साकार किया-काकाजी के परिश्रम को सफल किया और काकाजी के प्रति गुरुभक्ति अदा करते हुए–उन्होंने दिल्ली में **'स्वामिनारायण मार्ग'** पर **'काकाजी लेन'** बनवाई। भव्य मंदिर बना कर, काकाजी की मूर्ति सबसे पहले दिल्ली मंदिर में पधराई। २००३ में **'काकाजी की पोस्टल स्टॅम्प'** भी जारी करवाई। इतना ही नहीं, **'तीन फरवरी पार्क'** बनवा कर भगवान स्वामिनारायण का संबंधयोग व्यापक बनाने के उद्देश्य से योगीजी महाराज और काकाजी की मूर्ति पार्क में पधराई; जिससे जो कोई पार्क में आए वह कुतूहलवश या जिज्ञासा से एक बार तो दर्शन करे ही। **यूँ जो कोई उनके संबंध में आया, उन सभी के दिल में काकाजी को स्थापित कर दिया।** साथ ही, आत्मीयता-कुटुंबभाव से अनेक कुटुंबों को जीवन जीता किया! धन्य गुरुजी आपकी गुरुभक्ति! धन्यवाद गुरुजी के ऐसे शिल्पकार को!

कोई साधक उदास हो, तब काकाजी तो कई बार उससे कहते–

'तुम तो बहुत अच्छे हो; तुम्हारे स्वभाव-प्रकृति तो कुछ नहीं है। ये बापु और मुकुंद–उनके स्वभाव और प्रकृति तो बहुत तेज; वे यदि बदल गए, तो तुम्हारा काम तो होना ही है।'

एक दिन ताड़देव मंदिर ६ डी-सोनावाला में पू. गुरुजी का प्रागट्य दिन मना रहे थे; तब **काकाजी ने आशीर्वाद** देते हुए कहा–

'जब तुम परेशान हो तब–'बापु और गुरुजी बदल गए हैं'–तो हमारा भी काम होने वाला ही है–मान कर १५

मिनिट धुन करोगे, तो तुम्हारा काम हो जाएगा-बल मिल जाएगा।'

१९८६ में काकाजी के स्वधाम सिधारने के बाद 'फाधर्स डॅ' आया। तब फाधर्स डॅ का ग्रीटिंग कार्ड भी उन्होंने काकाजी के चरणों में ६-डी सोनावाला-ताड़देव मंदिर में भेजा। तब अंतर में हुआ कि गुरुजी जो कुछ देखते हैं, जहाँ देखते हैं–उसमें काकाजी का ही अनुसंधान!

एक बार उन्होंने एक पोस्टर पढ़ा–'बिन फेरे हम तेरे'। तुरंत ही गुरुजी बोले–गुणातीत पुरुषों के साथ हम सभी का भी ऐसा ही है। हर सांस में–विचारों में–गुणातीत स्वरूपों के प्रति का ही बावलापन! तभी तो वे आज उनके सान्निध्य का-प्रगटपन का सुख देकर अनेकों के प्राणाधार बने हैं!!

गुरुजी को **अपनी भूल जाहिर सभा में** कहने में भी ज़रा भी हिचक नहीं। **निधड़क रूप से-बालक के भाव** से उनकी जो भूल हुई हो, वो भी **कह दें।** उनकी बुद्धि में बैठे नहीं ऐसी बात हुई हो, तो खूब सोचें और खुल्ले दिल से पूछ लें। जब तक उन्हें समाधान न मिले, तब तक वे उस बात को कबूल भी न रखें–प्रार्थना किया करें। उसका एक ज्वलंत उदाहरण है-दिल्ली मंदिर में काकाजी की मूर्ति पधराई है। जो भक्त काकाजी के साथ में रहे हों, काकाजी को ज्यादा मिले-करे हों, उन्हें पहली नज़र में ही 'मूर्ति हुबहु नहीं है'–ऐसा भाव सहज होगा; जबकि गुरुजी तो एकदम बारीकी से सब देखने वाले। उन्हें भी अंतर में दुःख रहता कि काकाजी की मूर्ति में कुछ कमी आ गई है। फाईनली जो एप्रुव करके आए थे और एकदम पसंद आ गई थी, ऐसी नहीं लगती। काफी समय तक खुद भजन किया। उनके दिल-दिमाग़ में बैठ जाए, ऐसी बात काकाजी ने गुरुजी को स्वप्न में करी कि अब मेरी उम्र हुई, सो थोड़ा तो फर्क पड़ेगा न! तुरंत ही यह बात उन्हें 'क्लीक' हो गई।

संक्षिप्त में **गुरुजी का जीवन** यानि काकाजी के साथ के **उनके हर एक हलन-चलन, दृष्टि, समाधान, भक्ति, सेवा वगैरह की एक यादगार दास्तान!** यही सोचते मन विराम को पा जाए, बुद्धि हार जाए, हृदय झुक जाए। ऐसे गुरुजी के चरणों में अनंत वंदन के साथ अभीप्सा–'शतम् जीव शरदः'

जय स्वामिनारायण!

– पू. योगिनी बहन (पवई)
१६ अगस्त '०९

सौरभ - ७

સ્વામિશ્રીજી

પરમ પૂજ્ય યોગીબાપા ૧૯૬૪ના જૂન માસમાં **માણાવદર** પધાર્યા. સાથે દાદર મંદિરેથી બધાં સંતો પધાર્યા હતા અને વિદ્યાનગરથી જસભાઈ સાહેબ ને ભાઈઓ પધાર્યા હતા. **તા. ૧૨.૬.૬૪ના રોજ મંદિરમાં મૂર્તિપ્રતિષ્ઠા યોગીબાપાએ કરી** ત્યારે **પૂ. દાદુકાકાને પણ યોગીબાપા સાથે લાવ્યા હતા.** પ્રતિષ્ઠા થયા પછી પૂ. દાદુકાકાએ બાપાને કહ્યું કે–

બાપા, ગોંડલ 'અક્ષરદેરી' જેવી દેરી અહીં કરી આપો.

એટલે બાપાએ ઠાકોરજીના સિંહાસનની પાંચ પ્રદક્ષિણા કરી અને બોલ્યા કે–

જે સંકલ્પ ગોંડલ 'અક્ષરદેરી' સિદ્ધ કરે છે, તેવા જ સંકલ્પ આ માણાવદર દેરી પણ સિદ્ધ કરશે.

એવું બધાંની હાજરીમાં પૂ. યોગીબાપા બોલ્યા હતા. **તે દિવસથી માણાવદર મંદિરની દેરી તેવું જ કામ કરે છે.** આ પ્રમાણે **પૂ. યોગીબાપાએ અને દાદુકાકાએ** માણાવદરના સમાજ માટે અણમોલ વસ્તુ બક્ષીસમાં આપેલ છે.

આ ઉપરાંત **સોખડા મંદિર અને સંત હરિભક્તોના સમાજનું કામ** પણ **પૂ. દાદુકાકાએ કરી આપેલ છે.**

દિલ્હી મંદિર તથા ગુરૂજી મુંકુદજીવનદાસજી અને દિલ્હીના સમાજનું કામ પણ **પૂ. દાદુકાકાએ કરી આપેલ છે.** આ ઉપરાંત **અજાબ સરદારગઢના સમાજ માટે પણ પૂ. દાદુકાકાનો મોટો ફાળો છે.**

– પ.ભ. ભગવાનજીભાઈ મારડિયા (પુરાણીબાપા)

માણાવદર

[हिन्दी अनुवाद]

स्वामिश्रीजी

१९६४ के जून महीने में परम पूज्य योगीबापा **माणावदर** पधारे। साथ में दादर मंदिर से सभी संत और विद्यानगर से जशभाई साहेब एवं युवक पधारे थे। **दि. १२.६.६४ के दिन योगीबापा ने मंदिर में मूर्तिप्रतिष्ठा करी**, तब **पू. दादुकाका को भी योगीबापा साथ में लाए थे।** प्रतिष्ठा होने के बाद पू. दादुकाका ने बापा को कहा–

बापा, गोंडल 'अक्षरदेरी' जैसी देरी यहाँ कर दीजिए।

सो, बापा ने ठाकुरजी के सिहांसन की पाँच प्रदक्षिणा करीं और बोले–

जो संकल्प गोंडल 'अक्षरदेरी' सिद्ध करती है, वैसा ही संकल्प यह माणावदर देरी भी सिद्ध करेगी।

ऐसा सभी की हाज़िरी में पू. योगीबापा बोले थे। **उस दिन से माणावदर मंदिर की देरी वैसा ही काम करती है।** इस प्रकार **पू. योगीबापा और दादुकाका ने** माणावदर के समाज के लिए अनमोल चीज बख़्शिश में दी है।

इसके अतिरिक्त **सोखड़ा मंदिर और संत हरिभक्तों के समाज का काम** भी **पू. दादुकाका ने करके दिया है।**

दिल्ली मंदिर तथा गुरुजी मुकुंदजीवनदास एवं दिल्ली के समाज का काम भी **पू. दादुकाका ने करके दिया है।** इसके अलावा **अजाब, सरदारगढ़ के समाज के लिए** भी **पू. दादुकाका का बड़ा योगदान है।**

– प.भ. भगवानजीभाई मारडिया (पुराणीबापा)

माणावदर

✡✡✡

29 मार्च 2009 – प.पू. गुरुजी का 72वाँ प्राकट्योत्सव

प.पू. वशीभाई (पवई)

...गुरुजी बहुत **'क्रियेटिव'** हैं और क्रियेटीवीटी इज़ ब्लीस। कोई भी कृति देखो – सुंदर चित्र, सुंदर पुस्तक, सुंदर रचना, सुंदर आर्किटेक्चर – वो ऐसे नहीं बनता; ब्लीस से होता है।

...उनकी हर एक क्रिया, हर एक हलन-चलन, हर एक चरित्र में काकाजी कैसे राजी हों, काकाजी के लिए हम क्या कर सकें ?

मैं 'रहस्य' की एक बात करता हूँ, जो गुरुजी ने नाईन्टीन सेवन्टी वन में कार्ड के द्वारा समाज को दिया था। रहस्य बहुत गोपनीय होता है; ढूंढना पड़ता है; बहुत मुश्किल होता है। 'बॅप्स' इतनी बड़ी संस्था है। शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज ने कितनी-कितनी मेहनत की और आज तो बहुत बड़ी संस्था हो गई। 'अक्षरधाम' मंदिर यहाँ हुआ, लेकिन इसकी नींव में हैं **कृष्णजी अदा**, जिन्होंने शास्त्रीजी महाराज को बोला था –

आप ये वड़ताल का दरवाजा छोड़ दो और अक्षरपुरुषोत्तम का काम करो।

वे यूँ न कहते तो शायद इतना बड़ा क्रियेशन, इतनी बड़ी मंजिल हमको नहीं मिल पाती। हमें अक्षरपुरुषोत्तम का ज्ञान नहीं मिलता। राजकोट में शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज का पहला मिलन हुआ, तो वही कृष्णजी अदा ने योगीजी महाराज से बोला –

तुम शास्त्रीजी महाराज के साथ जाओ और अक्षरपुरुषोत्तम का काम करो।

यह रहस्य **आज किसी को मालूम नहीं कि कृष्णजी अदा ने ये कितना बड़ा काम किया है। ठीक उसी तरह कोई बोले कि बापा के बाद हम डाइरेक्ट हैं, लेकिन काकाजी और पप्पाजी के बिना हम बापा को नहीं जान सकते थे। उनके बिना हमको बापा की पहचान नहीं हो पाती; यह है 'रहस्य' और... नाईन्टीन सेवेन्टी वन में जब यह कार्ड निकाला तब से लेकर आज तक गुरुजी की अंतर की धड़कन बोलो – तीव्र अभीप्सा बोलो, वो ये है।**

आज देखो, स्वामिजी ने कितना बड़ा समैया किया। नब्बे हजार यूथ इकट्ठा किया। अभी साहेब ने लंडन में समैया किया। लंडन के मंदिर में यह सब नहीं होता, अगर हमें संस्था विमुख नहीं करती और अगर नाइन्टीन सिक्सटी सिक्स में काकाजी के साथ संत नहीं निकलते...

तो, गुरुजी की क्रियेटीवीटी को खूब-खूब धन्यवाद है। वे अपने गुरु को कभी भूले नहीं हैं – राईट फ्रॉम स्वामिनारायण मार्ग, काकाजी लेन, काकाजी और पप्पाजी की मूर्ति और लास्ट में ये 'तीन फरवरी पार्क'! तीन फरवरी पार्क में भी उनके दिल में भावना है कि कोई पूछेगा कि 'तीन फरवरी पार्क' क्या है ? काकाजी का साक्षात्कार क्या है ? तो भई, ये हमारा अक्षरपुरुषोत्तम का ज्ञान है। तुम ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म को धारण करो और अपने इस मनुष्य जन्म को सफल करो। यह बात पूरी तरह निचोड़ कर, एक कोंक्रिट फॉर्म में गुरुजी ने रखी है। तो उनकी इस क्रियेटीवीटी को जितना धन्यवाद दें, उतना कम हैं।

दूसरी, उनकी एक बहुत मार्वलस कॅरेक्टरेस्टिक है कि **'वे कॅरिंग हैं।'** छोटा नक्षु हो या बड़ों में बड़े – बरार साहब जैसे हों – सबकी वे कॅयर करते हैं। एक-एक भक्त की कॅयर करते हैं। हम विजयपालजी के वहाँ ठहरे हैं; उनकी मिसिस बोलती हैं कि गुरुजी ने मुझे बहन माना है। वो नॉर्थ इंडियन हैं, तो उत्तर प्रदेश में बहन का कौन-कौन सा त्यौहार है ? रक्षा बंधन तो होता है, पर दूसरे जो त्यौहार भाई-बहन के जो होते हैं उन्हें जान कर, उनकी फेमिली का पूरा ख्याल रखते हैं। विजयपालजी का फिफ्टीएथ बर्थ-डे था। उनको मालूम नहीं था कि गुरुजी ने सात तारीख को यहाँ फंक्शन रखा है। उनका लड़का विपिन न्यूज़ीलॅण्ड में पायलट की स्टडी करता था। तो उसे, इधर मंदिर में भी किसी को बताए बिना, आने को कह दिया कि तेरे पापा-मम्मी को सरप्राईज़ देना है और... वह जब आ रहा था, तो गुरुजी मंदिर में – 'मैं डॅन्टीस्ट के पास जा रहा हूँ' कह कर उसको एयरपोर्ट से लाने चले गए। उसके पापा-मम्मी जब सभा में आएं और उसे देखा, तो उनकी आँखों में आंसू आ गए कि अगर मेरा सगा भाई होता, तो वह भी मेरे लिए इतना नहीं करता, जितना गुरुजी ने एक 'भाई' के नाते किया। स्पीरीच्युअली तो है ही कि वे सबको आगे लेते हैं, भजन कराते हैं, धुन कराते हैं; बट एज़ ए ह्यूमन बीइंग इतना करना वो गुरुजी की सेवा, परम सेवा जो हम बोलते हैं – भक्तों की सेवा, उसकी एक चरम सीमा है।

उनकी **एक और आउटस्टेंडिंग कॅरेक्टरेस्टिक है – निर्दंभता।** इसको अभी हम बोलते हैं **'ट्रान्सपॅरन्सी'**। कॉर्पोरेट वर्ल्ड में धी मेईन प्रिन्सीपल इज़ 'ट्रान्सपॅरन्सी'। ट्रान्सपॅरन्सी इज़ी है, जब हम थोड़े होते हैं, अपना बहुत समाज नहीं होता है, अपना घर-घर का कारोबार होता है; बट वेन यु आर डीलिंग विथ सो मेनी पीपल, व्हॅन यु आर डीलिंग विथ डिग्नीटरीज़, एट धेट टाईम टु कीप **'ट्रान्सपॅरन्सी' इज़ मोस्ट डिफिकल्ट।** पर गुरुजी को देखो। वे फोन पर बातचीत करते हुए साथ में कोई भी बैठा हो, चाहे निजी बैठा हो – नया बैठा हो, ही विल टॉक। आज सुबह की बात है – उनका जन्म दिन है, उसकी सभा है, पर उन्होंने कहा आई एम नॉट फीलिंग वॅल, आई विल टेक रेस्ट। कोई शॉ-ऑफ नहीं है। जीवन जो बाहर है, वो अंदर है; जो अंदर है, वो बाहर है।

चौथी – **उन्होंने पूरे समाज में डेवलप की है – 'लीविंगनेस'।** कोई भी वस्तु प्रगट होती है, लेकिन लीविंगनेस होनी चाहिए। यहाँ तो चलो दिल्ली में उन्होंने सब रखा है, मानो कर सकते हैं। बट बड़ौदा जाते हैं, काशीराम भाई को मालूम है कि सूरत जाते हैं, मुंबई आते हैं, तो वहाँ भी कोई भक्त आए, तो उसको किसी भी तरीके से राजी-राजी कर लेते हैं। उसको लाईव कर देना, उसकी मुश्किलें सॉल्व कर देना। यूँ वो जहाँ जाते हैं, वहाँ वातावरण को लीविंग कर देते हैं, जाग्रत कर देते हैं, यह उनकी बहुत बड़ी आउटस्टेंडिंग क्वॉलिटी है।

उनकी **परफॅक्टनेस** तो अभी अभिषेक में भी आ गई। अभिषेक मुझे अभी एक फोन नंबर लिखवाता था, तो वो फिर-से रिपीट करता है कि हेव आई टेकन धी करेक्ट नम्बर। ये तो एक छोटा-सा एग्ज़ाम्पल है। पर, हम सबको विदित है कि लंडन से पप्पाजी के जो भक्त आए थे और हॉस्पिटल में जो उनका हादसा हुआ, तब गुरुजी ने जिस परफेक्टनेस से उनकी सेवा करी – जिस भाव से सेवा करी – मानो पप्पाजी के भाव से सेवा करी, तो पप्पाजी भी राजी हो गए।

आख़िर में – **उनकी दूसरी आउटस्टेन्डिंग कॅरेक्टरेस्टिक यह है कि हर एक बात पर भगवान का बल लेना।** गुरुजी के जीवन में यह सहज दिखाई पड़ता है। **छोटा या बड़ा प्रसंग हो, कुछ भी हो भगवान**

का बल लो - धुन का बल लो। अभी सात मार्च को काकाजी के समाधि स्थान पर अखंड परिक्रमा का नया कार्यक्रम रखा था। सबको ऐसा लगा कि यहाँ लीविंगनेस है – 'प्रगट' हैं। ऐसा हुआ करे कि चलो – परिक्रमा करने चलो। परिक्रमा के लिए पंजाब से कइयों के दिल खींचे जा रहे थे कि – 'चलो परिक्रमा करने'।

तो, ऐसे हर एक प्रसंग द्वारा गुरुजी ने महाराज और स्वामी की, शास्त्रीजी महाराज, योगीबापा, काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी और स्वामिनारायण संप्रदाय की उत्तर भारत में बहुत बड़ी सेवा करी है। गुणातीत समाज गुरुजी की इस सेवा की बदौलत उनका ऋणी रहेगा और हम इस रूट को ध्यान में रखें कि गुरुजी की जो भावना है – संप, सुहृद्‌भाव, एकता की और दिव्य कुटुंबभावना की – वैसे हम सब हिल-मिलकर रहें। जब संत लोग (गुजरात – मुंबई) आते हैं, तब वे बहुत खुश होते हैं कि हमारे सगे आए हैं। ऐसी आत्मबुद्धि और प्रीति – जो उनका संदेश है, हम अपने जीवन में वो दिव्य कुटुंबभावना आत्मसात् कर सकें – ऐसा बल, बुद्धि, प्रेरणा दें, यही प्रार्थना।

प.भ. काशीरामभाई राणा साहेब (सूरत)

...आज प.पू. गुरुजी हमारे बीच में उपस्थित हैं, ये हमारी सद्‌नसीबी है; क्योंकि समाज में से अच्छे से अच्छे गुरु को ढूंढना और वो भी ऐसे! वर्ना, कोई बहुत बड़ा आदमी - बहुत बड़ा धर्मगुरु, बहुत बड़ा संत या महंत होता है; परंतु एक सामान्य संत-सामान्य गुरु, लेकिन उसकी **सामान्यता में भी असामान्यता हो, ऐसे हमारे गुरुजी हैं...** हम उनको गुरु मानते हैं, वो (अपना) गुरु काकाजी को मानते हैं, पप्पाजी को मानते हैं, योगीबापा और शास्त्री महाराज को (मानते हैं)। तो, ये **सभी शक्तियाँ और संस्कार इकट्‌ठे होकर जो एक बड़ा तेजपुंज बनाते हैं, वो आज गुरुजी के स्वरूप में हमारे बीच उपस्थित है...** आपने भी और मैंने भी कम से कम पप्पाजी को तो देखा है, उनसे बात भी करी है और उनकी बात भी सुनी है। लेकिन **अगर किसी ने काकाजी – पप्पाजी को नहीं देखा, पर अगर हमारे गुरुजी का दर्शन हो गया, तो काकाजी, पप्पाजी का मिलन हो गया!**

...हर एक अवतारी पुरुष जो होते हैं, वो अपने पीछे कोई न कोई ऐसे अवतारी पुरुष दे जाते हैं जो कि इस सृष्टि को सही मार्गदर्शन - सही दिशा देते रहें। वैसे हमारे गुरुजी हमारे बीच उपस्थित हैं और जैसे मैंने कहा – सामान्यतः गुरुजी को अगर कोई नया हरिभक्त आकर के देखे, तो हम कहेंगे – *देखो हमारे गुरुजी हैं।* वो कहता है – *अच्छा!* क्योंकि समाज में एक ऐसी इम्प्रेशन हो गई है कि **कोई संत हो या कोई महंत हो; पहले तो उनके पास पहुँचना ही कठिन, उनका उपदेश सुनना अलग बात है। अगर वहाँ पहुँचे, तो** वहाँ जो माहौल बनता है, आने वाले को **उसमें धर्म नहीं दिखता; आने वालों को उसमें गुरुजी नहीं दिखते; आने वाले को बदबू मिलती है कि यहाँ तो पैसे का बोलबाला है। उसे धर्म नहीं दिखता; गुरुजी नहीं दिखता; कोई अवतरित पुरुष नहीं दिखता।**

लेकिन यहाँ गुरुजी के पास आए तो मानो मेरे पप्पा नहीं हैं, तो मेरे पप्पा जैसे! मैं तो यहाँ तक कहूँ कि मेरी मम्मी नहीं है, तो गुरुजी मम्मी भी बन जाते हैं। ऐसा सामान्य, फिर भी अगर किसी को असामान्य स्वरूप देखना है, तो प.पू. गुरुजी में वही स्वरूप है।

गुरुजी मेरे घर पर पधारे थे, सब हरिभक्तों को लेकर और मुझे कहा कि आप मंदिर में आइए। तब मैं टेक्सटाईल मंत्री था। जब मैं पहली बार यहाँ पर आया और गुरुजी से मिला, सब हरिभक्तों से मिला, पू. दीदी से मिला, तो मैंने देखा कि यहाँ तो जैसे अपना घर है, ऐसा ये मंदिर भी घर जैसा है। कई साधु पुरुष हमें कहते हैं – *भैया, घर को मन्दिर बनाओ।* मंदिर यानि – राम और सीताजी जैसा घर में व्यवहार चले, राम और लक्ष्मण जैसा भाई-भाई का व्यवहार हो, ऐसा ही बहुओं का व्यवहार हो, कौशल्या माता और राम का व्यवहार हो। यूँ सब हमें उपदेश देते हैं, लेकिन जब वे यह कहते हैं, तब हमें उनसे ऐसी प्रेरणा नहीं मिलती, ऐसी अनुभूति नहीं होती, ऐसा हमें एहसास नहीं होता कि हम हमारे घर को मंदिर कैसे बनाएं? **अगर एक बार भी कोई हरिभक्त, कोई भी आत्मीयजन, कोई भी नया व्यक्ति यहाँ आकर गुरुजी के साथ बैठे, तो उसको लगेगा कि रियली ये मंदिर भी है और घर भी है।**

इस पृथ्वी पर आपको बहुत कम ऐसे संत मिलेंगे – ऐसे गुरु मिलेंगे – जो धर्मोपदेश भी करें, साथ में खाना भी खाए... जैसे अभी वशी साहेब ने बताया न – बिल्कुल पारदर्शिता! अगर कहीं से भी कोई सीख मिलती है, कहीं से भी कोई संस्कार मिलता है, तो वहीं से लेकर अपने आत्मीयजन – अपने हरिभक्तों के पास पहुँचाएंगे। **क्या कभी ऐसा गुरु – ऐसा संत हमने कहीं देखा है?** अपने जीवन व्यवहार द्वारा प्रत्येक कार्य में हमें वे प्रेरित करते हैं कि ऐसे करते रहो और वो भी अपने आप ऐसे करके दिखाते हैं...

इससे अधिक वे एक ऐसे स्वरूप हैं कि **'नर में से नारायण'** होते हैं। कोई ऊपर से तो आ नहीं जाते; हमारी धर्म पुस्तक भी कहती है 'अहं ब्रह्मास्मि' – मैं ब्रह्म हूँ। अगर मैं 'ब्रह्म' बनने की समर्थता पाता हूँ, तो मैं ही ब्रह्म हूँ। **गुरुजी सीधे-सादे जीवन कार्य से अपने आपको कैसे 'अहं ब्रह्मास्मि' करना, वो साकार कर देते हैं...** आज हम जब गुरुजी को देखते हैं, तो हमें लगता है कि हम ऐसे 'सिद्ध पुरुष' को मिले है। **चाहे दुनिया न माने, लेकिन हमें तो ऐसी अनुभूति होती है कि ये एक 'सिद्ध पुरुष' हैं।** 'ब्रह्म' जैसे एक अवतरित पुरुष हैं...

...अगर गुरुजी के साथ रह कर उसमें से एक अंश भी मेरे में आ जाता है, तो मैं भी अपना जीवन ऐसे ही बिताऊँ, जैसे गुरुजी अभी बिता रहे हैं। आज ऐसे आनंद महोत्सव के माहौल में जब हम प.पू. गुरुजी का प्राकट्य महोत्सव मना रहे हैं, तब हमारे अंतर में बहुत-बहुत ऐसी शुभकामना हैं। लेकिन वो शब्दों के रूप में नहीं निकल पाती। हम गुरुजी के साथ रहना चाहते हैं और जिस प्रकार से गुरुजी का जीवन बना है, उसी प्रकार का हमारा भी बनाएं...

..जब भी मैं आता हूँ, तो सबसे विशेष यह देखता हूँ कि छोटा बच्चा नक्षु के साथ भी गुरुजी कितना प्यार करते हैं। जैसे माँ यशोदा हो, अपने बाल कृष्ण के साथ कैसी लीला करतीं थीं। वैसे उसके साथ रहते हैं या हमारे मल्कानी साहब हों, तो उनके साथ ऐसा या हमारे हरिभाई साहेब उनके साथ वैसी चर्चा! **'जिसके साथ बैठें, ऐसा हो जाना'** – ये भगवान श्री कृष्ण का संदेश उन्होंने जीवन में सिर्फ डाइजेस्ट किया ऐसा नहीं, समाज के सामने उसका एक्सपोज़र भी करते हैं। यूँ सबके साथ प्यार ही प्यार बांटते हैं – जो इनके करीब आए हैं। प.पू. गुरुजी के करीब जो हैं, उनको तो ऐसा लगता है कि ये मेरा सर्वस्व हैं; उनके चरण में सब कुछ मैंने समर्पित कर दिया; फिर दुनिया में हमें कोई जरूरत नहीं रहती, वे ही संभालेंगे।

ऐसी पवित्र आत्मा मनुष्य में भी देवेश्वर होता है। हमारे में भी भगवान ने बहुत कुछ दिया है। इसका

साक्षात्कार कराने के लिए गुरुजी का जीवन है। गुरुजी का जीवन हमारे लिए ये ही संदेश लेकर आता है कि आने वाले समय में हमें भी गुरुजी बनना है। गुरुजी का बहत्तरवाँ जन्म दिन है; अमृत प्रागट्य महोत्सव भी मनाने वाले हैं... तो, मैं तो यही कहूँगा कि गुरुजी को समझ कर, हम उनके जैसा बनने की कोशिश करेंगे-समाज के लिए संकल्प करके चलेंगे, तो अमृत प्रागट्य महोत्सव में हमें बहुत अधिक आनंद आएगा...

हम जैसे आते रहते हैं, गुरुजी का इतना अधिक प्रेम मिलता रहता है। दुनिया में जो सुख है, वो क्षुल्लक लगता है; यानि – सही सुख यहाँ पर है। उसे देखने की दृष्टि चाहिए, उनके शब्द पकड़ने की शक्ति चाहिए... गुरुजी आपको मैं तो क्या कह सकूँ? लेकिन आप ये समाज के बीच तंदुरस्त – दीर्घायु जीवन से हमें हमेशा मार्गदर्शन करते रहें...

पू. पियुषभाई (सूरत)

गुरुजी का आज बहत्तरवाँ प्राकट्य दिन! काशीरामभाई ने एक बहुत अच्छी बात करी कि **जिसने काकाजी और पप्पाजी के दर्शन न किए हों, वह गुरुजी के दर्शन करे, तो उसमें सब आ गया।**

हमारे गुणातीत समाज की नींव का स्थान ताड़देव – जहाँ से काकाजी, पप्पाजी और बा ने आध्यात्मिकता की सारी शुरुआत करी। योगीजी महाराज की रुचि, रहस्य और अभिप्राय के मुताबिक सारा एक उठाव लिया। दुनिया और धर्म के रीति – रिवाज से एकदम अलग कि संबंध वाले का माहात्म्य समझ कर चलना। यह बात काकाजी, पप्पाजी और बा ने अपने संपूर्ण वर्तन से समाज में रखी और उन्हीं काकाजी, पप्पाजी और बा के वारिसदार ने यहाँ एग्ज़ेक्ट रखी है, जो खूब पसंद आती है; वो है '**कुटुंबभाव**'। गुरुजी स्टेज पर बैठे हों, तब भी कुटुंबभाव, मंदिर में बाहर शॅड में सोफे पर बैठे हों, तो भी कुटुंबभाव...

दो वर्ष पहले पप्पाजी की मूर्ति की प्रतिष्ठा करी, तब सभा में सभी मुक्तों को कोल्ड कॉफी पिलाई, वो माहात्म्य दुनिया के किसी संप्रदाय में हम नहीं देख सकते। यहाँ गुरुजी ने ऐसी बात को जीवंत रखा है। बा के सान्निध्य में हम बैठते थे, वैसा ही भाव गुरुजी में सहज दिखाई देता है। **काकाजी के पास बैठते, पप्पाजी के पास बैठते, पप्पाजी की जो सहजता – वो बात गुरुजी के जीवन में सांगोपांग देखने को मिलती है।** उनकी एक-एक क्रिया में भक्तों के प्रति भाव है, संबंध की महिमा है, **उनमें कोई आध्यात्मिकता की बड़ी-बड़ी बातें नहीं हैं। पर, उनका वर्तन सहज है कि ये मेरे कुटुंब का सदस्य है।**

पिछली बार जब हम यहाँ आए और प्राकट्य पर्व की पूर्व संध्या पर सभा चल रही थी। पू. मल्कानी अंकल थोड़ी देर से आए। मल्कानी अंकल का भोजन करना बाकी होगा, सो गुरुजी ने सभा में उनके सोफे के पास एक टेबल रखवाई। फिर भोजन की थाली मंगवा कर उन्हें भोजन करवाया। **ऐसा हमारे गुणातीत समाज के सिवा कहीं संभव नहीं।** स्टेज के ऊपर तो कहीं भी ऐसी चीज देखने को नहीं मिलेगी, जो चीज गुरुजी में हमें सहज देखने को मिलती है।

तो, और कुछ तो बात करनी नहीं, पर गुरुजी आप हम पर ऐसी कृपा करो कि जो काकाजी, पप्पाजी और बा का संकल्प और माहात्म्य – उसमें हम सब जुड़ जाएं। वो संबंध की महिमा हमें निरंतर समझ आए, हमारे

विचार, वाणी और वर्तन में वह प्रकटे और आप सभी गुणातीत स्वरूप हम पर राजी हों, ऐसा हमारे सभी साधकों का विचार, वाणी और वर्तन बने – ऐसी आपके चरणों में प्रार्थना!

प.भ. बरार साहेब (जगरांव)

...आज हम उस महापुरुष का जन्मदिन मना रहे हैं, मैं समझता हूँ कि **जिस भी इंसान ने गुरुजी महाराज को जो विनती कर ली, सब की करी हुई प्रार्थना आज तक सच हुई है।** जो भी गुरुजी अपने मुखारविंद से प्रवचन करते हैं, मैं समझता हूँ कि कोई भी ऐसा इंसान नहीं जिसे उससे खुशियाँ नहीं मिलती हों। हम पॉलिटिकल लोग सभी संतों को जानते हैं, हर एक को मत्था टेकते हैं। मैं सारी संगत को विनती करना चाहता हूँ कि एक तो हमारे वहाँ बाबा आनंदसिंहजी – जगरांव के पास हैं। उन्होंने सारी दुनिया को मार्गदर्शन दिया। दूसरे हमारे गुरुजी जिनकी छत्रछाया में हम विराजमान हैं, उन्होंने हम सभी को मार्गदर्शन दिया।

जब भी हम गुरुजी के दर्शन करने आते हैं - मिलते हैं, कोई भी समय क्यों न हो गुरुजी हमें खुश मिलते हैं। तुम्हें – हमें देख कर गुरुजी की खुशी और बढ़ जाती है कि ये आए हैं, तो आज प्यार से खाना खाएंगे, आज प्यार से बातें करेंगे और प्यार से बैठेंगे। ऐसे गुरुजी – बहुत बड़ी शख्सीयत समझ लो। गुरुजी का बहुत बड़ा मान समझ लो। मैं जब भी गुरुजी को मिलता हूँ, तो उनके साथ बैठ कर बहुत मन खुश होता है। जो प्रार्थना गुरुजी महाराज के चरणों में करते हैं – परमात्मा और गुरुजी की कृपा है – वो सारी प्रार्थनाएँ पूरी हो जाती हैं।

हमारे पंजाब में गुरुजी जहाँ भी लुधियाना, जगरांव, मोगा जाते हैं; तो उनके आने की खुशी पंजाब में इतनी होती है कि पूरी संगत अपना कारोबार छोड़ कर गुरुजी के पीछे अपनी गाड़ियाँ लगा लेते हैं और जितने दिन गुरुजी वहाँ होते हैं, उतने दिन उनके साथ ही साथ रहते हैं। शाम को प्यार से गुरुजी के सान्निध्य में सत्संग करते हैं। गुरुजी का प्यार लेकर वापिस अपने घर जाते हैं, इतनी खुशी गुरुजी के पास से मिलती है।

आज के दिन किन शब्दों में मैं गुरुजी का धन्यवाद करूँ और परमात्मा – सच्चे बादशाह से यही विनती करता हूँ कि गुरुजी को कोई दुःख न हो, कोई तकलीफ न आए, बहुत लंबी उम्र हो; क्योंकि इनके जीवन और प्यार से सारी संगत को इतना प्यार मिलता है, जितना प्यार अपने माँ-बाप से मिलता है। हम उनके चरणों में बैठ कर उनके दर्शन करते रहें। इतनी विनती के साथ गुरुजी को उनके जन्मदिन पर बहुत-बहुत मुबारकबाद और सब बोलें – **वाहे गुरुजी दा खालसा, वाहे गुरुजी दी फतेह!**

श्री दिनकरभाई जोशी (मुंबई)

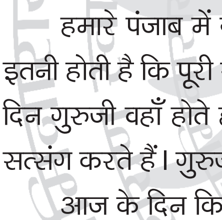

...मैं यहाँ कुछ कहने के लिए नहीं आया हूँ। मात्र मौन अवस्था में गुरुजी को प्रणाम करने और आशीर्वाद लेने आया हूँ। उसका कारण यह है कि मैं मुंबई से दिल्ली पिछले पाँच-छः साल से आता हूँ। हर साल प्रगति मैदान में जब बुक फॅयर होता है, तब आता हूँ और दो-चार घंटे के लिए प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में बैठने आता हूँ-प्रणाम करने आता हूँ; क्योंकि मुझे **दिल्ली में एक 'तीर्थस्वरूप' और 'तीर्थधाम' इस जगह दिखाई दिया।** पिछले साठ साल से हम दिल्ली में देखते हैं कि एक इंच जगह भी तीर्थधाम रही नहीं है। **यह जगह 'तीर्थधाम' रही है, उसका कारण है 'तीर्थस्वरूप' गुरुजी!** महाभारत में अरण्यपर्व में युधिष्ठर

वन में घूम रहा होता है, तब धौम्य्र ऋषि, लोमस ऋषि, मार्कण्डेय ऋषि – सभी तीर्थों का वर्णन करता है। कैसे-कैसे तीर्थ होते हैं, कहाँ-कहाँ जाना है, कैसे स्नान करता है, कैसे दान करना, कैसे यज्ञ करना, ये सब सीखता है-करता है। तब युधिष्ठर कहता है कि यदि मैं इन सभी तीर्थधामों में नहीं जा सकूँ, तो मुझे क्या करना ? तब उसे जवाब मिलता है कि **जो तीर्थधाम में नहीं जा सके, तो तीर्थस्वरूप जो पुरुष हो, उनके दर्शन करना – तीर्थधाम का संकल्प करना और उनके आशीर्वाद लेना।** तो, मैं यहाँ इसलिए आता हूँ।

ट्रांस्परन्सी की बात दो-तीन वक्ताओं ने यहाँ करी। बहुत मजे की बात है, मैं वही बात दोहराना चाहता हूँ। ट्रांस्परन्सी-पारदर्शिता ! सच में तो तैतरिय उपनिषद् में, जहाँ तक मैं भूला नहीं हूँ , शांत मंत्र में – 'मेरा मन और मेरी वाणी दोनों एक रूप हों' – ऐसी मंत्र के उद्‌गाथाओं ने परमात्मा के पास प्रार्थना करी है। मन और वाणी एकरूप हो – यही है पारदर्शिता ! मैं इस तीर्थधाम के बारे में कुछ जानता नहीं था। पाँच-छः वर्ष पहले मेरे घर पर यहाँ से फोन आया कि गुरुजी आपसे बात करना चाहते हैं। मैंने बड़ी सहजता से पूछा – कहाँ से बोलते हो और कौन गुरुजी ? फिर गुरुजी ने मुझ से बात करी और उन्होंने जो बात करी, उसमें कहाँ पारदर्शिता है, वो बात करता हूँ। मैं छः साल से हर वर्ष क्यों यहाँ आता हूँ – उसकी बात करता हूँ। उन्होंने मुझे कहा – कृष्ण के जीवन पर लिखी हुई, कृष्ण के शरीर छोड़ देने के बाद की बात पर आधारित मेरी एक नवलकथा '**श्याम एक वार आवोने आंगणे...**' वो उन्होंने पढ़ी है और उन्होंने फोन पर मुझे आगे यह कहा– उनके गुरुजी यानि – काकाजी ने जब शरीर छोड़ा, तब उनके मन में जो आघात लगा था, चित्त में जो थोड़ा असंतुलन पैदा हुआ था, यह नवलकथा पढ़ने के बाद वह हल्का हो गया। मेरे जैसे सामान्य लेखक को गुरुजी ऐसा कहें, यह बहुत बड़ी बात है ! **हम मन में मानेंगे, लेकिन दूसरों को कह नहीं पाएंगे। अंदर से पिघल जाना, यह कोई आसान बात नहीं**; जबकि उन्होंने अंदर से पिघल जाने की बात मेरे जैसे सामान्य लेखक को करी ! इसी वजह से मैं यहाँ आया कि उनके दर्शन करें और हर साल यहाँ आता हूँ।

वे ७२ वर्ष में पदार्पण कर रहे हैं। ७२ उनकी शारीरिक आयु है। आयुष्य दो प्रकार से मापी जाती है। शारीरिक आयु और मानसिक आयु। ७२ वर्ष शारीरिक आयु, पर मुझे लगता है कि (७+२= ९) ९ का आंकड़ा हमारे यहाँ बहुत महत्त्व का है। ९ का आंकड़ा मॅथमॅटिक्स में तो है, पर अध्यात्म में ९ के आंकड़े का बहुत महत्त्व है। ७२ को (७+२= ९) पलटाओ तो २७। उनकी मानसिक आयु २७ वर्ष के जवान की है। **इसलिए उन्हें २७ वर्ष पूरे हुए हैं और आगे अभी ७३ पूरा करें।** तो, शताब्दी कही जाए। तो अन्य ७३ जब उनके पूरे हों,तब मानसिक आयु की शताब्दी होगी और उस समय बड़ा प्राकट्‌योत्सव यहाँ हो और हम सब उसमें हाजिर रहें, ऐसे हमें आशीर्वाद दें – ऐसी मैं प्रार्थना करता हूँ...

श्री सुरेश रामवर्णजी (मॉरीश्यस)

...मैं यहाँ अपने मित्र परमानन्द रामलखन, मातृभूमि भारत के कुरुक्षेत्र के डॉ. मिश्राजी और माथुरजी के साथ आया हूँ और मुझे गुरुजी के इस प्राकट्‌य उत्सव में खूब खुशी हो रही है, जो इस अवसर पर मॉरीश्यस की जनता की ओर से मुझे आना मिला। मॉरीश्यस में भी अक्षरपुरुषोत्तम मंदिर है और वहाँ पर भी इसी तरह से सत्संग होते हैं। मॉरीश्यस की ओर से मैं गुरुजी को हार्दिक बधाई देता हूँ और हमारी यही इच्छा है कि ऐसे संत, ऐसे गुरुजन, ऐसे महापुरुष समाज की भलाई के लिए, मानव की भलाई के

लिए, दुनिया की भलाई के लिए हमें अच्छे मार्ग पर चलने के लिए शिक्षा प्रदान करें; ताकि हमारे समाज में आज के इस जीवन में अच्छा परिवार हो, अच्छे बच्चे हो, अच्छा कुटुंब हो और फिर जब परिवार ठीक रहेगा, समाज ठीक रहेगा, तो राष्ट्र ठीक होगा और दुनिया एक बेहतर दुनिया बनेगी। बहुत-बहुत धन्यवाद।

प.भ. पाण्डेजी (बनारस)

...गुरुजी से मेरा सान्निध्य लगभग एक वर्ष पूर्व अचानक काशी में हुआ। उनकी कृपा हुई मेरे ऊपर और उन्होंने सहज मुझे बुला करके अपने आनंद की, अपने स्नेह की, अपने रस की वर्षा हमारे ऊपर की। आप सबसे उनके बारे में, उनके व्यक्तित्व की विशालता के बारे में, उनकी स्वभाविक स्नेह वर्षा के बारे में, उनके प्रेम के बारे में, उनके आकर्षण के बारे में, उनके आशीर्वाद के बारे में और उनके पुण्य लाभ करने के बारे में मैंने अनेक वार्ताएं सुनी। इस बारे में मैं केवल यही कह सकता हूँ कि हमारी परंपरा में गुरु का स्थान बहुत ही ऊँचा है और स्वयं भगवान विष्णु या उनके और सारे स्वरूप, हमारी परंपरा के अनेक महान संत, ईश्वर, अवतार ये सब जो हुए, इन सबने गुरु की बहुत बड़ी महिमा का बखान किया है और कहा है कि बिना गुरु के आपको सही मार्गदर्शन नहीं मिल सकता। चाहे वो पूर्ववर्ती काल रहा हो, चाहे हमारा प्राचीन साहित्य हो, वैदिक साहित्य से लेकर आज तक के मध्यकाल के रहीम रहे हों, इन्होंने कहा कि–

गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काको लागूं पांय?

यानि उन्होंने यहाँ तक कहा कि जहाँ गुरू और गोविन्द दोनों खड़े हों, मुझे अपने मन में दुविधा है कि मैं किसको सबसे पहले प्रणाम करूँ और उन्होंने आगे कहा कि–

बलिहारी गुरु आपने जिन गोविन्द दियो दिखाय।

जिसने गोविन्द के दर्शन कराए वही गुरु महान है और हमें उसी को प्रणाम सबसे पहले करना है, क्योंकि वही हमको मुक्ति के द्वार की ओर ले जाएगा। हमारी परंपरा में, हमारे धर्म में जो कुछ भी उपदेश दिए गए – सबने एक महान परिवार 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की बात की। सबने ये कहा कि-सारा संसार अपना है, सब में उसी ईश्वर का वास है, जिसकी हम सब संतान हैं। एक चेतना है और सब में समान रूप से व्याप्त है। आप अच्छा करते हैं या बुरा करते हैं, ये अब आप के ऊपर निर्भर करता है और उसी अच्छाई और बुराई के आधार पर आपके कर्मों का निर्धारण होगा। आपको उसके फल मिलेंगे और भगवान की उसी के अनुरूप कृपा होगी। लेकिन **अगर आप के ऊपर गुरू की कृपा होगी तो आप इस समस्त चराचर जगत में जो कुछ गलत है, उससे अपने आप छुटकारा पा लेंगे और सद्गति को प्राप्त होंगे।** गुरू की यही महिमा है।

गुरुदेव, ये कलियुग है, ऐसा लोग कहते हैं। लेकिन आज चारों तरफ अशांति, लोगों में दुःख का भाव एवं सही मार्ग न पहचान पाना - इन सब के कारण लोग बहुत व्यथित हैं और ऐसे में आपका आगमन, आपका सहज स्नेह, मार्गदर्शन और प्रेम है, वो एक अद्भुत अवतार की श्रेणी में, गुरुदेव, आपको ले आता है। मैंने एक वर्ष में जो कुछ आपके सान्निध्य में रह कर देखा – सीखा कि –

एक तरफ तो आप परंपराओं का निर्वाह बखूबी करते हैं या उनको आपने एक बड़ी व्यापक परिधि में बांध रखा है, उसके साथ-साथ आप में प्रगतिशीलता का अद्भुत समन्वय है, गुरुदेव।

द्रौपदी के बारे मैंने आपसे एक बार चर्चा की और नारी की प्रगतिशीलता के तथ्य को लेकर के जो आज की नई सार्थक बहस है, उसकी तरफ जब आपका ध्यान आकर्षित किया, तो जिस उत्सुकतापूर्वक आपने उस पर अपने विचार व्यक्त किए और हमसे कहा कि आगे मैं इस पर आपसे और चर्चा करूँगा, उससे मुझे आपके उस दिव्य **विचारों** में विभूति के दर्शन हुए, **जिसमें परंपरा और प्रगतिशीलता का अद्‌भुत समन्वय है** और मैं समझता हूँ कि बहत्तर ही नहीं, बल्कि सात सौ बीस वर्ष तक आप हमारे बीच में रहेंगे और सदैव इसी तरह सत्कर्म की ओर, सद्‌भाव की तरफ, सद्‌गुणों की तरफ ले जाने के लिए हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे और हम बार-बार आपके सान्निध्य में आकर धन्य होते रहेंगे। गुरुदेव, मैं आपको पुनः बारंबार प्रणाम करता हूँ और उम्मीद लगाता हूँ कि आप हम सबकी रक्षा करेंगे। गुरुदेव, एक बार पुनः प्रणाम।

पू. विज्ञानस्वामी (कंथारिया)

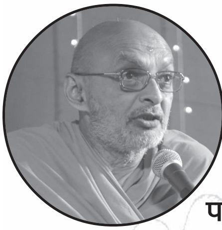

यहाँ गुरुजी के बारे में बहुत-बहुत हम सुन रहे हैं, सुनेंगे और अनुभव भी करेंगे। कई-कई लोगों को तरह-तरह का अनुभव गुरुजी से मिला है... स्वामिनारायण भगवान प्रगटे और बाद में पृथ्वी पर शास्त्रीजी महाराज-योगीजी महाराज को छोड़े, जिनके अंदर उनकी शक्ति पूरे की पूरी काम कर रही थी। उस योगीजी महाराज ने **काकाजी, पप्पाजी, बा** जैसे स्वरूपों को तैयार किया जिन्होंने ये **'गुणातीत समाज'** की स्थापना की। अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना के लिए शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज को हम याद कर रहे हैं, ऐसे ही काकाजी – पप्पाजी को अपन भूल नहीं सकते हैं, क्योंकि उन्होंने 'मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम की जय' बुलाई। वो **काकाजी** और **पप्पाजी** जब नौ और ग्यारह साल के थे, तब उन्होंने कहा था कि **'अक्षरधाम'** पृथ्वी पर उतारेंगे। छोटे-छोटे लड़के, वो क्या सोच पाएंगे कि क्या 'अक्षरधाम' है? क्या पृथ्वी पर लाना? मगर वो उन्होंने करके दिखाया। 'अक्षरधाम' की उनकी जो कल्पना थी, वो उनके लिए नहीं थी। सही बात ऐसी है कि अक्षरधाम कितना दूर है? तो, लाख टन-लाख मन वजन का लोहे का गोला अक्षरधाम से छोड़ें और पृथ्वी पर पहुँचे, तो वो रज बन जाता है – धूल बन जाता है, केवल हवा के फ्रीक्शन से। इतनी दूर 'अक्षरधाम' है। **वो 'अक्षरधाम' का दर्शन काकाजी को योगीजी महाराज ने करवाया।**

वो काकाजी के परम कृपा पात्र गुरुजी हमें मिले हैं। वो काकाजी महाराज ने इनको ऐसा घड़ा है, योगीजी महाराज ने इनका ऐसा सीलॅक्शन किया है कि हम भूल नहीं पाएंगे। आज ये गुरुजी का मॅन्युफॅक्चरींग जिन पुरुषों ने किया है, उन्हें हम भूल नहीं सकते। उन्होंने जो हमें भेंट दी है, जो सारी बातें हमें गुरुजी के बारे में यहाँ बताई गई, वो सब काकाजी, योगीजी महाराज, स्वामिनारायण भगवान इन सबकी उन पर कृपा हुई है। यह हमें यही बताता है कि स्वामिनारायण भगवान प्रगट हैं। जो सुख भगवान स्वामिनारायण ने सबको दिया था – न कोई नात, न कोई जात, कुछ देखे बिना उन्होंने सबको सुख दिया था, वैसा ही – उसमें से तिलभर भी कम नहीं, गुरुजी आज सारे समाज को दे रहे हैं। वो हम देखते भी हैं और महसूस भी करते हैं। पर, गुरुजी हमारे बीच में, हम जैसे होकर रहते हैं, इसलिए हम उनकी गहराई सही ढंग से नाप नहीं सकते। हमारे जीवन में उसकी थोड़ी भी समझदारी आए, तो आगे जो बोला कि 'काकाजी की शान हम बन जाएं' – ऐसे ही हमारा जीवन पलटा जाए।

एक बार एक शिल्पी ने मूर्ति बनाई। वो मूर्ति के नाक पर मामूली-सी लकीर थी। तो, शिल्पी को सेठ ने

बोला कि दूसरी मूर्ति बनाओ। उसने बनाना तो शुरू किया, मगर कई ऐसे भी मिल गए जिन्होंने शिल्पी को कहा कि क्यों दूसरी मूर्ति बनाते हो? इस मूर्ति में कोई कमी तो है नहीं। सो, जब सेठ आया तो शिल्पी ने भी सेठ को बताया कि भई! क्यों आप मुझसे इतनी मेहनत कराते हो? पर शिल्पी को सेठ ने कहा–भई, मुझे तो दूसरी मूर्ति बना के दो–बस, दूसरा कुछ मैं नहीं समझता। दोबारा जब सेठ आया तो शिल्पी ने फिर से उनको पूछा–भई! क्यों तुम मुझसे मेहनत कराते हो? तब उन्होंने बताया कि ये जो मूर्ति बनी हुई है, उसकी नाक पर थोड़ा-सा स्क्रॅच है, लकीर है। सुन कर शिल्पी ने उनको पूछा कि भाई साहब, ये मूर्ति आप कहाँ लगाने वाले हो? तो सेठ ने कहा कि दस फुट ऊपर लगने वाली है। जब दस फुट ऊपर लगने वाली है, तो नीचे कोई स्क्रॅच को देख ही नहीं पाएगा। कोई भी-कितना अच्छा शिल्पी हो, वो भी ढूँढ नहीं सकेगा कि उसके अंदर स्क्रॅच है; क्यों मेहनत कराते हो? ऐसे ये गुरुजी हमारे अंदर इतनी-सी कमी रहने नहीं देंगे। 'अक्षरधाम' को इधर पृथ्वी पर उतारने वाले गुरुजी हमें मिले हैं।

काकाजी-पप्पाजी बोलते थे कि ***'स्वर्ग पृथ्वी पर उतारना है।'*** आज हम देख सकते हैं कि कैसा समाज तैयार हो गया है! वो योजना काकाजी-पप्पाजी की है। ऐसे गुरुजी हमें मिले हैं, जो आपके अंदर ज़रा-भी कसर नहीं रहने देंगे और जब तक हम पूरे के पूरे अक्षरधाम रूप नहीं बनेंगे, तब तक वे चैन से नहीं बैठेंगे। तो हम गुरुजी के चरणों में प्रार्थना करते हैं कि वे हमारे साथ सालों साल रहें और अच्छे-अच्छे रहें। **जैसे वे चंचल हैं, ऐसा उनका स्वास्थ्य भी चंचल रखें।** पप्पाजी, काकाजी, योगीजी महाराज, स्वामिनारायण भगवान और सब स्वरूपों को प्रार्थना है कि हमारे गुरुजी स्वस्थ रहें, हमारे गुरुजी अच्छे रहें। जो काकाजी और पप्पाजी का संकल्प था–ऐसा हमारे गुरुजी हमें बना के रखें–ऐसी गुरुजी के चरणों में प्रार्थना।

पू. निष्कामस्वामी (सांकरदा)

...वर्षों पहले की स्मृतियाँ इदम् होती हैं, जब गुरुजी सांकरदा रहते थे। तब के गुरुजी और अभी के गुरुजी... पर, उस समय जो भाव था और मेरे साथ रहते थे व आनंद करते थे या जो व्यवहार था, वैसे के वैसा व्यवहार देखने को मिलता है। **काकाजी-पप्पाजी कहते थे कि जिसके अंदर तनिक भी 'स्व' न हो–'स्व' पिघल गया हो, वो ही इस प्रकार वर्त सकता है।** मेरे से पहले कई वक्ताओं ने कहा कि बड़ों के साथ बड़ों की तरह, छोटों के साथ छोटों की तरह, यूँ हर एक के साथ उसके जैसे होकर जीते हैं।

योगीजी महाराज एक बात कहते–गुरु करने से पहले उसमें तीन प्रकार की शुद्धि देखनी चाहिए। जिसे हमें गुरु करना है, उनका वर्तन कैसा है? उनके गुरु का वर्तन कैसा था और उनके शिष्य का वर्तन कैसा है? बापा तो यहाँ तक कहते–कुएँ में होगा, तो ही नालियों में आता है। इसी प्रकार, सच में गुरुजी खुद ऐसा जीवन जीते हैं, तो आज उनके साथ–उनकी निश्रा में रहते मुक्त भी ऐसा जीवन जीते हैं।

अभी थोड़े दिन पहले हमारे यहाँ **पुनीतभाई** और **आशिषभाई** आए थे। गुरुजी ने उन्हें कोई सेवा के लिए भेजा था। एक सप्ताह तक वहाँ (सांकरदा मंदिर) रहे। और... वे तो जवान हैं, तो सहज ही खाने का, पीने का, घूमने-फिरने का शौक होता है। पर, तब भी उनकी एक नजर देखें, तो गुरुजी की ओर कि क्या करें कि गुरुजी राजी हों; गुरुजी को क्या पसंद है? और इतनी सादगी से, जैसे गुरुजी के लिए कहते हैं कि उनकी

सादगी, उनकी जो साधुता और विनम्रता – ऐसे ही भाव से ये मुक्त हमारे साथ वहाँ रहे। तब ख्याल आया कि सच में गुरुजी ने कैसे मुक्त तैयार किए हैं?

आज दिल्ली मंदिर और सारे समाज का दर्शन करने का मौका मिला है, जो गुरुजी ने सर्जन किया है। **योगीजी महाराज** ने हमें संत बनाया, तब आशीर्वाद दिए कि भगतजी महाराज, जागास्वामी, शास्त्रीजी महाराज, महंतस्वामी जैसे बनाना है। उनके वो आशीर्वाद गुरुजी ने तो साकार किए हैं, पर हम सभी संत भी वो आशीर्वाद हमारे जीवन में जल्दी से जल्दी साकार करें – गुरुजी ऐसी आज कृपा बरसाएं, यही आज के दिन प्रार्थना!

श्री हरिशंकर गुप्ताजी (विधायक, दिल्ली सरकार)

...पिछले कुछ समय से मुझे यहाँ तीसरी या चौथी बार आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मन में बड़ी अजीब-सी प्रसन्नता होती है। जब मुझे हमारे भाई-मित्र रविजी द्वारा कभी भी यहाँ आने का निमंत्रण मिलता है, तो मन में अपार हर्ष होता है और एक स्वाभिमान भी होता है कि हमारे इस क्षेत्र में इतने महान संत पूज्यनीय गुरुदेव का आभा मंडल एक ज्योतिपुंज के रूप में विद्यमान है और जब मैं देखता हूँ कि देश के तमाम हिस्सों से और विदेशों से भी उनके अनन्य भक्त-अनुयायी कार्यक्रम में उपस्थित होते हैं, हिस्सा लेते हैं, तो और खुशी होती है, आनंद होता है कि **हमारे क्षेत्र के अंदर भी एक ऐसा स्थान है जिसे लोग 'तीर्थ' समझकर यहाँ आते हैं।**

देश-विदेश में जहाँ कहीं भी संतों ने वास किया है, महान पुरुषों ने निवास किया है, वहाँ पर हजारों मील की यात्रा करके लोग पहुँचते हैं, हम लोग भी जाते हैं और आपके ही क्षेत्र में ऐसा हो सके और ऐसा हुआ है; फिर बात ही क्या? आनंद ही आनंद।

मैं अपने क्षेत्र का, अपने क्षेत्रवासियों का सौभाग्य समझता हूँ कि हमें इतने पवित्र धाम का सान्निध्य प्राप्त हुआ है। इतने महान संत का सान्निध्य प्राप्त हुआ है और यही वो आशीर्वाद, स्नेह है जो हमारे क्षेत्रवासियों को खुश रखेगा, महफ़ूज रखेगा, स्वस्थ रखेगा ऐसा मैं मानता हूँ। गुरुजी का आभा मंडल, आशीर्वाद सर्वत्र यहां व्याप्त है। मुझे परम विश्वास इस बात का है कि हमारे क्षेत्र के लोगों की हर जरूरत को उनका आशीर्वाद पूरा करेगा। हर संकट से हमारी रक्षा करेगा। मैं तहे दिल से अपने और परिवार की ओर से आपका शुक्रगुजार हूँ – गुरुदेव, कि आप मुझे – एक छोटे से व्यक्ति को यहाँ पर आने का निमंत्रण देते हैं और बड़े स्नेह से अपने नजदीक बैठाते हैं और आज के इस दिवस के लिए मैं हार्दिक बधाई देता हूँ।

श्री मांगेराम गर्गजी (पूर्व विधायक)

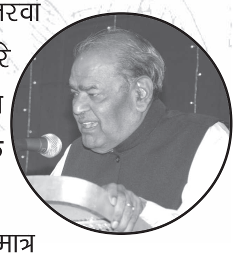

...आज विशेष आनंद की अनुभूति हो रही है। परम श्रद्धेय स्वामिजी का बहत्तरवां जन्म दिवस हम मना रहे हैं। संतों का सान्निध्य प्राप्त होना, संतों का जन्म दिन हमारे लिए प्रेरणादायक प्रसंग रहता है। यह एक संस्कार केन्द्र है। पिछले दस-बारह वर्षों से मुझे यहाँ आने का अवसर मिलता रहा है। **इस संस्कार केन्द्र के अंदर आकर के हम लोग अपने पूरे वर्ष भर के लिए एक ऊर्जा यहाँ से लेकर जाते हैं।**

स्वाभाविक तौर से इस क्षेत्र के अंदर, इस संस्कार केन्द्र के माध्यम से केवल मात्र

अशोकविहार क्षेत्र के ही नहीं, दिल्ली के ही नहीं पूरे देश के विद्वान आकर के साक्षात्कार करते हैं। यहाँ बहनों का विशेष योगदान रहा है और इस संस्कार केन्द्र के माध्यम से जैसे हमें शक्ति मिलती है, हम उस संपूर्ण शक्ति को अपने क्षेत्र व साथ में बांटते हैं। अभी हरिशंकरजी ने और हमारे देवराजजी जो यहाँ से निगम पार्षद हैं उन्होंने भी कहा – निश्चित रूप से जब भी हमें कोई आदेश यहाँ से दिया जाता है, हम अक्षरशः उसका पालन करें, ये हमारा कर्त्तव्य बनता है। इन्हीं शब्दों के साथ आज जन्म दिन के अवसर पर मैं बधाई तो क्या दूँगा? हाँ, आशीर्वाद लेते दफा मन में जरूर विचार आया है हमारे यहाँ कहा है – जीवेम् शरदः शतम्। परंतु संतों की तो कोई आयु की सीमा रहती ही नहीं, इसीलिए सदैव इनका सान्निध्य और आशीर्वाद हमें मिलता रहे – इन्हीं शब्दों के साथ आप सबका आभार व्यक्त करता हूँ....

प.पू. अध्यात्मानंदस्वामिजी (अमदावाद)

...छः बजे से हम लोग यहाँ आकर बैठे हैं। हमारे तमाम पूर्व वक्ताओं ने अपने-अपने ढंग से गुरुजी के प्रति अपनी श्रद्धा को व्यक्त किया है। मेरा दिमाग़ कहीं और दूसरी दिशा में चल रहा है। आज देश की जो परिस्थिति है, वो एक ऐसे नुक्कड़ पर आकर खड़ी है, जिसके बारे में हम सब को बहुत गंभीर रूप से न केवल सोचना चाहिए, किन्तु उस दिशा में हमें कुछ चहल कदमी करनी चाहिए। उस दिशा में गुरुजी क्या कार्य कर रहे हैं? वर्तमान परिस्थिति में हमारे राष्ट्र में कोई कमी नजर आ रही है, तो वह है कॅरेक्टर की – चारित्र की कमी; जो बहुत ही दुःखदायक घटना है। सबसे बड़ी जो कमी नजर आ रही है, महसूस हो रही है वो है 'देश प्रेम' की कमी। मैं **आदरणीय श्री काशीराम राणाजी** के पास जाकर कहकर आया। मैंने कहा – ***आप एक कुर्सी से उठ कर आए हैं, किन्तु कुर्सी की कोई भी बू आपके प्रवचन में नहीं है। आपने अपने पूरे पैंतीस मिनट के वक्तव्य में पोलिटिक्स का एक भी शब्द उच्चारण नहीं किया।*** **ये बहुत ही बड़ी बात है** और ये तभी संभव हो सकता है जब कोई मंदिर में जाए, कोई मस्जिद में जाए, कोई गिरजाघर में जाए, गुरुद्वारा में जाए वहाँ कोई तीन पत्ती, पाँच पत्ती नहीं खेलता है। तो ये **तीर्थ स्वरूप तीर्थ स्थान** 'दिल्ली' जिसको कहा गया, वहाँ पोलिटिक्स कैसे आ सकती है? मैं सम्पूर्णतः नॉन पोलिटीकल व्यक्ति हूँ। मेरा सद्भाग्य है कि दुर्भाग्य मुझे पता नहीं, किन्तु पैंसठ वर्ष की आयु में मुझे एक दिन भी क्या कहते हैं – ये राष्ट्र के जो ये 'इलेक्शन पर्व' होते हैं, उसमें अपना वोट कास्ट करने का सौभाग्य नहीं मिला। क्योंकि पढ़ते रहे देश में, विदेश में साधु बनकर घूमते रहे; वोटर्स की लिस्ट में नाम होना चाहिए न? राशन कार्ड में ही नाम नहीं, तो वोटर लिस्ट में नाम नहीं। खाना कहाँ खाते हैं? तो, सुबह 'काकाजी लेन' में खाया गुरुजी के पास में, शाम को भी यहाँ मिलेगा पता है। कल नैनीताल में मिलेगा, परसों चाईना में मिलेगा। तो, वोटर की लिस्ट में नाम कैसे हो सकता है? एक्चुअली मुझे ये पोलिटिकल पार्टियों से कोई तात्पर्य नहीं, किन्तु **देश** में – जिस देश की भूमि में, जिस वायु मण्डल में, जिस कण-कण में इस शरीर का पालन हुआ है, उस**के लिए जो चिंता है, उसे मैं गुरुजी के जीवन के साथ में संबंधित देख रहा हूँ।**

हमारे यहाँ देश के प्रति न्यौछावर होने वाले – मर मिटने वाले व्यक्तियों की बड़ी परंपरा है। किन्तु हमारे देश का एक पक्षी था वो देश के लिए कट गया, मिट गया; उसका नाम था **'जटायु'**। देश की एक महिला को

एक विदेशी व्यक्ति लेकर जा रहा था–एक आतंकवादी। एक पक्षी खड़ा हो गया; तेरी ये हिम्मत? मेरे देश की एक सन्नारी को– एक महिला को तू कैसे लेकर जा सकता है? एक बार तो जटायु ने इतना बड़ा प्रहार किया और रावण को गिरा दिया। रावण को कल्पना नहीं थी कि उसके सामने कोई इतना बड़ा प्रहार कर सकता है। रावण दिग्गज व्यक्ति था, कैलाश को उठा सकता था। रावण यदि कोई व्यक्ति नहीं भी हुआ हो, कोई चरित्र का व्यक्ति हो, तब भी उसकी रचना 'शिवताण्डव स्तोत्र' आज भी अतुल्य है... **ये धरती नपुंसकों की धरती नहीं है। हमारे देश का एक पक्षी भी खड़ा हो सकता है।** जटायु के पंख काट दिए गए। किन्तु फिर भी आज हमें उसका नाम याद है। देश के लिए उसने अपने जीवन को समर्पित किया।

हमारे पास एक पशु भी ऐसा हुआ; उसका नाम है **'चेतक'**। महाराणा प्रताप जब चारों ओर से घिर गए–सब साथी बिछड़ गए; सामने एक नाला है। चेतक को थपथपाया– *'चेतक, इस देश की शान, देश का अरमान, देश का नाम, देश की रोशनी अब तुझ पर निर्भर करती है।'*

चेतक ने अपने मालिक की आँखों में देखा, चेतक ने माँ भूमि धरती को देखा; मेवाड़ की धरती पर पूरा प्राणप्रण लगाकर वो नाला कूद गया। कूदने के बाद में चारों पाँव से चित्त हो गया। किन्तु महाराणा प्रताप की शान, राजपूताना की शान, देश की शान को उन्होंने ऐसे के ऐसे रखा है। कभी मौका पड़े हल्दीघाटी में जाने का, तो देखना महाराणा प्रताप की समाधि के साथ में चेतक की समाधि बनी हुई है! राजस्थान के लोग–विशेष रूप से महिलाएं जब गर्भवती रहती हैं, चेतक की समाधि से मिट्टी लेकर आती है और मिट्टी को थोड़ा खा लेती हैं कि मेरी गर्भ से पैदा होने वाला जो बच्चा हो, वो भी उस वीर के समान कुर्बानी करने वाला बच्चा पैदा हो। **ये हमारे देश की धरती का एक 'पशु' है।** उसका नाम भी इतना बड़ा महत्व रखता है।

हमारे देश में कुर्बानियां जो हुईं उनकी कथा विस्तार से कह सकते हैं। एक दिव्य पिता थे–**गुरु गोविन्दसिंहजी महाराज**, जिनके चार सपूत थे। दो को जिन्दा चिन दिया गया। दो देश के लिए लड़ाई में मारे गए थे। जिन बच्चों को जिन्दा चिन दिया गया, उनमें से एक थोड़ा लम्बा था, जो बड़ी उम्र का था। एक थोड़ा छोटा था। जब ईंटें रखी जा रही थीं, ये मुमकिन नहीं है–सीधी बात है कि जो छोटा है उसके नाक तक ईंट पहले आ गयी। बड़ा है उसके छाती तक ईंट आ गयी थी। बड़े ने जोर से सिर मारा और अपने सामने की ईंटे गिरा दी। छोटे ने बोला प्रा! कि करदा है? कि होया? दस्स, तूने तो कसम खाई थी देश के लिए मर मिटने की। बस मायूस हो गया? नहीं-नहीं, मैं बड़ा हूँ तू छोटा है; मेरे सामने ईंटें चिन दी जाएंगी, तो मेरे से पहले तेरी कुर्बानी होगी। मैं दुखी हूँ इस बारे में कि मेरी कुर्बानी पहले क्यूं नहीं? तेरी क्यों हो रही है? इसलिए मैंने ईंट को धक्का मार दिया है। वॉट ए ग्रेट अचीवमेन्ट ऑफ धी लाइफ!

कुर्बानी करने वाला हमारे यहाँ एक और शहीद हुआ है–**'भगत सिंह'**। उनकी माता **'विद्यावती देवीजी'** से मिलने का मुझे सौभाग्य मिला था–सहरानपुर में कोई उन्नीस-बीस साल पहले। **उनके पास बैठना एक गौरव की बात है।** उन्होंने कहा कि भगत सिंह से कहा गया था कि तुम्हें नाम देंगे, इकराम देंगे, सिपाहसालार बना देंगे, इनामदार बना देंगे, किल्लेदार बना देंगे। तुम जिदद् छोड़ो–**'इंकलाब जिंदाबाद'** की। *''तो तूने क्यों नहीं 'हाँ' भर दी?''* माँ कहती है मैंने अपने पूत को पूछा। बेटा बोला: माँ! यदि मैं कर देता न, तो सारा जीवन लोग तेरे नाम पर थूक देते। ये 'भगत सिंह की माँ' – जो अंग्रेजों के हाथ में बिक गया। **मुझे मेरे देश की धरती की जितनी चिंता है, उतनी मुझे तेरे दूध की चिन्ता है माँ**–इसलिए मैंने उनको हामी नहीं भरी; 'इन्कलाब' ही बोलता रहा। देखिए, यह एक पूत है। विद्यावती माताजी कहती रही कि उस बच्चे को

कब फाँसी दे दी गई, हमें बताया नहीं गया, कब जलाया गया ये भी नहीं बताया गया। लाश तक भी नहीं दी; मैं दर-दर भटकती रही। अंग्रेजों से मिलती रही कि मुझे मेरे बच्चे की दो मुट्ठी – दो हाथ भरकर राख तो दे दो। एक भले अंग्रेज ने दो मुट्ठी राख मेरे हाथ में दे दी। फिर मैं मेरे पिण्ड में आई। जब मैं अपने गाँव आई तो सारे गाँव की महिलाएं बोलती हैं, माँ चुटकी-चुटकी हमको दे दो। तुम्हें क्या करना है? इसकी ताबीज बनाकर अपने बच्चे के गले में लटकाएंगे कि हमारा बेटा भी शहीद **'भगत सिंह'** हो। वॉट ए ग्रेट थिंग?

मैं इस परंपरा को देख रहा हूँ। कुर्बानी की परंपरा – पक्षी, पशु, एक पिता, एक पुत्र में। **तमाम परंपराओं का जो एक बहुत बड़ा संगम है, वो हमारे गुरुजी में है।** वो अद्भुत है। देखिए संगम कहते है गंगा – यमुना – सरस्वती का; सरस्वती दिखती नहीं है, किन्तु बिना सरस्वती के तो संगम हो ही नहीं सकता और वो सरस्वती जो दृश्यमान है वो क्या है। 'शांतो वसंतो सन्ति संतः' – ऐसा **विवेक चूड़ामणि** ने कहा। संत शांत होते हैं।

एक वसंत आती है; नीम के पत्ते झड़ने के बाद में एकदम से उसमें नई-नई कोपलें आ जाती हैं। इट्स ए साईट टु बी सीन एण्ड एक्सपीरियन्स्ड।

बेलपत्ते में पूरे पत्ते झड़ गए थे। उसमें नई-नई कोपलें आ गईं, पूरा बेलपत्ते का पेड़ भर गया। कणजी के पेड़ दिल्ली में ढेर सारे हैं। उनके पत्ते इतने सुंदर हैं, चमक रहे हैं, अद्भुत हैं। बेला मोंगरा में कोई पत्ते नहीं थे। पत्ते आए, कलियां लगीं, खिल गई। मोगरे के बेले के सुगंध से पूरा वातावरण भर गया। ये आकस्मिक नहीं होता है। पत्ते तो झड़ जाते हैं, किन्तु नए आने तक उन डालियों को मौन रखना पड़ता है। कलियां खिलती हैं, उसके पहले कलियों के बीच में बसी हुई जो क्षमता है, शक्ति है, ऊर्जा है, उसको एक साधना करनी पड़ती है।

गुरुजी से मेरा कोई लंबा परिचय नहीं है। न मैं उनका भक्त हूँ, न उनकी परंपरा का स्वामिनारायण हूँ। किन्तु इनकी परंपरा के साहेब हैं, वो हमारे दोस्त हैं। हाँ, स्वामिनारायण के संतों के साथ में हमारे परिवार का बहुत पुराना परिचय शास्त्रीजी महाराज से, प्रमुख स्वामी महाराज से, कालुपुर के संतों से रहा है। एक बार ऐसा मौका हुआ। विदेश से आकर के मुझे दिल्ली में लॅण्ड करना था और दूसरे दिन ट्रेन पकड़कर अमदाबाद जाना था। साहेब ने ही मुझे कहा स्वामिजी! दिल्ली में कहाँ रुकोगे? यहाँ पर तो आइए न, हमारा एक उत्सव हो रहा है। उत्सव में आया... बहुत ख़ुशी हुई – इन तमाम जो छोटी-छोटी बातों को आपने अभी सुनी न, इसका मुझे अनुभव है। उत्सव के बाद मैं तो ट्रेन में लौट रहा था, किन्तु उसी ट्रेन में गुरुजी के भगत लोग जा रहे थे। गुरुजी ने उनके हाथ खाना भेजा था कि स्वामी को रास्ते में खाना खिलाना। उनके लिए थाली लेकर जाओ, कटोरियां लेकर जाओ, चम्मच लेकर जाओ, पानी लेकर जाओ। कौन करता है यह? अभी जो कथा में आपने सुना – 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव' – ये हमारे गुरु हैं, ये हमारे दोस्त हैं, ये हमारे यार हैं, हमारे पिता हैं, हमारी माता भी हैं। क्या बोलते हैं टु मॅनी थिंग्स इन वन। जॅक ऑफ ऑल, मास्टर ऑफ नन; नहीं ये स्वंयभू सब कुछ हैं।

ये तब संभव हो सकता है जब डालियों के तमाम पत्ते झड़ जाने के बाद में डालियां चुप-चाप रहती है। जब धीरे-धीरे कोपलें फूटती हैं। ये मौन है गुरुजी का – बिना ढोल बजाए, शान्तो बसंतः। जैसे बसंत धीरे-धीरे आती है, ऐसे ही उनके जीवन की साधना चलती है। देखिए, अभी इनके बहत्तर साल हुए हैं। जब वो आए होंगे, तो पैंतीस साल तो हुए ही होंगे – सीधी बात है। पैंतीस साल से दूसरे पैंतीस साल की यात्रा को थोड़ा देखना चाहिए।

मैं तमाम जो बात कह रहा हूँ, उसका सार ये है कि मैंने बचपन में एक कहानी सुनी थी। हमारे गुरु महाराज के ही श्रीमुख से सुनी थी और बाद में नैनीताल में मैं उस बंदे को मिलकर भी आया। वो बंदा एक कर्नल डॉक्टर है। वो कर्नल डॉक्टर जब छोटा बच्चा था, सबका मजाक उड़ाने की उसे आदत थी... सबको ए लम्बू, ए ठेंगड़, ए टकलू, ए मोटे, ए नाटे... एक गाँव के एक मंदिर में बाबाजी रहते थे– बड़ी दाढ़ी वाले, जटा वाले। वो छोटा लड़का अपने कुत्ते को लेकर गया और उनके पास जाकर भी बोला बाबाजी, बाबाजी आपकी दाढ़ी ऊँची है या मेरे कुत्ते की पूँछ ऊँची? बाबाजी कुछ नहीं बोलते थे, हँसते थे। दिन बीत गए वो लड़का बड़ा हो गया, डॉक्टर बना। अभी जीवित है। वो व्यक्ति का नाम मधुसूदन है, अभी है जिन्दा - डिफेन्स कॉलोनी में रहते हैं। नैनीताल जाएंगे – एबर फॉल कॉटेज; हमारे अच्छे दोस्त है। नाइन्टी थ्री इयर ओल्ड है। उसके दिल में एक दिन ख्याल आया – मैंने अपने बचपन में सबको परेशान किया है। मुझे अपने गाँव जाना चाहिए, सबकी माफी माँगनी चाहिए – प्लीज फॉर गिव मी; मैं बड़ा हतप्रभ रहता हूँ, मैं दुःखी होता हूँ और रात-रातभर नींद नहीं आती है, हमेशा आप लोगों को परेशान किया है। माँ के पास गया, तो माँ ने कहा –

बाकी सबकी माफी बाद में माँगना, पहले बाबाजी की माँग। बाबाजी ने बारह-पन्द्रह दिन से करवट नहीं बदली, एक बूँद पानी उनके मुँह में नहीं गया है। उस मंदिर में वो दाढ़ी वाले बाबाजी हैं। लोगों ने घेरा करके रखा था। जाने कब बाबाजी प्राण छोड़ दें।

वो जगह बनाता - बनाता गया; बाबा बेहोश पड़े थे। डॉक्टर ने उनकी नाड़ी पकड़ी। दो-चार मिनट हुआ, तो धीरे से बाबाजी ने आँखें खोलीं और बोले–

बेटे तुम आ गए। मैं तुम्हारी तो राह देख रहा हूँ।

यंग कॅप्टन डॉक्टर के आँखों में आँसू आ गए और बोला– *बाबाजी मुझे क्षमा करें। मैं माफी माँगने के लिए आया हूँ; मैंने आपको बहुत सताया था।*

नहीं बेटे, मुझे बैठाओ न।

लोगों को आश्चर्य था– ये क्या है? बारह-पन्द्रह दिन से जिसके मुँह में एक बूँद पानी नहीं गई, बेहोश पड़े संत आज बैठने के लिए बोल रहे हैं! उनको सहारा देकर बिठाया।

उस संत ने कहा – *तुम नहीं आए हो, मैंने बुलाया है। पूछो बेटे-पूछो, तुम्हारे सवाल को पूछो।*

महाराज मुझे क्षमा करें, महाराज मुझे क्षमा करें।

नहीं बेटे, तुम्हारा सवाल मुझे याद है। यही तो था न कि तुम्हारे कुत्ते की दुम ऊँची या मेरी दाढ़ी?

लोग देख रहे हैं कि क्या हो रहा है; मौत के मुँह में संत खड़ा है, ये दुम और दाढ़ी की क्या बात होती है? किन्तु बाबा के लिए बहुत बड़ा जटिल प्रश्न था। अपने जीवन में इन पलकों को बंद करने के पहले मृत्यु के पार जाने के लिए एक इकरार करने का प्रश्न था– जिस प्रश्न को बार-बार उस संत को पूछा गया था– कई वर्षों के पहले शायद बीस-पच्चीस वर्षों के पहले।

बेटा, यही तो तेरा प्रश्न था? तो सुन ले तेरे कुत्ते की दुम नीची, मेरी दाढ़ी ऊँची।

डॉक्टर बोला – *बाबा ये तुम पहले भी कह सकते थे।* कर्नल फूट-फूटकर रो पड़ा।

नहीं बच्चे, पहले नहीं कह सकता था। क्योंकि मौत बहुत दूर थी। अब मौत मेरी मुट्ठी में है। मैंने मौत को संभाल कर रखा है और ***मेरी दाढ़ी के ईमान को भी संभाल कर रखा है।*** *तेरे कुत्ते की दुम में तो कितने ही दाग लग चुके हैं। मेरी दाढ़ी में एक भी दाग मैंने नहीं लगने दिया।* दास कबीरा ऐसी ओढ़ी ज्यों की त्यों धर दीन्ही चदरिया...

मुझे पता नहीं है कि गुरुजी पैंतीस साल से यहाँ हैं कि चालीस साल से; पर **जिस माहौल को मैं देख रहा हूँ , इतने सारे युवकों को मैं उछलते-कूदते देख रहा हूँ, इनके चेहरे के नूर को देख रहा हूँ। इट्स ए रिफ्लेक्शन ऑफ धी प्योरिटी एण्ड कॅरेक्टर ऑफ गुरुजी।**

आज हमारे देश को युग निर्माण करने की आवश्यकता है। चरित्रवान युवकों का निर्माण करने की आवश्यकता है। शायद जटायु ने, चेतक ने, गुरु गोविन्द सिंह के शहजादों ने या अन्य कुर्बानी देने वाले लोगों ने अपने आप कुर्बानी दी होगी। किन्तु गुजराती में कहते हैं–

'जळी जती छो ने धूपसळी सुगन्ध उवेखती उवेखती।'

एक धूपबत्ती होती है; वो चुपचाप जलती है, किन्तु सुगंध बिखेरती रहती है।

गुरुजी का जीवन भी शांत है, किन्तु सुगंध दे रहे हैं। अपने जीवन की महक से कई युवकों को महक पूर्ण कर रहे हैं। इसके उत्सव में आज हम सब यहाँ पर एकत्रित हुए थे। **गुरुजी का प्रागट्य उत्सव – इनके शरीर का जन्मोत्सव नहीं है। इनका प्रागट्य उत्सव 'सांस्कृतिक समन्वय का उत्सव' है।**

मुझे क्षमा करें तमाम लोग, लेकिन स्वामिनारायण संप्रदाय के साथ में मेरा बहुत सामीप्य है। ये किसी के हाथ का पानी नहीं पीते। हमारे शिवानंद आश्रम में आए थे, तो अपना पानी छान कर पीते हैं। आश्रम का भोजन नहीं करते। अपना भोजन खुद बना कर करते हैं। एक चटाई में बैठ कर भोजन करना है, तो मैं साथ में बैठकर नहीं कर सकता हूँ। अपनी चटाई उल्टा कर मुझे भोजन देंगे। इनका एक जो नियम है, उसको वे मानते हैं। नथींग रॉंग इन धेट; वैष्णव लोग अपना नियम मानते हैं। किन्तु **तमाम नियमों के मध्य रहकर के भी नियम से परे एक ही नियम है – वो क्या है ? 'अपने जीवन को नहीं देखकर के मैं मेरी प्रत्येक सांस से दूसरों के जीवन को देखूँ!'**

वो छोटे बच्चे के सिर पर चाँदी का मुकुट रखा गया। वो छोटे बच्चे को कहते हैं कि – चल, फोटो खिंचवा ले। एक छोटा बच्चा है; आज उसका जो चित्र खींचा गया है, भविष्य में आने के समय में वो कहता रहेगा, देखो! मैं छोटा था तब बहत्तर साल के एक महात्मा ने मेरे सिर पर चाँदी का मुकुट रखा था। ये कोई छोटी बात नहीं है। **मैं देख रहा था कि गुरुजी के मस्तक पर जब मुकुट रखा गया, तब गुरुजी के चेहरे पर एक भाव था।** उस भाव को बोलते हैं **'साम्भवी मुद्रा'**। साम्भवी क्या होती है ? जिसमें राग नहीं, द्वेष नहीं, काम नहीं, क्रोध नहीं, लोभ नहीं, सुख में सुख नहीं, दुःख में दुःख नहीं! उस बच्चे के मस्तक पर भी जब मुकुट रखा गया, वो भी उसी स्थिति में था। मैंने कहा देखो – ये बच्चे के सिर पर कुछ रखा है, ही इज़ एब्सॉल्यूटली अवॅर ऑफ इट, वॉट्स हॅप्नींग। वो बिल्कुल कैसा है – निर्मोह, निर्मान।

श्रीमद्भागवत गीता में भगवान कहते हैं – 'ये परम गहन ज्ञान मैं तुम्हें दे रहा हूँ क्योंकि अर्जुन तुम **निष्कपट** हो।' पन्द्रहवें अध्याय में पुनः परमात्मा इसी बात का उच्चारण करते हैं – 'मैंने तुम्हें ज्ञान दिया, क्योंकि तुम निष्पाप हो।' **ये निष्कपट और निष्पाप जो चेहरा – जो दर्शन हमने अभी किया।** अपने सिर पर मुकुट रखवा कर देख लो। थोड़ा इधर से फोटो खींच इधर से खींच-आहा ऐसे होता है। तीन कॉपी मुझे देना।' मुकुट रखा तो क्या हुआ ? ....अरे! जहाँ बैठाओ उत ही बैठूं , जो देवो सो खाऊं, गिरधर के घर जाऊं। गुरुनानक देव जी महाराज कहते हैं – 'तू ठाकुर तू अरदास जिओ पिण्ड तेरी रास नानक दास।' ये देखिए इतनी सरलता है – 'जहाँ बैठाओ तित ही बैठूं।' **मेरा अपना कुछ भी नहीं है।** मैं तो रथ हूँ , तुम रथ चलाने वाले; मैं यंत्र हूँ, तुम यंत्र करने वाले।

गुरुजी को अपना कुछ नहीं। वो कहते हैं मारी डोरी तारे हाथ। वो उनके ऊपर बैठे हुए हैं – काकाजी, पप्पाजी – ऊपर बैठे भगवान स्वामिनारायण उनके चरण में बैठा हूँ। उन्होंने मुझको वहाँ से यहाँ भेज दिया। मुझे दिल्ली रहना या साकंरदा रहना, दिल्ली रहना या धारी में रहना, दिल्ली रहना, बोचासण रहना – कोई फर्क नहीं है। जहाँ बैठूँ वहाँ 'स्वामिनारायण, स्वामिनारायण' करूँ। जहाँ बैठूँ वहीं अक्षरधाम और ऐसा अक्षरधाम उन्होंने खड़ा किया है। वह सभी को मिले, जय स्वामिनारायण!

प.पू. गुरुजी

पू. अध्यात्मानन्दस्वामिजी की बातें सुनी, मजा आ गया। **सच में साधु हैं,** मैंने सुबह ही बात करी थी। हमारा निमंत्रण कार्ड इनके पास गया होगा। आप लोगों ने भी वो पढ़ा है। उसमें इनका नाम नहीं है। फिर भी, इनका फोन आया कि गुरुजी २९ को मैं दिल्ली में हूँ। मैंने कहा यह तो बहुत अच्छी बात है, आप जरुर आ जाना। फिर इन्होंने बताया कि २९ की चार बजे की गाड़ी में नैनीताल-मतलब काठगोदाम जाने के लिए उनकी तो बुकिंग हुई है। मैं फिर और कुछ बोलने से रुक गया, पर उन्होंने कहा कि एक काम हो सकता है। अगर काठगोदाम की मेरी टिकट ३० तारीख की हो जाए, तो मैं २९ को रुक जाऊँ; पर अहमदाबाद से वो बुकिंग मिल नहीं रही है। मैंने कहा – मैं यहाँ कोशिश करता हूँ, आप रुकोगे तो ज्यादा खुशी है और... मैंने हरिवदनजी को बोला व बुकिंग हो भी गई! स्वामिजी रुक गए तो हमें कितना अच्छा लाभ मिला! **ऐसे साधु बहुत कम होते हैं।**

...आपने ऊपर एक सूत्र देखा होगा – **'योगी परिवार'**। ये **'परिवार की भावना'** ही सत्संग है। हमारा **कन्हैयालाल** कहेगा – गुरुजी के पास जब भी जाओ, यही बात आएगी। पर, गुणातीतानंदस्वामिजी ने बोला हुआ है – '**भगवान के भक्त में आत्मबुद्धि-आत्मबुद्धि परिवार के जैसी होनी चाहिए – वो ही सत्संग है।' 'ही'** बहुत बड़े मायने रखता है।

...और ये क्राईटेरिया, गुणातीतानंदस्वामिजी ने – महाराज ने पहले से रख दिया है। एक प्रसंग कहता हूँ। गुणातीतानंदस्वामिजी वड़ताल गए थे। वहाँ आचार्य श्री रघुवीरजी महाराज भी थे। रघुवीरजी महाराज ने कहा कि स्वामिजी इस बार 'कानम देश' में से अच्छी भेंट आई है, तो हम सभी सत्संगी और संतों को इकट्ठे करके एक शिविर करें और उसमें अपने मंदिरों से सारे संत-भगत बारी-बारी आएं, जिससे कि सभी लाभ ले सकें। देखो, आचार्य महाराज का भी सत्संग के प्रति कैसा ममत्व होगा? **इनको ये विचार नहीं आए कि चलो गुरुकुल बना दें, हॉस्पिटल बना दें... बल्कि अपने हरिभक्तों और साधुओं को सत्संग की एक दिशा मिले, उसका कोई आयोजन करा जाए** और... स्वामिजी को कहा कि आप जूनागढ़ मंदिर का सॅटिंग करके आओ।

स्वामिजी वहाँ से निकले और ऐसा सोचा कि जाते हुए शिविर में आने का निमंत्रण भी गाँव-गाँव देता जाऊंगा। यूँ बीच में **'आंबरड़ी'** गाँव की शेत्रुंजी नदी में बड़े बड़ के नीचे ठहरे थे। गांव में पता लगा कि कोई बड़े संत आए हैं। तो, वहाँ का **जीवा देसाई** स्वामिजी के दर्शन के लिए गया। देखो, स्वामिजी की रीत – जिस बॅईज़

पर स्वामिजी ने सत्संग की नींव डाली है। स्वामिजी ने कहा कि यहाँ से किसी के सगे-संबंधी **'पीठवाजाळ'** गाँव में हैं? जीवा देसाई ने तुरंत कहा कि वहाँ तो हमारे ही भाई हैं। अब स्वामिजी की एप्रोच देखो। स्वामिजी ने कहा आप के कोई सगे आए हों, तो आप उनकी आव-भगत करोगे न? इन्होंने कहा–वो तो करेंगे ही। स्वामिजी ने कहा–तो हमारी आव-भगत आपको करनी पड़े, क्योंकि हम उनके सगे हैं और उस नाते आपके ठहरे! कितनी ल्यूसिडली इन्होंने 'कुटुबंभाव' की ही बात रखी। वर्ना, वो कहते कि भई! संत लोग आप के गाँव में आए हैं, आप थोड़ा सीधा-सामान ले आओ, तो भी ले आते। पर एक अपनापन डेवलप कर दिया और वो खुशी-खुशी एकदम सारा सीधा-सामान वगैरह ले आए।

ये है अपने **'गुणातीत सत्संग'** की नींव, जो धीरे-धीरे करते १९५२ से व्यापक हुई। आप भी जानते हो कि – मैं मार्च के एक-दो महीने पहले से कागज, फोन वगैरह कर-करके आपको कहता हूँ कि आप सब आना। एक गरज से कहता हूँ; बाकी मेरा जन्म दिन है और आप आओ तो भी ठीक, न आओ तो भी ठीक। पर नहीं– **अपना 'योगी परिवार' यहाँ इकट्ठा हो,** हम सब आनंद करें–पुरानी यादें ताजी करें और **ये बॉन्ड मजबूत हो।**

काकाजी के प्रवचनों में भी – **'योगी परिवार, योगी परिवार, योगी परिवार!'** इसके (योगी परिवार के) रेडीकल एलीमेन्ट्स को–इन्ग्रेडियन्ट्स को हम कभी भूलें नहीं। जैसे, यहाँ एक बार एक भाई साहब आए थे; **पू. कांतिकाका** का फोटो देखकर उन्होंने पूछा– *ये कौन हैं?* मैंने उनको कहा: *'कांतिकाका'–जो* ***हमारे 'योगी परिवार' की नींव की ईंट हैं।***

पर उनको जानकारी ही नहीं थी कि ये कांतिकाका कौन हैं? मैंने उनसे पूछा– *आप सत्संग में कब से हो?* वे बोले– *हम तो सत्संग में करीब पन्द्रह वर्ष से हैं।* तब तो मुझे और धक्का-सा लगा कि आप इतने साल से हमारे सेन्टरों में आते हो और कांतिकाका कौन हैं, पता नहीं है? वैसे ही हमारे सोखड़ा के **'चन्दुभाई'** देखो। मुझे इनके बारे बरोबर याद है कि जब संस्था ने हमें अलग करा और हम जब सोखड़ा रहने लगे थे, तो खूब विरोध था; तब चन्दुभाई ने हरिप्रसादस्वामिजी को कहा था–

'स्वामी, हमें एक साल कहीं से कुछ मांगना ही नहीं है। आप कहीं मांगने जाना ही नहीं। ज्यादा से ज्यादा क्या होगा? मैं मेरी जमीन बेच दूँगा, पच्चीस हज़ार रुपये तो आएंगे ही। हमारा महीने का खर्चा ढाई हज़ार! एक साल तक तो कोई चिंता नहीं, सब कुछ ठंडा होने दो।'

देखो, ये थी चन्दुभाई की– 'दाजी' की आत्मीयता। मुझे हमेशा ऐसा ही रहा करता है कि **ऐसे मुक्तों को हम यदि भूलेंगे, तो हम महाराज के गुनहगार बनेंगे।** इसका मतलब ये नहीं कि अभी जो नए आए हैं, इनकी कोई वॅल्यू नहीं।

आज यहाँ जो आए हैं, उनमें एक बहनजी बैठे हैं। उसका नाम है **'मोनिका'**–मोगा से है वो। मैंने सुबह शायद हरिभाई साहेब को भी बताया था कि उसके भाई की आज एंगेजमेन्ट है, पर कहती थी मैं तो हमारे गुरुजी के 'हॅपी बर्थ डे' पर ही जाऊँगी। बहुत बड़ी चीज है यह। मेरे बर्थ डे पर आई है इसलिए नहीं कहता हूँ, पर हम जो बोलते हैं न कि **प्रायॉरिटी भगवान के भक्त की–देह और देह के संबंधी से अधिक प्यारे**

भगवान के भक्त! 'ऐसे मुक्त अपनी एसेट है और यही हमारी सच्ची बिरादरी है' – ये भूलना नहीं है और इसको हमें डेवलप करना है।

तो ये एक बात दिमाग़ में फीट रखें कि **हमारे लिए पहले – 'धाम, धामी और मुक्त'।**

ये आसान नहीं है, बोलना बड़ा अच्छा लगता है; **लेकिन ऐन मौके पर हमें ख्याल आता है कि ये ज्ञान हमारे जीवन में कितना जमा है और वो जितना जमा होगा, उतने हम 'योगी परिवार के' सच्चे।** तो, सबसे पहले तो **आज ये पक्का करना है कि हमें इस संबंध से ही कन्टेन्टेड रहना है।**

एक बात करता हूँ। आपने नाम सुना होगा – **'किंग मार्टिन ल्यूथर'**। उसकी वाईफ का यह इन्सीडन्स है। किंग को एक 'आफ्टर डेथ एवॉर्ड' मिलना था। वह लेने वो आई थी। तब उसने खुद ये बात करी थी – *'किंग ल्यूथर के साथ मुझे जब मॅरेज करनी थी, तब काफी लोगों ने मुझे रोका था। मेरी सहेलियों ने भी कहा कि – ये ठहरा एक पोलिटिशियन और क्रान्तिकारी! उसका कब क्या हो जाए, कोई भरोसा नहीं। तो, तू इसके साथ मॅरेज नहीं करना। फिर भी मैंने करा और हुआ तो वो ही, जिसके बारे मुझे सब ने रोका था। किंग ल्यूथर को मार दिया गया और उसकी जल्दी डेथ हो गई। लेकिन आज भी मुझे ये फील होता है कि **इफ आई वुड हॅव नॉट मॅरीड किंग ल्यूथर, आई वुड हॅव लॉस्ट धी मीनिंग ऑफ माई लाईफ।'*** बहुत सोचने की बात है यह!

इसी तरह मुझे हमेशा ये रहा है कि **काकाजी – पप्पाजी जैसी विभूति मेरे जीवन में नहीं आई होतीं, तो मैंने भी – आई वुड हॅव लॉस्ट धी मीनिंग ऑफ माई लाईफ।**

इसमें है आध्यात्मिकता की वाईटालिटी, इसी को पकड़े रखना है। बाकी तो आया राम – गया राम का सत्संग चलता ही रहेगा, पर इसका कोई अर्थ ही नहीं है। पचास हजार, लाख, दो लाख, पाँच लाख लोग इकट्ठे हो जाएंगे। लेकिन यहाँ जो हज़ार जने होंगे, उनमें हर एक आत्मबुद्धि – प्रीति से जुड़ा हुआ है; चाहे फिर वो गुजरात से आएं हों, मुंबई से आएं हों, पंजाब से आए हों या लोकल हों। मैं या दीदी यहाँ नहीं भी हों और आधी रात को भी कोई इनमें से किसी को कहेंगे कि आज मुझे काम है, तुम आ जाओ या वहाँ काम है, तुम वहाँ चले जाओ, तो वो चले जाएंगे। **ये हमारा 'सेठ' – ये ओ.पी. ऐसे हैं।**

ऐसे सत्संगियों को मैं हमेशा याद करता हूँ। चन्दुभाई दाजी, नटुभाई अकोटा वाले, नटुभाई लंडन वाले-इन जैसों को याद करा करें और इनके नक्शे कदमों पर हम चलते रहें – **ऐसा सत्संग हमें करना है।** ऐसा आत्मबुद्धि – प्रीति का सत्संग करने की हमें बल, बुद्धि, सूझ, प्रेरणा काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी देते रहें – यही प्रार्थना।

दूसरी बात रही **'मंत्रशक्ति'** के छपने की! हम ज्ञान की जो बातें करते हैं, ये कई बार ऐसे प्रसंगों पर नजर आती है। 'मंत्रशक्ति' बस छपने ही जा रही थी और एकदम मेरे दिमाग़ में आया कि प.पू. काकाजी के दो आर्टिकल्स रह गए। एक था 'शक्तिपात' और दूसरा था – 'हमारी हर एक क्रिया स्वरूप प्रेरित है कि स्वभाव प्रेरित है?' मैंने तो सिर्फ टाईटल ही पढ़ा। यहाँ मैं गलती ये खा गया कि अंदर ज़रा भी देखा नहीं था कि इसमें क्या कन्टेन्ट है। मैंने 'शक्तिपात' और ये 'स्वरूप प्रेरणा' जैसे टाईटल पढ़ कर ट्रान्सलेशन के लिए **आनंदी दीदी और बंसरी** को भेज दिया। वहाँ एक तरफ पुराने करेक्शन्स चल रहे थे, और... बीच में ये गया!

इन्होंने तो कुछ कहा ही नहीं, चार घंटे तक ट्रांस्लेशन करते रहे और ट्रांस्लेशन मेरे पास भेजा। दो घंटे तक मैं उसे पढ़ने-समझने में दिमाग़ लगाता रहा। फिर मुझे हुआ कि इसमें तो ऐसी कोई मॅटर नहीं, जो इस बुक के अंदर जमे। पर, मैं हिचकता था कि ये तो चार घंटे तक और वो भी क्रूशियल टाईम में वे लगे रहे थे, जबकि उसके बदले दूसरा करेक्शन वगैरह कोई काम पर भी लग जाते! पर उन्होंने 'उफ' तक करा नहीं। **इसे कहते हैं – 'निर्दोषबुद्धि-दिव्यभाव'!** बाकी निर्दोषबुद्धि की बातें करनी आसान है। पर, ऐसे मौके पर कि गुरुजी ने ये क्या भेज दिया? 'बुक के साथ इसका कोई ताल्लुक नहीं' – वह उन्हें भी समझ तो थी। ये लड़कियाँ होशियार हैं, मुझे कहलवा सकती थी कि गुरुजी अभी रहने दो, ये मॅटर बुक के अंदर जमे ऐसी लगती नहीं है। आख़िर मैंने जब कहलवाया कि ये मॅटर बुक में जमे ऐसा लगता नहीं, तब इन्होंने भी **हँस कर कहलवाया** – हमें लगता ही था कि ये मॅटर तो इसके अंदर फिट होने वाली ही नहीं है। ऐसे निर्दोषभाव-दिव्यभाव में हम बहते रहें। हंसते-हंसते हर चीज को फेईस करते ही रहें, चलते ही रहें... चलते ही रहें इतना आप सब बल देते जाना – यही प्रार्थना और **आप हमेशा आते रहना; क्योंकि इसमें हमारा आनंद समाया है।** बस, श्रीपतीं, श्रीधरं...

(ध्वनिमुद्रण पर आधारित)

✡✡✡

'दीपावली-अन्नकूट...'

प.पू. गुरुजी अकसर बात करते हैं –

'सच्चे दिल से निकली मुक्तों की प्रार्थना के मुताबिक प्रभु संत पर अपना कब्जा करके उसे भी वर्ता लेते हैं...'

इस बात का हूबहू दर्शन अब की बार दीवाली के दिनों में हुआ। पिछले वर्ष दीवाली के बाद प.पू. दीदी की पूर्वाश्रम की छोटी बहन **सौ. अंशु दीदी** और उनके पति **प.भ. विमल चोपड़ाजी** के आग्रह पर प.पू. गुरुजी उनके घर पटियाला पहली बार गए थे। घर में पिताजी की आकस्मिक मृत्यु हो जाने के कारण उनका परिवार दीवाली का त्यौहार उत्साह से नहीं मनाता था। सो, वहाँ बातों-बातों में प.पू. गुरुजी ने ऐसा तै किया कि अब अगले साल **'धनतेरस'** के दिन हम पटियाला आएंगे। बाद में तो वह बात प.पू. गुरुजी के दिमाग़ से आई गई हो गई। पर, इस साल दीवाली से करीब पच्चीस दिन पहले ही प.भ. विमलजी एवं परिवार ने 'धनतेरस' पर आने की बात याद दिलाते हुए प.पू. गुरुजी से पटियाला आने की प्रार्थना की।

संजोगवश, अब की बार मंदिर में ठाकुरजी के हॉल में वुडन पॅनलींग का काम किए जाने के कारण 'बड़े घर दीवाली शिविर' रद्द हुई थी। सो, प.पू. गुरुजी ने भी अमदावाद एवं मुंबई के मुक्तों को लेकर पटियाला जाने का प्रोग्राम बना लिया। वर्ना, दीवाली के दिनों में प.पू. गुरुजी मंदिर से बाहर जाएं, ऐसा तो हो ही नहीं सकता। पर, भगवान रखे ऐसे संत की सारी क्रियाएँ भक्तों की भावना के वश – मानो प्रभु प्रेरित ही होती है। १३ अक्तुबर '०९ की सुबह प.पू. गुरुजी करीब ८० मुक्तों को साथ लेकर **पानीपत में प.भ. पुनीत गोयलजी** के घर दोपहर का प्रसाद लेते हुए, सायं ७:०० बजे पटियाला पहुँचे। प.भ. विमलजी के घर तो मानो उसी समय से **'दीवाली'** शुरु हो गई थी। प.पू. गुरुजी भी दीवाली मनाने के हेतु से ही दिल्ली से बच्चों के लिए पटाखे लेकर गए थे।

प.भ. विमलजी के परिवारजनों की भक्ति-भावना, सेवा, ख़ुशी देखते ही बनती थी। **प.पू. गुरुजी का पारदर्शी, सहज जीवन समस्त परिवार को भीतर तक छू गया...**

दूसरे दिन की सुबह प.पू. गुरुजी की निश्रा में महापूजा हुई। महापूजा के बाद छोटी-सी सभा करी और सत्संग की परिभाषा बताते हुए प.पू. गुरुजी ने कहा–

संत के साथ दृढ़ एवं खुल्ला संबंध रख कर उन्हें जीवन के केन्द्र में रखना – 'यही सत्संग है!'

यूँ, दो रात प.पू. गुरुजी वहाँ रहे और १५ अक्तुबर – धनतेरस की सुबह नाश्ता करके एक-दो जगह पधरामनी करते हुए **लक्ष्मीपूजन के लिए** सायं ५:३० बजे दिल्ली मंदिर पहुँच गए।

१८ अक्तुबर को **'अन्नकूट उत्सव'** होने के कारण सुबह साढ़े-सात बजे से ही सभी मुक्त अन्नकूट के लिए तरह-तरह के व्यंजन बना कर लाने लगे थे। मंदिर के हॉल का निर्माण कार्य तो जारी था ही, फिर भी ठाकुरजी के सिंहासन में फूस की झोपड़ी जैसी बना कर सांस्कृतिक दृश्य बनाया हुआ था।

हर वर्ष की भाँति सुबह करीब दस बजे स्नेहमिलन की सभा शुरु हुई। हमारे सत्संग समाज से जुड़े, **श्री मांगेराम गर्गजी एवं श्री हरिशंकर गुप्ताजी** भी सभा का लाभ लेने आए। 'महाभारत' सीरियल में आचार्य 'द्रोण' का किरदार जिन्होंने निभाया था, उन श्री सुरेन्द्र पालजी का मुबंई से आते हुए प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी से फ्लाईट में परिचय हुआ था, सो... वे भी अन्नकूट की इस सभा का लाभ लेने आए!

✡✡✡

अन्नकूट कृपाप्रसाद

...हमारी संस्कृति से आई हुई सारी चीजें हम भूल जाते हैं और सुखी होने का मूलभूत मेईन रास्ता हम अपने मन के बवंडर में चूक जाते हैं।

किसी भी सच्चे संत के पास हम चले जाएंगे, तो एक बात ख्याल आ जाएगी कि **उसके संपर्क में आए जीव कैसे सुखी हो जाएं** – उसके लिए ही उसका परिश्रम होगा। उसे ऐसा रहेगा कि जो सुख मैं पाता हूँ, वही सुख मेरे साथ जुड़े हुए सेवक को भी मिले। सो, हमारी अक्लमंदी इसी में है न कि हम अपने मन का-अपने दिमाग़ का-संग छोड़कर संत जो कहें, वो करें।

मैं कई बार कहता हूँ कि **हम व्यवहारिक मूल्यांकन छोडें।** मैं आप लोगों से तो बात करता हूँ, पर हम साधुओं से भी ऐसा हो जाता है। पहले भी मैंने यह बात करी थी कि कई मंदिरों में प्रसाद के पॅकेट्स अलग-अलग होते हैं। और... ऐसा होता है कि किसी ने सौ रुपया भेंट रखी है, उसको ये पॅकेट; पांच सौ रुपये रखे हैं, तो उसको ये पॅकेट! ये सारे व्यवहारिक मूल्यांकन हैं। **अगर हम ही ऐसे करें, फिर आपको कैसे सिखाएंगे कि आप ये छोड़ो।**

हमारे काकाजी ने ऐसी शुरुआत करी कि **सत्संग को अपना परिवार समझो और ऐसे सत्संग का विकास करो।** जब नाईनटीन सिक्सटी एईट में मुझे पहली बार दिल्ली आना था, तो मुझे याद है कि निकलने से थोड़े दिन पहले बड़ौदा में **अक्षरनिवासी भीखाकाका** के घर काकाजी मुझे जब-जब मिलते, उस दौरान बातें करते –

...मैं तुझे कोई अपने मन से दिल्ली नहीं भेज रहा; योगीजी महाराज का संकल्प है कि सत्संग का वहाँ विकास हो – स्वामिनारायण का संदेशा व्यापक बने, इसीलिए बापा की भक्ति रूप समझ कर तुम्हें मैं भेज रहा हूँ।

और... सत्संग के विकास के लिए उन्होंने मुझे पाँच-छः बातें बताई थीं –

* *प्रगट की अक्षरपुरुषोत्तम की हमारी **उपासना** है। स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज इसीलिए वड़ताल से*

निकले थे। हमें उसी को फैलाना है। सो, 'काकाजी-काकाजी' नहीं करा करना। 'योगीजी महाराज' आज अक्षर और पुरुषोत्तम – महाराज और स्वामी का प्रगट स्वरूप हैं; हमारी उपास्यमूर्ति हैं – उन्हें ही आगे रख कर सत्संग की बातें करना। ***महाराज और स्वामी गौण नहीं होने चाहिएँ, यह भी प्रगट की उपासना का एक मर्म है।***

* ***'सुहृद्भाव'*** *हमारी बुनियाद है। किसी भी वजह से संतों-भक्तों के साथ का आपसी सुहृद्भाव खंडित नहीं होने देना।*

* *हमारे नियम-मर्यादा-स्वधर्म में रह कर ही वहाँ वर्तना। आप 'त्यागी' हो, सो स्त्री-धन के त्याग का नियम तुम्हें हर हाल में पकड़े रखना है।*

* *वहाँ कभी भी किसी से कुछ माँगना-करना नहीं। तुम तो सम्राट के राजपुत्र! तुम्हें माँगना क्यों पड़े? सत्संग के विकास के लिए तुम्हारी जरुरतें महाराज-बापा पूरी करेंगे ही और फिर भी... कुछ खूटता ही लगे, तो काकाजी तो हैं ही!*

* *तुम्हारे संपर्क में जो भी आएं और अपनेपन से जुड़े हुए हों, उनके साथ कभी भी 'व्यवहारिक बुद्धि' नहीं रखना। उनके साथ कोई रिज़र्वेशन्स नहीं रखना।*

हमें 'आत्मबुद्धि और प्रीति' का सत्संग फैलाना है। ऐसा सत्संग जितना बढ़ेगा, उतना ही सत्संग का विकास हुआ माना जाएगा। *सो, यही ध्येय रखना।*

* *एक और बात का खूब ध्यान रखना –*

लेडीज़ बड़ी भावुक होती हैं। तुम्हें कोई भी बहन भेंट दे-करे, उसकी तो ना नहीं है। लेकिन शादीशुदा हो, तो अपने हज़बन्ड से पूछ कर ही वह लाए-दे। कुंवारी हो, तो अपने पेरन्ट्स से और पेरन्ट्स न हों, तो अपने बड़े भाई से – गार्डियन से पूछ कर तुम्हें दे। फिर भले कितनी ही भेंट दे। लेकिन छुपा करके कि 'हमारे हज़बन्ड को पसंद नहीं आएगा, ये तो मेरा है – मेरे मायके का है, ये है – वो है'; ऐसा कभी एक्सेप्ट नहीं करना।

इन बातों से चिपके रहना, तो सत्संग तुम्हारे इर्दगिर्द अपने-आप बढ़ता रहेगा... तुम्हारे द्वारा सभी को शांति-आनंद-प्रेम का एहसास हो, ऐसा तुम्हें बापा बनाएंगे।

देखो, ये व्यवहारिक बातें हैं। लेकिन आज भी मैं देखता हूँ कि ये खूब काम की बन जाती हैं।

...**सुखी होना हो**, तो खूब विश्वास से मानना कि **मन कभी किसी को सुख दे नहीं पाया। मन का स्वभाव ही है जीव को दुःखी करना और संत का स्वभाव है जीव को सुखी करना।** अब, यह हम पर निर्भर रहता है कि हम मन के संग रह कर दुःखी रहना चाहते हैं या संत के संग रह कर सुखी रहना चाहते हैं।

यह कार्ड खास इसी बात को समझाने के लिए है। हम हमेशा गीताजी का श्लोक बोलते रहते हैं – सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज... यहाँ धर्म छोड़ने का मतलब जैन हो – ये हो, स्वामिनारायण के हो, वैष्णव हो, वो सब छोड़ें – ऐसी बात नहीं है। पर, हमारे मन के माने हुए सब धर्म – ऐसा करना चाहिए, ऐसा नहीं करना चाहिए – ये होना चाहिए, ये नहीं होना चाहिए; ऐसे अपने मन के मूल्यांकन से लिए हुए डिसीज़न्स-अपने मन के कन्वीक्शन्स - छोड़ करके इतना भरोसा करें कि ऐसी विभूति जो कहें, वो करें। फिर, उसी श्लोक में आगे है – *तुम्हारे योग और क्षेम मैं वहन करूँगा और (कर्म के बंधनों से) मैं मोक्ष करा दूँगा।* हम ये श्लोक बोला करते हैं, लेकिन ऐन मौके पर *'नहीं, नहीं – इसके बजाय यही कर लिया हो तो अच्छा है'* – यूँ सोच कर

अपने ढंग का ही करेंगे। ऐसा न करें इसलिए ये दीवाली कार्ड है।

नए साल पर हर कोई चाहेगा कि यह वर्ष हमारा मंगलमय - सुखदायी निकले, लाभकारक हो। हमारा सारा परिश्रम इसी के लिए रहता है। हम अपने आप सोच लेते हैं कि हम ऐसा करें तो सुखी हो जाएगें, ऐसा करें तो फायदा होगा, लेकिन वहाँ एक चीज भूल जाते हैं कि **मन को एक मर्यादा है।** हमारे प्रारब्ध और प्रकृति को लांघ करके सुख को पाना, वो मन के बस का नहीं है। क्यों? मैंने पहले भी कई बार कहा हुआ है कि श्री अरविन्दो ने बड़े स्पष्ट शब्दों में बताया है कि **नो बडी बाई हिज़ ओन अनएईडेड एफर्ट्स कॅन ट्रांसफॉर्म हिज़ क्रूड नॅचर।** किसी संत के या किसी अवतार पुरुष की सहायता के बिना कोई भी अपनी जड़ प्रकृति का परिवर्तन नहीं कर पाएगा। हर एक को दो चीजें परेशान कर जाती हैं। हम आम भाषा में बोलते हैं कि – यार, स्वभाव दुःखी कर जाता है या फिर कहते हैं कि हमारे प्रारब्ध ही ऐसे हैं तो कोई क्या करेगा? ... **स्वामिनारायण संप्रदाय की सबसे बड़ी और अनपॅरेलल्ड विशेषता ये है कि भगवान ने ऐसे समर्थ संतों की एक परंपरा अखंडित रख दी।** ऐसा नहीं कि एक ज्योति प्रगटी-झबुकी और फिर अंधेरा! भगवान स्वामिनारायण की परंपरा कन्टीन्यूअस रही है। तो, वे जो कहें वो हम कर लें, इसी में हमारा श्रेय है और इसी से हमारा **जीव** सुखी हो जाएगा। **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी** ने बहुत स्पष्ट रूप से कहा है –

*भगवान और संत राजी हो जाएं ऐसा कोई करे, तो उसका **जीव** सुखी हो जाता है।*

मेरे यह कहने से यूँ नहीं समझना कि मैं यह कहता हूँ कि तुम्हारे व्यवहारिक किसी काम की खातिरी संत नहीं देते। काकाजी तो बोलते थे – *भगवान स्वामिनारायण ने भुक्ति, मुक्ति और स्थिति – तीनों चीजें दी हैं।*

१. **भुक्ति** यानि व्यवहारिक काम : हाँ, भोग-विलास, फैल-फतूर नहीं, लेकिन जीवन का निर्वाह करने के लिए जो भोग चाहिए यानि – रोटी, कपड़ा और मकान – वो स्वामिनारायण के आश्रित को गेरंटेड है।

२. **मुक्ति** यानि मोक्ष : अंतकाल में दर्शन देकर भगवान स्वामिनारायण स्वयं चेतना को ले जाते हैं। कइयों को ये दर्शन हुए हैं और यह बात ठोस बन चुकी है कि स्वामिनारायण के आश्रित को भगवान स्वयं लेने आते हैं और

३. **स्थिति** यानि एकांतिक स्थिति – स्थितप्रज्ञ की स्थिति : ऐसे संतों के प्रति हमारी जितनी स्थितप्रज्ञता होगी, उतनी वो हमारे भीतर में डॅवलप होती जाएगी।

...हमें अपनी बात आसानी से अगर हल कर लेनी हो, तो हम अपने ढंग से - अपने तरीके से जो चलते हैं, उसके बजाय भगवान और संत के कहे पर चलें, तो वे 'चाबी' बता देंगे। भगवान के साथ हमारा संबंध एक बाप-बेटे का, माँ-बेटे का है। कोई भी छोटा बच्चा बाप की या माँ की सहाय लेने के लिए हाथ उठाएगा, तो जरूर वे उसे उठा लेंगे। बस ऐसा ही – संत जो कहें, उसके मुताबिक हम चलने लग जाएगें, तो वे हमें उठा के बिना परिश्रम हम जो चाहते हैं, वो जरूर करा देंगे। **मैंने तो यह एहसास किया कि अगर इस रास्ते ऐसे चलें, तो हम जो चाहते हैं, उससे भी बढ़कर होता है और हमें फील होता है कि यह तो हम अपने आप-अपने तरीके से नहीं कर पाते; महाराज ने कमाल कर दिया!** हम यह सब कुछ बोलते - मानते और एहसास भी करते हैं, लेकिन कई बार अपना मन बीच में आ जाता है।

अर्जुन ने भी श्रीकृष्ण से कहा – ***मैं आपका शिष्य हूँ। आप मुझे बताओ, मुझे क्या करना है, लेकिन मैं लड़ाई नहीं करूँगा।***

फिर कृष्ण क्या बताएंगे, जब अर्जुन ने पहले ही से बांध लिया कि ये तो मैं करूँगा ही नहीं। अच्छा है, भगवान

ने यह नहीं कहा कि फिर तू मुझसे पूछने क्यों आया?

गीता में लिखा है – कृष्ण सिर्फ हँसते हैं। वो हँसे भी इसलिए कि फिर यहाँ मुझसे क्या पूछने आया है? हम भी इस बात पर हँसेंगे कि अर्जुन ने यह क्या बात करी? लेकिन कई बार हम लोग भी ऐसे ही करते हैं। 'मुझे यही करना है या मैं यह नहीं ही करूँगा।' कई बार मैंने ऐसा भी देखा है कि पूछने जाएंगे, लेकिन वो 'स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण' धुन करते-करते जाएगें कि संत हमें इसकी 'हाँ' कर दें। तो फिर महाराज तो हम जो धुन करके गए होंगे, वही संत से बुलवाएंगे। **ये टेक्टीक्स हम छोडें; सरल रह कर के वे जो कहें, वही करने में सुख है।** बस आज के दिन-नए साल के दिन–ये लेकर हम जाएं। एक बात समझ के रखें, **प्रभु सर्वोपरि हैं।** कोई सत्ता उनके बीच में नहीं आ पाएगी। जैसे काकाजी कहते – राजसत्ता, धनसत्ता, विद्युतसत्ता... मनसत्ता। **प्रभु सबसे परे हैं और हमारे हैं। वे हमारा कभी अहित होने नहीं देंगे** – यह सोच पकड़े रख कर वे जो कहें वैसे करते रहें, इसी में अपनी भलाई है। नए साल के नए दिन हमें इसके सिवा कुछ सीखना नहीं है। **'ज्ञान का ज्ञान'** – यही है कि वे जो चाहते हैं, वे जो हमसे कराना चाहते हैं – वो हम करते हो जाएं। इन्हें कोई स्वार्थ नहीं है। **इनका स्वार्थ यही है कि हम कैसे सुखी हो जाएं।** भगतजी महाराज मूर्ख थोड़े थे? तभी तो गुणातीतानंदस्वामी के लिए उन्होंने बोला कि ***ये साधु लूट लेने जैसा है।*** मतलब वे जो कहें, वो करके हमें सुखी हो जाना है; लेकिन हम नहीं कर पाते। **वे हमें सुखी करने के लिए डाँटते हैं, प्यार करते हैं। मन के विरुद्ध वर्तातें भी हैं, तो हमें सुखी करने के लिए।**

काकाजी इसे अंग्रेजी में बताते थे – ***इररिस्पेक्टिव ऑफ माई थिंकिंग, बिलीफ, लाईकिंग ऑर कन्वीक्शन, ओ लॉर्ड! लॅट धाय विल बी डन।***

प.पू. पप्पाजी उनकी लाक्षणिक शैली में कहते – ***स्टॉप यॉर एंजीन, लॅट हीम वर्क।***

कोई भी बात बनती है, तो हम एकदम डिसीज़न ले लेते हैं – बोल पड़ते हैं। काकाजी कहते थे – थोभो, थोभो, थोभो। यानि – रुक जाओ, रुक जाओ, रुक जाओ। **माइन्ड वर्क करे और डिसीज़न ले, उससे पहले प्रभु की आवाज़ सुनो। इसके लिए थोड़ी साइलॅन्स तो हमें रखनी पड़े न!** पर, ये सारी चीजें किसके लिए हैं, जिसे आलस छोड़कर प्रभु के रास्ते पर चलना है। आलस का मतलब-सोया पड़ा रहे, वो आलस तो सामान्य आलस है। योगीजी महाराज कहते थे – *आलस क्या? तो* ***जो करना हो वो न करें और न करना हो वो करा करें – वो आलस!*** यह नई बात आई न? मतलब, मन के संग नहीं रहना है और **मन के ही संग रहे–वो आलसु!**

अगर कोई भी घटना बने और हम प्रार्थना करें, तो प्रभु राजी होते हैं। मैंने देखा है कि धुन में कई बोलते हैं – बचाओ, बचाओ, बचाओ, बचाओ। यूँ, हम भगवान को उपायभूत होने के लिए प्रार्थना-अर्ज करते हैं। **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी** तो कहते हैं –

कोई भजन करता है, तो वो करता तो खुद के लिए है, लेकिन भगवान यह मान लेते हैं कि ओहो हो तूने और किसी को याद नहीं किया, मुझे याद किया? और... मान लेते हैं कि तूने मेरे लिए ये काम करा-पुकार करी।

आज अगर मैं आप को कहूँ कि तुम ज़रा मेरा इतना काम कर दो, धेन आई विल वी ऑब्लाइज़्ड टु यु। इस तरह हम जब प्रार्थना करते हैं, तो भगवान मानते हैं कि ही इज़ ऑब्लाइज़्ड टु यु। कितनी बड़ी बात है ये?

मैं आज हरिशंकरजी को-सुरेन्द्र पालजी को यही कहना चाहता हूँ। काकाजी बोलते थे कि हमने सब सॅटिंग कर दिया है, तुम्हें सिर्फ स्वीच ऑन ही करनी है। इसमें कितनी देर लगती है हरिशंकरजी? जब भी

कोई प्रॉब्लम आए, आप तो राजनीति में हो - तो एक पल के लिए आज ये जो सभा हुई है, बस उसको याद करके 'स्वामिनारायण, स्वामिनारायण' करना। देखो, फिर जो होगा उसमें तुम्हारा कोई कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। ऑल धी फोर्सिस विल इमीडियेट्ली रश टु प्रोटॅक्ट यु। जहाँ जिस फिल्ड में तुम काम करते हो, उसमें आप बाजी कभी नहीं हारोगे।

सुरेन्द्रपालजी, आपने द्रोणाचार्य का रोल भले करा, लेकिन हम सभी को तो अर्जुन का ही रोल करना है। क्यों? देखो, युधिष्ठिर का 'धर्म' काम में नहीं आया। द्रोणाचार्य का 'ज्ञान' भी अभद्र रहा और **'नैष्ठिक ब्रह्मचर्य व्रतधारी'** भीष्म हस्तिनापुर के सिंहासन के साथ ही बंधा रहा! मैं कई बार कह चुका हूँ कि **हमें किसी सिद्धांत - किसी व्यक्ति - किसी पदार्थ के साथ नहीं बंधना है, प्रभु के साथ बंधना है।** कृष्ण को पहचानते हुए भी भीष्म कृष्ण के साथ बंधा हुआ नहीं रहा। सुधन्वा 'भक्ति' का मूर्तिमान स्वरूप था, लेकिन प्रभु के अभिप्राय को वह समझ नहीं सका। तो, कृष्ण ने ऊपर रह कर उसका सिर कटवाया और... उसकी 'भक्ति' भी कैसी कि वो कटा हुआ सिर भी 'कृष्ण, कृष्ण, कृष्ण' करता हुआ श्रीकृष्ण के चरणों में जाकर गिरा। लेकिन, तब भी भगवान ने मोहब्बत नहीं रखी। भगवान ने सिर्फ अर्जुन की मोहब्बत रखी; क्योंकि कैसा भी था, वो उनका था।

इस तथ्य को खूब समझ के रखें कि हम कैसे भी होंगे – इससे मैं आपको ऐरे – गैरे बिहेव करने के लिए कहता हूँ ये नहीं समझना; लेकिन, प्रकृति के अधीन – नॅचर के अधीन हम से मीसबीहेव हो भी गया हो, लेकिन सच में अगर **प्रभु के होकर, उनके अभिप्राय - उनकी रुचि - को पकड़ कर हम चलने की कोशिश भी करेंगे, तो प्रभु हमारे पक्ष में रहेंगे** और जिसके पक्ष में प्रभु हैं, उसकी तो जय-जयकार है ही। यह एक सत्य लेकर के आज हम जाएं... सहजानंदस्वामी महाराज की जय!

– प.पू. गुरुजी

(ध्वनिमुद्रण पर आधारित)

✡✡✡

'तुम्हें निष्ठा वाले मुक्त मिल जाएंगे...'

– ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज

वर्षों पूर्व गुरुहरि योगीजी महाराज के संकल्प के अनुसार ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज ने उत्तरभारत में स्वामिनारायण का संदेशा फैलाने के लिए प.पू. गुरुजी को दिल्ली भेजा था। तब उन्होंने प.पू. गुरुजी को आशीर्वाद दिए थे–

निष्ठा वाले मुक्त तुम्हें ढूँढने नहीं पड़ेंगे, वे सामने से तुम्हें मिल जाएंगे।

और... ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के उस वचन पर अडिग रहते हुए प.पू. गुरुजी कभी भी सत्संग के प्रचार – प्रसार हेतु न तो स्वयं जाते हैं, न ही अपने संबंध वाले मुक्तों - सेवकों को ऐसे कोई तरीके अपनाने देते हैं। हाँ, **पूर्व के बलिष्ठ संस्कारों के फलस्वरूप या किसी मुक्त के संकल्प से या प.पू. गुरुजी में सच्चाई, असली साधुता व अपनेपन की तसल्ली पाकर यदि कोई स्वयं जुड़ता है, तो उसके चैतन्य की परवरिश करने में वे पीछे नहीं रहते।**

इसका दर्शन ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज ने अब की बार प.पू. गुरुजी के **रुद्रपुर (उत्तरांचल)** के विचरण में कराया। **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के समय के हमारे पुराने जोगी डॉ. जे.पी. शर्माजी** के सुपुत्र प.भ. विजय रुद्रपुर में रहते हैं। काफी समय से उनका व उनकी धर्मपत्नी का आग्रह था कि प.पू. गुरुजी उनके यहाँ आएं। सो, उनके लड़के 'शुभं - मंगलं' के जन्मदिन निमित्त १३ नवंबर को

प.पू. गुरुजी ने करीब ३० मुक्तों के साथ रुद्रपुर जाने का कार्यक्रम बनाया।

१३ नवंबर की सुबह ५:०० बजे की ट्रेन से निकल कर करीब साढ़े दस बजे प.पू. गुरुजी प.भ. विजय के घर पहुँचे। सायं वहाँ पर शुभं-मंगलं का जन्मदिन मनाया और सत्संग की एक छोटी सभा की व सभी ने प्रसाद लिया।

करीब ढाई साल से प.भ. विजय सपरिवार वहाँ रहने गए हैं। उनके जीवन में सत्संग की प्रायॉरिटी को देखते हुए उनके परिचित अड़ौस-पड़ौस के छः-सात परिवारों को प.पू. गुरुजी एवं सत्संग के प्रति इतनी तीव्र भावना थी कि वे सभी खूब अपनेपन से दर्शन, सेवा, समागम का लाभ लेने के लिए एकत्रित हो गए थे। प.पू. गुरुजी एवं सत्संग से बिना किसी परिचय के कई मुक्त तो अपना ऑफिस बंद करके सेवा में लगे हुए थे। और तो और, भोजन की व्यवस्था भी सामने रहने वाले श्री अजयजी के घर पर की हुई थी; जबकि आज के समय में दूसरे के घर में कोई उत्सव हो, तो अपने घर में हलवाई को कौन बिठाता है ? लेकिन उन सभी की सेवा–भावना को देख कर ऐसा लगता था, मानो उन सभी के यहाँ उत्सव हो रहा हो।

और... इन मुक्तों में केवल प्रेम ही नहीं, बल्कि समझदारी भी है। प.पू. गुरुजी के आने से एक दिन पहले रुद्रपुर में बारिश हो रही थी। सो, प.भ. विजय की पत्नी सौ. निवेदिता काफी चिंतित हो गई कि गुरुजी आ रहे हैं और बारिश होने से सब अस्त-व्यस्त हो जाएगा। तब उन्हें सांत्वना देते हुए उनके पड़ौसी डॉ.पी.के. गर्गजी बोले–

तुम अपने गुरुजी के आने पर इतनी तैयारियाँ करवा रही हो, पर क्या तुम पूरे रुद्रपुर को धुलवा सकती हो ?

सौ. निवेदिता ने कहा– *नहीं।*

तब डॉ. गर्गजी ने कहा– *तुम्हारे गुरुजी - तुम्हारे भगवान– इस धरती पर आ रहे हैं, इसलिए भगवान ने उनके स्वागत में पूरे रुद्रपुर को ही धुलवा दिया है और देखना, कल बारिश नहीं होगी।*

इन सभी का ऐसा आपसी मेलजोल देख कर १४ नवंबर की सायं, जब संघवी परिवार की फॅक्टरी में महापूजा हुई तब प.पू. गुरुजी ने बात करी–

जैसे आजकल रॅडीमेड गार्मेन्ट्स का ज़माना है, ऐसे ही आत्मबुद्धि एवं प्रीति से जुड़े हुए रॅडीमेड मुक्तों का यहाँ दर्शन हुआ है। दिल्ली में जो अपनापन डॅवलप करने में खूब समय लग गया, वो यहाँ सहज ही दिखाई दिया।

यहाँ ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के आशीर्वाद तो तादृश्य हुए ही, पर साथ ही मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी की प्र.१ की १४३वीं बात का भी एहसास हुआ–

पहले तो मुमुक्षु भगवान को खोजते थे, पर आज तो भगवान मुमुक्षुओं को ढूँढते हैं।

वहाँ प.पू. गुरुजी दो दिन रहे और... अपनेपन से जुड़े इस छोटे से समूह की भक्ति-भावना के वश होकर १५ नवंबर की सुबह तकरीबन उन सभी मुक्तों के घर पधरामनी के लिए गए। सायं ४:०० बजे की ट्रेन से प.पू. गुरुजी को जब दिल्ली लौटना था, तब वे सब के सब नम आँखों से प.पू. गुरुजी एवं मुक्तों को विदाई देने स्टेशन पर आए... रास्तेभर उनकी सेवा-भावना को याद करते हुए प.पू. गुरुजी ने समझाया–

जैसे महाराज ने अपने समय में कहा था कि पश्चिम में मुमुक्षुओं ने देह धरा है, ऐसे ही काकाजी कहते थे– 'अबकी उत्तर भारत में मुक्तों को भेजा है' – तो ये सब वे ही होंगे।

सच, रुद्रपुर के मुक्तों की भक्ति-भावना से प.पू. गुरुजी इतने राजी हुए कि प.पू. काकाजी के आशीर्वाद याद करते हुए उनकी आँखें नम हो जातीं...

✡

भजन

(राग – ले के पहला-पहला प्यार...)

ले के निर्दोष-निर्व्याज प्यार, भर के आँखों में ब्रह्मभाव,
अक्षरधाम से आया, ये कैसा जादूगर! } -3
ले के निर्दोष-निर्व्याज प्यार....।।

एक बार मिला जो तुमको, भुला नहीं पाया, } -2
मैत्री कर तुमने उसको अपना बनाया,
चैतन्यों के शिल्पकार, खुल्ला कर दिया मोक्षद्वार,
अक्षरधाम से आया, ये कैसा जादूगर!

मस्ती अलौकिक तेरी, शूरवीरता भरी, } -2
कुटुंबभाव प्रगटा कर के, तुमने क्रांति करी,
निर्दोषबुद्धि-सुहृद्भाव, धुन करने का अतिशय चाव,
अक्षरधाम से आया, ये कैसा जादूगर!

संबंध देकर अपना, ब्रह्मरूप बनाया, } -2
प्रेम में डुबो कर हमें, भव भव से तारा,
माफ़ करते रहे हर बार, टाले दोष हमारे अपार,
अक्षरधाम से आया, ये कैसा जादूगर!

मूर्ति सिद्ध कर लें पहले, सभी बातें छोड़ कर, } -2
दास के भी दास बनें, तेरा संबंध देख कर,
टालो ज्ञान-अहम्-अंधकार, कर दो माया से हमें पार,
अक्षरधाम से आया, ये कैसा जादूगर!

✡✡✡

भजन

(राग–इशारों इशारों में दिल लेने वाले...)

हो... हो ओ... आ.....
हँसी खेल में जीव ब्रह्मरुप बना दे, दिए हमको ऐसे गुरु काकाजी ने,
दिव्य प्रेम जिनका जगत को छुड़ा दे, दिए हमको ऐसे गुरु काकाजी ने।।
आ.... आ....

गुणातीत साधु बिना, ऐसा सत्संग कहाँ पर मिले,
देह छोड़ जिन्हें पाना, जीतेजी यहीं पर मिले
जीतेजी यहीं पर मिले
मेरे दु:ख के साझी, भवसागर के माँझी,
दिए हमको ऐसे गुरु काकाजी ने...।।
हँसी खेल में जीव ब्रह्मरुप बना दे, दिए हमको ऐसे गुरु काकाजी ने,

तर्क मन बुद्धि के, अमहिमा, वो ही अंतर का कुसंग है,
आत्मबुद्धि, प्रीति मुक्तों में, यही सच्चा सत्संग है,
यही सच्चा सत्संग है
कुटुंबभावना से, जो दृढ़ ये कराते,
दिए हमको ऐसे गुरु काकाजी ने...।।
हँसी खेल में जीव ब्रह्मरुप बना दे, दिए हमको ऐसे गुरु काकाजी ने,

स्पंदन मन के हमें, अब छू ही नहीं पाएं,
सिर का ताज हम मानें, मुक्त सामने जो आए,
मुक्त सामने जो आए
मुक्तों के 'इश्की', चैतन्यों के प्रहरी,
दिए हमको ऐसे, गुरु काकाजी ने... -३
हँसी खेल में जीव ब्रह्मरुप बना दे, दिए हमको ऐसे गुरु काकाजी ने,
दिव्य प्रेम जिनका जगत को छुड़ा दे, दिए हमको ऐसे गुरु काकाजी ने....

✡✡✡

चलो मुंबई..................आया, मैत्री मिलन महोत्सव!

गुरुहरि ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के प्राकट्य की
शताब्दी के उद्घोष के उपलक्ष्य में 1,2 एवं 3 जनवरी 2010 के विविध कार्यक्रमों में
प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों की निश्रा में एकत्र होकर
'गुणातीत समाज' की एकता एवं अखंडता को सहेजने
'हम सब एक' का प्रतिघोष अपने दिल और समाज में भर दें
और
उसके आद्य सर्जक प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी को अमर कर दें।

जानकारी हेतु :

3 जनवरी 2010, रविवार — सुबह 9:00 से 12:30
'मैत्री मिलन महोत्सव' की मुख्य सभा का आयोजन किया गया है...
स्थल: नवजीवन अस्पताल ग्राउन्ड, हीरानंदानी अस्पताल के पीछे, पवई, मुंबई-76

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 12.12.'09, शनिवार – एकादशी – व्रत
(2) दि. 16.12.'09, बुधवार – धनुर्मास प्रारंभ
(3) दि. 28.12.'09, सोमवार – एकादशी – व्रत
(4) दि. 31.12.'09, गुरुवार – पौषी पूर्णिमा
मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी के दीक्षा पर्व की द्विशताब्दी
(चंद्रग्रहण के कारण अबकी बार मंदिर में 'मध्यरात्रि महापूजा' के बजाय रात को 9:00 से 12:00 तक सिर्फ 'धुन' का आयोजन है।)
(5) दि. 10.1.2010, रविवार – एकादशी – व्रत
ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की स्वधामगमन तिथि
(6) दि. 13.1.'10, बुधवार – लोहड़ी
(7) दि. 14.1.'10, गुरुवार – मकरसंक्रांति, धनुर्मास समाप्त, भिक्षा दिन
(8) दि. 15.1.'10, शुक्रवार – सूर्यग्रहण

R.N.I. 28971/ 77 (Air Mail)
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO** ***FOR*** **YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052